अबुआ बजट 2025-2026

* ओड़िशा संस्करण

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

रांची 04 मार्च, 2025, मंगलवार, वर्ष 10, अंक 135, फाल्गुन, शुक्ल पक्ष, पंचमी, संवत 2081, पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

अबुआ सरकार का अबुआ बजट

- **बजट में सोशल सेक्टर शिक्षा और पर्यटन पर विशेष फोकस**
- **मंईयां सम्मान योजना से लेकर अन्य योजनाओं को मजबूती प्रदान करेगा**
- **एक लाख 45 हजार 400 करोड़ में से सामाजिक क्षेत्र को 62 हजार 844 करोड़**

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। हेमंत सोरेन सरकार 2.0 का पहला बजट सोमवार को विधानसभा में पेश किया गया। वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने वर्ष 2025-26 के लिए बजट पेश करते हुए समाज पर इसका फोकस रखने की बात कही। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के निर्देश में तैयार यह अबुआ बजट समाज को समर्पित है और इसमें स्थापना खर्च की बजाय विकास योजनाओं पर खर्च करने का संकल्प व्यक्त किया गया है। इस बजट का सामाजिक क्षेत्र पर कितना फोकस है, यह इसी बात से साबित होता है कि इसमें मंईयां सम्मान योजना से लेकर शिक्षा तक के लिए बजटीय आवंटन बढ़ाया गया है। मंईयां सम्मान योजना पर 13363 करोड़ रुपये खर्च किये जायेंगे। बजट का कुल आकार एक लाख 45 हजार 400 करोड़ रुपये है, जिसमें सामाजिक क्षेत्र के लिए 62 हजार 844 करोड़ रुपये रखे गये हैं। पिछले साल बजट का आकार 1.28 लाख करोड़ था। इसके मुकाबले इस बार बजट का आकार 13 प्रतिशत बढ़ा है। बजट में युवाओं के लिए मेडिकल कॉलेज, यूनिवर्सिटी और बिजनेस स्कूल खोलने का एलान किया गया है। बजट में किसानों को लिए भी कई बड़े एलान किये गये हैं।

वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने बजट पेश करते हुए कहा कि वित्त वर्ष 2025-26 में राज्य की अर्थव्यवस्था 7.5 प्रतिशत की दर से बढ़ने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि आगामी वित्त वर्ष के बजट में राजकोषीय घाटा 11,253 करोड़ रुपये रहने का अनुमान है। उन्होंने कहा कि बजट गरीबों, किसानों, आदिवासियों और महिलाओं सहित समाज के हर वर्ग की आकांक्षाओं को पूरा करेगा। बजट में मंईयां सम्मान योजना के साथ-साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार के लिए कई बड़े एलान किये गये हैं। वित्त मंत्री ने कहा कि पलायन रोकने और रोजगार सृजन करने पर सरकार का फोकस होगा। स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल विकास पर विशेष जोर दिया जायेगा। किसानों को ऋण से मुक्त करने, उनकी आय बढ़ाने, किसानों की ऋण माफी में सरकार ने काफी खर्च किया है। कई तालाब और नदी का जीर्णोद्धार किया जा रहा है। तालाबों के गहरीकरण और सिंचाई की व्यवस्था के लिए जलनिधि योजना के लिए 203 करोड़ 40 लाख का बजट रखा गया है। खेती में कृषि यंत्र को बढ़ावा देने के लिए यंत्रों का वितरण किया जा रहा है।

केंद्र से बकाया वसूल करेंगे : वित्त मंत्री ने कहा कि सीएसआर फंड प्राप्त करने के लिए कंपनियों को चिन्हित किया जायेगा। राज्य के 80 प्रतिशत विद्यार्थी सरकारी स्कूलों में हैं। स्कूलों को और बेहतर करने की दिशा में काम किया जा रहा है। झारखंड में पर्यटन की असीम संभावना है। इस विजन और दृष्टि के साथ सरकार टूरिस्ट सर्किट के लिए काम कर रही है। कई सरकारी भवन उपयोग में नहीं है। उन्हें उपयोग में लाने की दिशा में काम किया जा रहा है। एक लाख 36 हजार करोड़ रुपये का बकाया भारत सरकार के पास लंबित है। केंद्र से यह राशि भुगतान करने के लिए आग्रह किया गया है। अगर जरूरत पड़ी, तो कानूनी रास्ता भी अपनायेंगे।

राजस्व व्यय के लिए अधिक राशि

बजट में राजस्व व्यय के लिए एक लाख 10 हजार 636 करोड़ 70 लाख तय किया गया है, जो पिछले वित्तीय वर्ष से 20.48 प्रतिशत अधिक है। पूंजीगत व्यय में 7.81 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 34 हजार 763 करोड़ 30 लाख का प्रस्ताव है। अगर इसे प्रक्षेत्र की दृष्टि से देखा जाये, तो यह सामान्य प्रक्षेत्र के लिए 37 हजार 884 करोड़ 36 लाख, सामाजिक प्रक्षेत्र के लिए 62 हजार 840 करोड़ 45 लाख, आर्थिक क्षेत्र के लिए 44 हजार 675 करोड़ 19 लाख है।

हमारे पैर जमीन पर...

वित्त मंत्री ने बजट भाषण में एक के बाद कई योजनाओं का जिक्र किया और बताया कि सरकार कैसे योजनाओं के माध्यम से जन कल्याण के लिए काम कर रही है। राजकोषीय घाटा को नियंत्रित किया गया है। राजकोषिय घाटा को 1.1 प्रतिशत रखने में सफलता हासिल की है। जीडीपी में सुधार हुआ है। 2025-26 में 27.5 विकास दर रहने का अनुमान है। बजट भाषण में वित्त मंत्री ने कहा, हमारे पांव जमीन पर मजबूती से टिके हैं।

बजट में खास

- नेतरहाट विद्यालय की तर्ज पर मसलिया, दुमका एवं खूंटपानी, चाइबासा में विद्यालय भवन का निर्माण होगा।
- झारखंड छात्र अनुसंधान एवं नवाचार नीति तैयार की जायेगी।
- वाल्मिकी छात्रवृत्ति योजना लागू होगी।
- जमशेदपुर, गुमला एवं साहेबगंज जिला में नये राजकीय विश्वविद्यालय की स्थापना होगी।
- जमशेदपुर, धनबाद एवं दुमका में तीन नये तकनीकी विश्वविद्यालय की स्थापना होगी।
- रांची, खूंटी, जमशेदपुर, गुमला, साहेबगंज और गिरिडीह में अभियंत्रण महाविद्यालय की स्थापना होगी।
- स्किल विश्वविद्यालय और फिन-टेक विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव।
- जमशेदपुर, पलामू, रांची, धनबाद, हजारीबाग एवं देवघर में स्कूल ऑफ बिजनेस एंड मास कम्युनिकेशन की स्थापना होगी।
- हजारीबाग, रांची, धनबाद, दुमका एवं पलामू में पांच नये विधि महाविद्यालय की स्थापना होगी।
- झारखंड अनुसूचित जाति परामर्शदातृ परिषद् का गठन किया जायेगा।
- झारखंड उत्कृष्ट खिलाड़ी सीधी नियुक्ति (भर्ती एवं सेवाशर्त) नियमावली, 2025 बनायी जायेगी।
- पलामू किला का अनुरक्षण करते हुए विभिन्न सुविधाओं का विकास किया जायेगा।
- गिरिडीह में उसरी जलप्रपात एवं लातेहार जिला में बूढ़ाघाघ जलप्रपात के पर्यटकीय विकास होगा।
- जोन्हा, हुंडरू, कौलेश्वरी एवं त्रिकुट में नये रोप-वे का निर्माण होगा।
- मनरेगा के तहत 12 करोड़ मानव दिवस रोजगार सृजित करने का लक्ष्य।
- पीपीपी मोड पर खूंटी, गिरिडीह, जमशेदपुर, धनबाद, देवघर एवं जामताड़ा जिलों में चिकित्सा महाविद्यालय का गठन होगा।
- लघु सिंचाई प्रक्षेत्र अंतर्गत 352 चेकडैम, 3 वीयर एवं 10 सोलर उद्वह सिंचाई योजनाओं का निर्माण होगा।
- नया डोमेस्टिक एयरपोर्ट और एयर कार्गो हब का होगा निर्माण।
- रांची से पर्यटन स्थलों के लिए हेलीकॉप्टर शटल सेवा शुरू होगी।
- औद्योगिक नीतियों के तहत आगामी वर्ष में 20 हजार करोड़ रुपये का निवेश लाया जायेगा।
- 59 नये डे-बोर्डिंग क्रीड़ा प्रशिक्षण केन्द्र खोले जाने का लक्ष्य है।
- खंडोली पर्यटन स्थल का जीर्णोद्धार होगा।

सबको जोड़नेवाला बजट : हेमंत सोरेन

रांची (आजाद सिपाही)। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने विधानसभा में बजट पारित होने के बाद मीडिया से बातचीत में कहा कि यह सबको जोड़ने वाला बजट है। उन्होंने कहा कि जनता पर बिना किसी आर्थिक बोझ डाले एक संतुलित बजट पेश किया गया है। सोरेन ने कहा कि हर क्षेत्र में विकास के लिए राशि का प्रावधान किया गया है और कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं है। उन्होंने कहा कि पिछली सरकार में विकास की गति को बनाये रखा गया है और खर्च भी आगे बढ़ाया गया है। लेकिन किसी नागरिक पर कोई बोझ नहीं डाला गया। उन्होंने कहा कि पिछली सरकार की विकास गति को बनाये रखा गया है। किसी नागरिक पर कोई आर्थिक बोझ नहीं डाला गया है। झारखंड अपनी वित्तीय व्यवस्थाओं को मजबूती प्रदान कर रहा है। राज्य देश में अपनी वित्तीय व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में चौथे स्थान पर है।

विभाग/ योजना	बजट आवंटन
मंईयां सम्मान योजना	13363 करोड़
प्राथमिक शिक्षा	15198 करोड़
उच्च व तकनीकी शिक्षा	2409 करोड़
स्वास्थ्य	7407 करोड़
जल संसाधन	2257 करोड़
ग्रामीण विकास	9841 करोड़

खोखला और घिसा पिटा बजट: बाबूलाल

रांची (आजाद सिपाही)। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने राज्य सरकार द्वारा सदन में पेश बजट पर तीखी प्रतिक्रिया दी। मरांडी ने कहा कि यह बजट देखने में बड़ा है लेकिन प्राण विहीन है, ताकत विहीन है। उन्होंने कहा कि बजट में दूरदर्शिता का घोर अभाव है। इससे न राज्य की बेरोजगारी दूर होने वाली है न गरीबी दूर होगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार चुनावी घोषणाओं को बजटीय धरातल पर उतारने में पूरी तरह विफल साबित हुई। यह जनादेश का अपमानित करने वाला बजट है।

नये अंदाज में दिखे वित्त मंत्री

'अबुआ सरकार, अबुआ बजट' का गमछा डाले पहुंचे

प्रशांत झा

रांची (आजाद सिपाही)। हेमंत सरकार-2 के पहले साल का पहला बजट (वर्ष 2025-26 का बजट) सोमवार को आ गया। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने 'अबुआ सरकार' की बात की थी। इसके बाद 'अबुआ बजट' लाने का वादा किया था। वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने 'अबुआ बजट' सदन में पेश कर दिया। इसे पेश करने के लिए वह नये अंदाज में पहुंचे थे। आदिवासी संस्कृति से जुड़ी पारंपरिक पोशाक पहन कर उन्होंने बजट पेश किया। धोती, सिल्क का कुर्ता, गले में गमछा और सिर पर पगड़ी। खास बात यह थी कि पट्टा पर 'अबुआ सरकार, अबुआ बजट' लिखा था। इस अनोखे अंदाज में उन्होंने न केवल आदिवासी संस्कृति को प्रोत्साहित किया, बल्कि राज्य की सांस्कृतिक धरोहर को भी सम्मानित किया।

न कोई नयी योजना जुड़ी, न कोई बंद हुई : सरकार ने बजट में न कोई नयी योजना जोड़ी गयी और न ही किसी पुरानी योजना को बंद किया गया। चाहे वह पेंशन योजना हो, या फिर मंईयां सम्मान योजना। बच्चों के लिए छात्रवृत्ति हो या उच्च शिक्षा के लिए विदेश में पढ़ने के लिए स्कॉलरशिप, सभी योजनाओं के लिए राशि आवंटित की गयी है। बजट की खास बात यह रही कि सरकार ने वित्तीय प्रबंधन काफी अच्छे तरीके से किया है, जो वाकई सराहनीय है। स्थापना और योजना व्यय में अंतर को एक बार फिर संतुलित किया है। 2019-20 में जहां स्थापना और योजना व्यय 47:53 था, वहीं, 2025-26 में यह 37:63 हो गया है। यह दिखाता है कि सरकार स्थापना व्यय से अधिक राज्य के विकास कार्यों पर राशि खर्च करने वाली है। साथ ही सरकार ने राजकोषीय घाटे को भी काफी हद तक काबू में रखने का प्रयास किया है। यह अभी भी तय मानक से कम ही है।

कविता से शुरू और कविता से अंत

वित्त मंत्री ने सदन में बजट भाषण में कई कविताओं का इस्तेमाल किया। उन्होंने जहां मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में सरकार चलाने पर कविता पढ़ी कि 'हम जिस गति से चले हैं, उस गति को पायेंगे...'। वहीं, हेंमत सोरेन की सरकार की उपलब्धियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे (विपक्ष) ऐसा नहीं करेंगे। इसके बाद दुष्यंत कुमार जी की कविता की दो पंक्ति पढ़ी कि 'वे मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता, हम बेकरार हैं, आवाज में असर के लिए।' इसी तरह बजट भाषण का अंत उन्होंने पीयूष मिश्रा की एक कविता 'आरंभ है प्रचंड, बोले मस्तकों के झुंड...' से किया।

यहां से आयेगा पैसा

वित्त मंत्री ने बजट में राज्य को होनेवाली आय का भी हिसाब दिया। इसके अनुसार राज्य को कर (राज्य) से 35 हजार 200 करोड़, गैर कर राजस्व से 25 हजार 856 करोड़ 12 लाख रुपये, केंद्रीय सहायता से 17 हजार 57 करोड़ 10 लाख रुपये, केंद्रीय कर में राज्य की हिस्सेदारी से 47 हजार 40 करोड़, 22 लाख, लोक ऋण से 20 हजार करोड़ और उधार वसूली से 246.56 करोड़ रुपये मिलेंगे।

आर्थिक विकास दर 7.5% रहने का अनुमान

वित्त मंत्री ने सदन में बताया कि बजट में सामान्य क्षेत्र के लिए 37,884 करोड़, सामाजिक क्षेत्र के लिए 62,840 करोड़ 45 लाख और आर्थिक क्षेत्र के लिए 44, 675 करोड़ 19 लाख का उपबंध है। वहीं सरकार का बेहतर ऋण प्रबंधन पर जोर है। सिंकिंग फंड में निवेश किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि अब तक 2283 करोड़ का निवेश हुआ है। इससे ऋण भुगतान किया जाता है। झारखंड में पिछले कई वर्षों से स्थापना व्यय की तुलना में योजना व्यय में लगातार इजाफा हुआ है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में आर्थिक विकास दर 7.5% रहने का अनुमान है।

बजट की आधी रकम 13 विभागों की 200 योजनाओं पर होगी खर्च

वित्त मंत्री ने अपने बजट भाषण में कहा कि बजट का कुल योजना आकार 91 हजार 741 करोड़ 52 लाख 80 हजार रुपये है। इसमें से 13 विभागों की 200 योजनाओं के आउटकम बजट की राशि 45,855 करोड़ रुपये है, जो योजना बजट का लगभग 50 प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि आउटकम बजट से संबंधित विभागों की 42 योजनाओं के आधार पर बाल बजट भी तैयार किया गया है। इसका उद्देश्य राज्य में बच्चों का समुचित विकास है। बाल बजट के लिए सरकार ने 9,411.27 करोड़ रुपये का प्रबंध किया है।

450 रुपये में सिलेंडर अगले साल से: राधाकृष्ण किशोर

वित्त मंत्री ने बजट में आय-व्यय दोनों पर ध्यान दिया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने कहा कि हेमंत सरकार अपने वादों को नहीं भूली है। हमें याद है कि चुनाव पूर्व 450 रुपये में घरेलू गैस सिलेंडर उपलब्ध कराने का वादा किया गया था। चुनाव में ये नहीं कहा गया था कि इसे अगले ही वित्तीय वर्ष से लागू किया जायेगा। किसी भी योजना को लागू करने से पहले बजट को देखना और उसके लिए राशि का प्रावधान भी करना पड़ता है। मैं यह भी साफ करना चाहता हूं कि यह केवल चुनावी घोषणा नहीं था और न ही पांच साल लोगों को इंतजार करना होगा। गैस सिलेंडर योजना को आने वाले वित्तीय वर्षों में लागू किया जायेगा। हमारा प्रयास होगा कि वित्तीय वर्ष 2026-27 से ही योजना लागू हो जाये। वित्त मंत्री सोमवार को विधानसभा सदन में बजट पेश करने के बाद प्रेस कांफ्रेंस में बोल रहे थे।

वित्त मंत्री ने कहा कि बजट सही में अबुआ बजट है। सरकार ने सोशल सेक्टर पर विशेष फोकस किया है। आय और व्यय को ध्यान में रखा गया है। उन्होंने राजकोषीय घाटा, आर्थिक विकास दर, राजस्व प्राप्ति, योजना और स्थापना मद के अनुपात आदि का जिक्र किया। वित्त मंत्री ने एक प्रश्न पर कहा कि मंईयां सम्मान योजना के लिए राशि की कोई कमी नहीं है। मौजूदा बजट में भी इसके लिए प्रावधान किया गया है। इसे जरूरत के अनुसार घटाया-बढ़ाया भी जा सकता है। मंईयां सम्मान के लाभुकों को पैसे की कमी के कारण राशि नहीं मिला है, यह सच्चाई नहीं है। कुछ तकनीकी कारणों से राशि मिलने में देर हुई है। उन कमियों को दूर किया जा रहा है। विभागीय मंत्री ने सदन में कहा है कि होली से पहले तीनों महीने की किस्त एक साथ जायेगी।

आजाद सिपाही
रांची, मंगलवार, 04 मार्च, 2025
www.azadsipahi.in
02

शिक्षा प्रक्षेत्र

प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा के लिए 15 हजार 198 करोड़ 35 लाख 30 हजार रुपये

नेतरहाट की तर्ज पर खुलेंगे स्कूल कई विश्वविद्यालय, 888 लैब बनेंगे

उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के लिए 2 हजार 409 करोड़ 20 लाख 96 हजार रुपये

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने कहा कि राज्य सरकार स्कूली शिक्षा के उत्तरोत्तर विकास हेतु निरंतर सजग, संवेदनशील एवं प्रयत्नशील है। राज्य के प्रारंभिक विद्यालयों में छात्र-छात्राओं के नामांकन, ठहराव एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने हेतु हम कृतसंकल्पित हैं। राज्य सरकार द्वारा शिक्षा के सभी सूचकांकों पर गहनता एवं सजगता के साथ योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसके लिए वित्तीय वर्ष 2025-26 में प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा के लिए 15 हजार 198 करोड़ 35 लाख 30 हजार रुपये और उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के लिए 2 हजार 409 करोड़ 20 लाख 96 हजार रुपये का बजट प्रस्तावित है। राज्य सरकार द्वारा 80 उत्कृष्ट विद्यालयों का संचालन शैक्षणिक सत्र 2023-24 से प्रारंभ किया गया है। इनमें 325 (तीन सौ पच्चीस) प्रखंड स्तरीय लीडर स्कूल का संचालन प्रारंभ करते हुए 222 विद्यालयों का आधारभूत संरचना का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। राज्य के कुल 34,847 प्रारंभिक विद्यालयों, 1,711 माध्यमिक विद्यालयों एवं 1,157 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में लगभग 70 लाख विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के अंतर्गत 203 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, 57 झारखंड बालिका आवासीय विद्यालय और 28 नेताजी सुभाष चंद्र बोस आवासीय विद्यालय संचालित हैं।

राज्य में अबतक कुल 803 विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा हेतु लैब अधिष्ठापित किये गये हैं, जिसके माध्यम से विभिन्न 11 ट्रेड में व्यावसायिक शिक्षा दी जा रही है, जबकि अन्य 888 लैब की अधिष्ठापना का कार्य प्रगति पर है। इसके अंतर्गत राज्य के लगभग 1,58,000 विद्यार्थी लाभांन्वित हो रहे हैं। विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के बारे में बेहतर समझ विकसित करने और बच्चों में वैज्ञानिक सोच विकसित करने हेतु आगामी वर्षों में विद्यालयों में 1,050 समेकित गणित एवं विज्ञान लैब के अधिष्ठापन का लक्ष्य रखा गया है। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत वर्ष 2024-25 में राज्य के कुल 153 मध्य विद्यालयों को माध्यमिक विद्यालयों में और 292 उच्च विद्यालयों को उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में उत्क्रमित्त किया गया है। इससे राज्य के दूरस्थ क्षेत्रों के लगभग 2.50,000 (2 लाख 50 हजार) छात्र-छात्राओं को माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक शिक्षा उपलब्ध हो सकेगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत शिक्षकों के निरंतर क्षमतायर्द्धन हेतु दिये गये सुझाव के आलोक में शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु ठोस रणनीति तैयार की गयी है, जिसमें प्रत्येक शिक्षक को प्रति वर्ष 50 घंटे के प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा रही है। जेसीइआरटी के स्तर पर इस हेतु रणनीति तैयार करते हुए माह फरवरी, 2025 से प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया है।

नेतरहाट विद्यालय की तर्ज पर मसलिया, दुमका एवं खूंटपानी, चाइबासा में विद्यालय भवन का निर्माण कार्य संचालित है और बोकारो के नवाडीह में भी निर्माण कार्य प्रारंभ किया जा रहा है। मदरसों/अल्पसंख्यकों को शिक्षा प्रदान करने की योजना को संचालित करने की पहल झारखंड में की गयी है। वित्तीय वर्ष 2025-26 से इस योजना का संचालन राज्य योजना के अधीन करने का प्रस्ताव है।

झारखंड छात्र अनुसंधान एवं नवाचार नीति हो रही तैयार

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में राज्य सरकार एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में झारखंड छात्र अनुसंधान एवं नवाचार नीति, 2025 तैयार कर रही है। झारखंड राज्य से दसवीं एवं बारहवीं उत्तीर्ण अनाथ एवं दिव्यांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा हेतु ट्यूशन फीस के रूप में 10 लाख रुपये तक वार्षिक एवं दैनिक उपभोग, अध्ययन सामग्री इत्यादि के लिए 4,000 रुपये प्रति माह आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु वर्ष 2025-26 से वाल्मिकी छात्रवृत्ति योजना लागू की जा रही है। उच्च एवं तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्य में जमशेदपुर, गुमला एवं साहेबगंज जिला में नये राजकीय विश्वविद्यालय की स्थापना की योजना तैयार की जा रही है। साथ ही, जमशेदपुर, धनबाद एवं दुमका में तीन नये तकनीकी विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव तैयार किया जा रहा है।

राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालय में शुरू होगी पढ़ायी

तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बोकारो एवं गोड्डा में नवनिर्मित राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2025-26 से पठन-पाठन कार्य प्रारंभ करने की कार्रवाई की जा रही है। इसके अलावा राज्य सरकार द्वारा रांची/खूंटी, जमशेदपुर, गुमला, साहेबगंज और गिरिडीह में अभियंत्रण महाविद्यालय की स्थापना की जा रही है। राज्य में व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 02 नये विश्वविद्यालय यथा- स्कील विश्वविद्यालय और फिन-टेक विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव तैयार किया जा रहा है। इसके साथ ही जमशेदपुर, पलामू, रांची, धनबाद, हजारीबाग एवं देवघर में स्कूल ऑफ बिजनेस एंड मास कम्युनिकेशन की स्थापना किये जाने का प्रस्ताव है। राज्य में लीगल स्टडी को बढ़ावा देने के लिए हजारीबाग, रांची, धनबाद, दुमका एवं पलामू में कुल 05 नये विधि महाविद्यालय की स्थापना किये जाने का प्रस्ताव है।

स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं परिवार कल्याण बजट

7 हजार 470 करोड़ 50 लाख 86 हजार रुपये

छह जिलों में पीपीपी मोड पर खुलेंगे चिकित्सा महाविद्यालय

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्य सरकार राज्यवासियों को त्वरित, सस्ती एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा सुलभ कराने के लिए लगातार प्रयासरत है। इस हेतु प्राथमिक, माध्यमिक एवं तृतीयक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाये जा रहे हैं। इसके लिए सरकार ने स्वास्थ्य सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए 7 हजार 470 करोड़ 50 लाख 86 हजार रुपये का बजट प्रस्तावित किया है। रांची जिला में नये मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के निर्माण पर प्रशासनिक स्वीकृति दी गयी है। पीपीपी मोड पर खूंटी, गिरिडीह, जमशेदपुर, धनबाद, देवघर एवं जामताड़ा जिलों में चिकित्सा महाविद्यालय का गठन प्रस्तावित है। राज्य की जनता को स्वास्थ्य बीमा का लाभ लेने में हो रही कठिनाई के मद्देनजर गुणवत्तापूर्ण उच्चस्तरीय स्वास्थ्य सुविधा सुलभ कराने हेतु राज्य योजना अंतर्गत मुख्यमंत्री अबुआ स्वास्थ्य सुरक्षा योजना की स्वीकृति दी गयी है। साथ ही, राज्य कर्मियों के लिए भी स्वास्थ्य बीमा योजना लागू की गयी है। शत-प्रतिशत राज्य योजना से क्रियान्वित मुख्यमंत्री अस्पताल संचालन एवं रख-रखाव योजना और मुख्यमंत्री अस्पताल कायाकल्प योजना के माध्यम से अस्पतालों की स्थिति में उत्तरोत्तर सुधार सुनिश्चित कराया जा रहा है।

मुख्यमंत्री अबुआ स्वास्थ्य सुरक्षा योजना की स्वीकृति दी गयी

ग्रामीण विकास

बजटः 9 हजार 841 करोड़ 41 लाख 61 हजार रुपये

अबुआ आवास योजना के तहत स्वीकृत आवास को पूरा कराया जायेगा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। ग्राणीण विकास के लिए सरकार ने वर्ष 2025-26 में ग्रामीण विकास के लिए 9 हजार 841 करोड़ 41 लाख 61 हजार रुपये का बजट प्रस्तावित किया है। सदन में वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में आय के स्त्रोतों को बढ़ाते हुए रोजगार सृजन एवं उनके जीवन स्तर में सुधार करना हमारा मुख्य उद्देश्य है। वर्ष 2025-26 में महात्मा गांधी नरेगा योजना अंतर्गत 12 करोड़ मानव दिवस रोजगार सृजित करने का लक्ष्य है। सरकार की महत्वाकांक्षी अबुआ आवास योजना की शुरुआत प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना से अनाच्छादित राज्य के गरीब परिवारों को पक्का मकान उपलब्ध कराने के लिए की गयी है, जिसमें लाभार्थियों को पांच किस्त में 2,00,000/- (दो लाख) रुपये की आर्थिक सहायता दी जाती है। इस योजनांतर्गत 2024-25 तक के लिए अबुआ आवास हेतु निर्धारित लक्ष्य 6 लाख 50 हजार के विरुद्ध अब तक कुल 6 लाख 1 हजार 135 आवासों के निर्माण की स्वीकृति प्रदान की गयी है, जिसमें से 19 हजार 685 आवास पूर्ण हो चुके हैं। शेष आवास वित्तीय वर्ष 2025-26 में पूर्ण कराने का प्रस्ताव है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में सखी मंडलों के उत्पादों को उचित मूल्य एवं आर्थिक सहायता देने और वर्ष भर बाजार उपलब्ध कराने के लिए पलाश ब्रांड के तहत विपणन कराया जा रहा है। आगामी वित्तीय वर्ष 2025-26 में पलाश मार्ट पर 30 करोड़ रुपये के व्यय का प्रस्ताव है। आगामी वित्तीय वर्ष 2025-26 में 2 हजार सखी मंडलों को चक्रीय निधि की राशि एवं 35 हजार स्वयं सहायता समूहों को कैश क्रेडिट हेतु बैंक लिंकेज की सुविधा प्रदान की जायेगी। लगभग 2 लाख अतिरिक्त महिला किसानों को आजीविका संबंधी गतिविधियों से जोड़ा जायेगा।

ग्रामीण कार्य

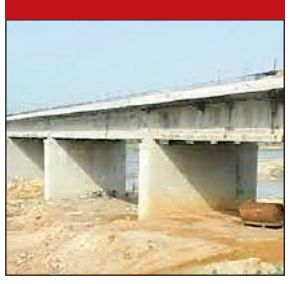

बजटः 4 हजार 576 करोड़ 30 लाख 73 हजार रुपये

गांव की सड़कों और पुल पुलियों का होगा निर्माण

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सरकार ने वर्ष 2025-26 में ग्रामीण कार्य विभाग के लिए 4 हजार 576 करोड़ 30 लाख 73 हजार रुपये के बजट का प्रस्ताव किया है। मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2024-25 में अब तक 249 योजनाएं जिनकी कुल लंबाई 734 किमी है, का निर्माण कार्य पूर्ण किया जा चुका है। शेष 935 स्वीकृत योजनाओं में निर्माण कार्य प्रगति पर है। मुख्यमंत्री ग्राम सड़क सुदृढ़ीकरण योजना के तहत पांच वर्ष एवं उससे पूर्व निर्मित क्षतिग्रस्त लगभग 15,000 किमी ग्रामीण सड़कों का सुदृढीकरण कराते हुए ग्रामीण आबादी का सरकारी कार्यालय, स्कूल/कॉलेज, स्वास्थ्य केंद्र/अस्पताल, बाजार तक आवागमन सुगम बनाने का लक्ष्य है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में अबतक 474 योजनाएं जिनकी कुल लंबाई 1,884 किमी है, पूर्ण की जा चुकी हैं। शेष स्वीकृत योजनाओं में निर्माण कार्य प्रगति पर है। मुख्यमंत्री ग्राम सेतु योजना अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2024-25 में 70 अदद् पुल का निर्माण कार्य पूर्ण करने के लक्ष्य को हासिल कर लिया गया है। वर्तमान में कुल 492 पुल के निर्माण का कार्य प्रगति पर है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना अंतर्गत 2,500 किमी पथ एवं 200 पुलों के निर्माण का लक्ष्य है, जिसके विरुद्ध अबतक 715 किमी लंबाई में पथ का निर्माण किया जा चुका है। शेष निर्माण कार्य प्रगति पर है।

झारखंड में विकास के नये कीर्तिमान स्थापित होंगे : बन्ना गुप्ता

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सोमवार को झारखंड के वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने बजट पेश किया। इस बजट को लेकर झारखंड के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता की प्रतिक्रिया सामने आयी है। उन्होंने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा है कि राज्य की गठबंधन सरकार ने 1 लाख 45 हजार 400 करोड़ का दूरदर्शी एवं जनहित को ध्यान में रखते हुए बजट पेश किया। जो पिछले वित्तीय वर्ष से 13% अधिक है। यह दर्शाता है कि हेमंत सरकार पार्ट 2 का मकसद सिर्फ सरकार चलाना नहीं बल्कि जनता तक चल कर सरकारी सुविधा और लोक कल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाना है। यह बजट एक तरफ झारखंड की सामाजिक कल्याण व्यवस्था को मजबूती देने के साथ-साथ युवाओं को रोजगार, किसानों को कृषि सहायता और मजदूरों के सशक्तिकरण का रोडमैप तैयार करेगा। जबकि दूसरी तरफ शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करते हुए शिक्षित झारखंड के सपने को भी साकार करेगा, साथ ही हेमंत सरकार पार्ट 1 की तर्ज पर राज्य की स्वास्थ्य व्यवस्था को भी मजबूती प्रदान करेगा, नये मेडिकल कॉलेज का निर्माण, आधारभूत संरचनाओं की व्यवस्था एवं सुदूर एवं ग्रामीण स्तर तक स्वास्थ्य व्यवस्था को पहुंचाने का कार्य किया जायेगा। यह एक संतुलित और विकासोन्मुखी बजट है जो झारखंड को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने की दिशा में अग्रसर होगा।

राज्य का बजट जन कल्याणकारी और लाभार्थी योजना से परिपूर्ण : कैलाश यादव

ऐतिहासिक बजट के लिए वित्तमंत्री राधाकृष्ण किशोर और हेमंत सरकार को बधाई

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सोमवार को प्रदेश राजद महासचिव सह मीडिया प्रभारी कैलाश यादव ने राज्य सरकार के वित्तमंत्री राधाकृष्ण किशोर द्वारा वार्षिक बजट पेश करने का स्वागत किया है। यह बजट राज्यहित में ऐतिहासिक कदम है। यादव ने कहा कि वित्तमंत्री ने विकास दर को बढ़ाने के लिए सभी विभागों को प्राथमिकता दी।

मंईयां सम्मान योजना के अलावा ग्रामीण विकास, खेलकूद, सामान्य क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र एवं आर्थिक क्षेत्र में काफी जोर दिया गया है। निश्चित रूप से यह बजट जन कल्याणकरी और लाभार्थी योजनाओं से परिपूर्ण है। निसंदेह आगामी दिनों में राज्य की विकास दर तेजी से बढ़ेगी। इस ऐतिहासिक और सराहनीय बजट के लिए वित्तमंत्री राधाकृष्ण किशोर एवं सीएम हेमंत सोरेन और सरकार के मंत्रिपरिषद समूह को राजद की ओर से बधाई।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
198000 Subscribers
VIEWERSHIP 3 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Subscribe NOW

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	31.5 °c	18.9 °c
सूर्यास्त (आज)	:	17.53 बजे
सूर्योदय (कल)	:	06.09 बजे

आजाद सिपाही
रांची, मंगलवार, 04 मार्च, 2025
www.azadsipahi.in

महिला, बाल विकास और सामाजिक सुरक्षा

बजट: 22 हजार 23 करोड़ 33 लाख 85 हजार रुपये

मंईयां सम्मान योजना के लिए 13 हजार 363 करोड़ रुपये का प्रावधान

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने कहा कि वृद्धजनों, महिलाओं, बच्चों, किशोरियों, दिव्यांगजनों, भिक्षुकों और समाज के अन्य अभिवंचित वर्गों के कल्याण एवं समाजिक सुरक्षा कराने हेतु राज्य सरकार कृत संकल्पित है। महिलाओं, बच्चों और सामाजिक सुरक्षा हेतु वर्ष 2025-26 में 22 हजार 23 करोड़ 33 लाख 85 हजार रुपये का बजट प्रस्तावित है। राज्य सरकार ने सशक्त एवं समर्थ राज्य एवं समाज निर्मित करने के निमित्त राज्य की महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वावलंबी, सामाजिक रूप से सशक्त, शारीरिक रूप से स्वस्थ, मानसिक रूप से सजग और शिक्षित बनाने के निमित्त 18 से 50 वर्ष तक की आयु की महिलाओं को झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना से आच्छादित किया है। इस योजनांतर्गत प्रति महिला प्रति माह 2 हजार 5 सौ रुपये की दर से भुगतान करने हेतु वित्तीय वर्ष 2025-26 में 13 हजार 363 करोड़ 35 लाख रुपये का बजटीय उपबंध का प्रस्ताव है।

पेंशन योजना के लिए राशि का किया गया है प्रावधान : मुख्यमंत्री सर्वजन पेंशन योजना के अंतर्गत 60 वर्ष की उम्र के व्यक्ति आच्छादित किये गये हैं, किंतु निःशक्त व्यक्तियों, आदिम जनजाति के व्यक्तियों, निराश्रित महिलाओं, एचआइवी/एड्स से ग्रसित व्यक्तियों एवं ट्रांसजेंडरों/तृतीय लिंग व्यक्तियों के साथ-साथ 50 वर्ष की आयु पूरी करने वाले आर्थिक रूप से कमजोर सभी महिलाओं तथा अनुसूचित जनजाति/जाति के सभी व्यक्तियों को पेंशन का लाभ दिया जा रहा है। इस योजना अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 में कुल 3,850.66 करोड़ (3 हजार 850 करोड़ 66 लाख) रुपये का बजटीय प्रावधान किया जा रहा है। इसके अंतर्गत लगभग 34 लाख लाभार्थी आच्छादित होंगे। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय दिव्यांग पेंशन योजना के मद में वित्तीय वर्ष 2025-28 हेतु कुल 1,449.26 करोड़ (1 हजार 449 करोड़ 26 लाख) रुपये का बजटीय प्रावधान किया जा रहा है, जिससे लगभग 12,00,000 (बारह लाख) लोगों को पेंशन दी जायेगी।

आंगनबाड़ी केंद्रों का अपना भवन होगा : सभी आंगनबाड़ी केंद्रों का अपना भवन हो। इसे राज्य सरकार सुनिश्चित करा रही है। इसी क्रम में सरकार वर्ष 2025 तक भवनहीन केंद्रों में से 2,500 (दो हजार पांच सौ) आगनबाड़ी केंद्र भवनों का निर्माण करायेगी। वर्तमान में 38,523 (अड़तीस हजार पांच सौ तेइस) केंद्र संचालित है। कुल 7,700 (सात हजार सात सौ) आंगनबाड़ी केंद्र में बच्चों के लिए टेबुल, कुर्सी के मद में कुल 250.17 करोड़ (2) सी 50 करोड़ 17 लाख) रुपये का प्रावधान किया जा रहा है। राज्य के आदिम जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों में 275 आंगनबाड़ी केंद्र के भवन निर्माण पर कुल 33 करोड़ रुपये का प्रावधान किया जा रहा है।

महिलाओं को कल्याण की योजनाओं के लिए राशि

गर्भवती महिलाओं एवं जच्चा-बच्चा के स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के लिए आवश्यक सामग्रियों का 1500 रुपये के मातृ किट को 4 लाख लाभार्थियों के बीच वितरण कराया जायेगा। इस पर आगामी वर्ष में 60 करोड़ रुपये का प्रावधान राज्य सरकार कर रही है। किट में मच्छरदानी, जच्चा एवं बच्चा हेतु पोशाक, तेल, साबुन बाल्टी-मग इत्यादि विभिन्न सामग्रियों होंगी। दिव्यांग कल्याणार्थ योजना के अंतर्गत 5.5 करोड़ (5 करोड़ 50 लाख) रुपये का प्रावधान किया जा रहा है। राज्य के दिव्यांग बच्चों, परित्यक्त/निराश्रित/विधवा महिलाओं एवं वृद्धों के लिए विद्यालय/अनाथालय /आश्रम संचालन हेतु कुल 15 करोड़ रुपये का प्रावधान किया जा रहा है। कामकाजी गर्भवती महिलाओं को गर्भावस्था में समुचित आराम, देखभाल के लिए आर्थिक मदद (प्रति लाभुक 5,000 रुपये) की योजना मद में 60 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जिससे कामकाजी महिलाएं लाभांन्वित होंगी। बालिकाओं एवं किशोरियों में उच्च शिक्षा के प्रति आकर्षित करने, बाल विवाह पर रोक, कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम के निमित्त संचालित सावित्रिबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना के अंतर्गत वर्ग 8 से वर्ग 12 तक की बच्चियों को 2,500/- (दो हजार पांच सौ) रुपये से 5,000/-(पांच हजार) रुपये एवं 18-19 वर्ष की किशोरियों को एकमुश्त 20,000/-(बीस हजार) रुपये एवं मुख्यमंत्री कन्यादान योजना अंतर्गत युवतियों के विवाह पर एकमुश्त 30,000/- (तीस हजार) रुपये आर्थिक सहायता हेतु कुल 310 करोड़ रुपये का प्रावधान है।

पर्यटन, कला संस्कृति, खेलकूद एवं युवा कार्य

- जोन्हा, हुंडरू, कौलेश्वरी और त्रिकूट में नये रोप-वे का निर्माण
- साहित्य कला अकादमी का गठन होगा

बजट: 336 करोड़ 64 लाख 45 हजार रुपये

दशम, हुंडरू, नेतरहाट और पतरातू में ग्लास ब्रिज का निर्माण होगा

पर्यटन स्थलों का किया जा रहा है जीर्णोद्धार

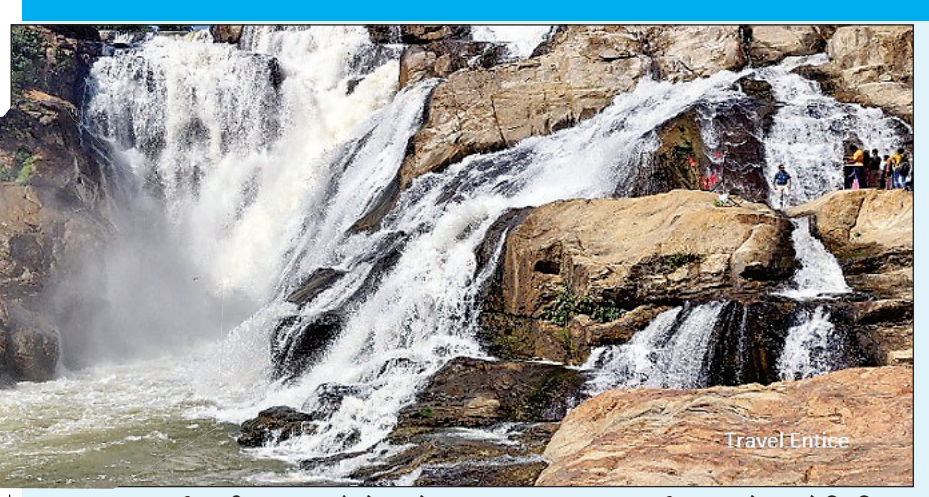

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने सदन में बताया कि विभाग द्वारा वर्तमान में 41 आवासीय क्रीड़ा प्रशिक्षण केंद्र एवं 102 डे बोर्डिंग क्रीड़ा प्रशिक्षण केंद्र संचालित किये जा रहे हैं और 59 नये डे-बोर्डिंग क्रीड़ा प्रशिक्षण केंद्र खोले जाने का लक्ष्य है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय खेलों में प्राप्त उपलब्धि के आधार पर राज्य के 523 मेधावी खिलाड़ियों को 428.85 लाख रुपये का पुरस्कार और 115 प्रशिक्षकों को 90.35 लाख रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया। जिला मुख्यालयों में बहुद्देशीय इंडोर स्टेडियम की स्वीकृति प्रदान की गयी है। वित्तीय वर्ष 2025-28 में राज्य के वैसे सभी प्रखंडों जिसमें स्टेडियम नहीं हैं, उन प्रखंडों में मॉडल प्राक्कलन पर स्टेडियम का निर्माण कराया जायेगा। राज्य के सभी गांवों में एक सिदो कान्हू युवा क्लब की स्थापना की जा रही है। झारखंड उत्कृष्ट खिलाड़ी सीधी नियुक्ति (भर्ती एवं सेवाशर्त) नियमावली, 2025 बनायी जायेगी।

पलामू प्रमंडल अंतर्गत 16वीं शताब्दी में निर्मित पलामू किला एक ऐतिहासिक धरोहर है। वर्तमान में पलामू किला बाघ अभयारण्य क्षेत्र में अवस्थित है। सरकार पलामू किला का अनुरक्षण करते हुए विभिन्न सुविधाओं का विकास कर पलामू की गौरवशाली अतीत को नयी पीढ़ियों के समक्ष लायेगी। राज्य में पर्यटन व्यापार पंजीकरण नियमावली गठित किया गया है और निबंधन प्रारंभ कर दिया गया है। देवघर में फुड क्राफ्ट संस्थान का संचालन किया जा रहा है। गिरिडीह जिलांतर्गत अवस्थित खंडोली पर्यटन स्थल का जीर्णोद्धार एवं सौंदर्यीकरण करते हुए इसे देश के पर्यटन मानचित्र पर जगह दिलाया जायेगा। साहेबगंज जिलांतर्गत भोगनाडीह में सिदो-कान्हू मुर्मू जन्मस्थली के उन्नयन एवं सौंदर्यीकरण कार्य की स्वीकृति दी गयी है। गोड्डा जिला के सुंदर डैम जलाशय के आसपास के क्षेत्र को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है। गुमला जिला के नागफेनी/अंबाघाट के पर्यटकीय विकास एवं मूलभूत सुविधा का निर्माण कार्य किये जाने की स्वीकृति दी गयी है। लातेहार जिला अंतर्गत नेतरहाट पर्यटन क्षेत्र के विकास की स्वीकृति दी गयी है। रांची जिला में हुंडरू जलप्रपात के पर्यटकीय विकास की स्वीकृति प्रदान की गयी है। इसी तर्ज पर गिरिडीह में उसरी जलप्रपात एवं लातेहार जिला में बूढ़ाघाघ जलप्रपात के पर्यटकीय विकास के लिए योजना बनायी जायेगी। आगामी वित्तीय वर्ष 2025-26 में दशम, हुंडरू, नेतरहाट एवं पतरातू में ग्लास ब्रिज का निर्माण कराया जायेगा। जोन्हा, हुंडरू, कौलेश्वरी एवं त्रिकुट में नये रोप-वे का निर्माण प्रस्तावित है। खूंटी जिला के पेरवाघाघ जलप्रपात और पांडुपुडिंग पर्यटन स्थल को इको-टूरिज्म सर्किट के रूप में विकसित किया जायेगा। रांची जिला के तपोवन मंदिर का विकास कराया जायेगा। रामगढ़ जिला के रजरप्पा मंदिर कॉम्प्लेक्स का पर्यटकीय विकास कराया जायेगा। प्रमुख जलाशयों जैसे तिलैया, चांडिल मंडल, तेनुघाट आदि का पर्यटकीय विकास कराया जायेगा। इसी प्रकार, खनन पर्यटन विकसित करने की कार्रवाई की जा रही है। सरकार राज्य में झारखंड संगीत कला अकादमी, झारखंड ललित कला अकादमी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के लिए साहित्य कला अकादमी के गठन पर कार्य कर रही है। 2025-26 में पर्यटन विभाग के लिए 336 करोड़ 64 लाख 45 हजार रुपये का बजट प्रस्तावित है।

नागर विमानन

115 करोड़ 19 लाख 37 हजार रुपये का बजट

राजधानी से पर्यटन स्थलों के लिए हेलिकॉप्टर शटल सेवा शुरू होगी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्य सरकार के उपयोग हेतु साहेबगंज में नये हवाई अड्डे और एयर कार्गो के निर्माण के लिए चिह्नित भूमि के अधिग्रहण पर सरकार की स्वीकृति प्रदान की गयी है। राज्य में एक स्थान से दूसरे स्थान तक की यात्रा और टूरिस्ट सर्किट के लिए सेवा प्रारंभ करने की योजना विचाराधीन है। इसके अंतर्गत राज्य के प्रमुख तीर्थ स्थलों यथा-देवघर, बासुकीनाथ, पारसनाथ, रजरप्पा, इटखोरी और प्रमुख पर्यटक स्थलों यथा- बेतला नेशनल पार्क, पतरातु घाटी, साहेबगंज हेतु राज्य की राजधानी से हेलिकॉप्टर शटल सेवा प्रारंभ करने की कार्रवाई की जा रही है। राज्य के गंभीर रूप से बीमार मरीजों के लिए सस्ते दर पर एयर एंबुलेंस सेवा दिनांक 28.04.2023 से 24 घंटे 7 दिन संचालित की जा रही है। सेवा का लाभसभी गरीब जरूरतमंद लोगों को सुलभ हो इसके लिए पूर्व निर्धारित दरों में 50 प्रतिशत की कटौती की गयी है। नागर विमानन हेतु वर्ष 2025-26 में 115 करोड़ 19 लाख 37 हजार रुपये का बजट प्रस्तावित है।

डंके की चोट पर लेंगे केंद्र से सूद समेत बकाया राशि : राधा कृष्ण किशोर

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के दौरान सोमवार को वित्त मंत्री राधा कृष्ण किशोर ने कहा कि हम डंके की चोट पर केंद्र से बकाया की राशि लेंगे। उन्होंने कहा कि जब केंद्र सरकार सूद की राशि लेती है तो हम क्यों नहीं। किशोर जदयू विधायक सरयू राय के सवाल का जवाब दे रहे थे। सरयू का कहना था कि कोयला कंपनियों के यहां बकाया 136000 करोड़ की राशि को पाने के लिए राज्य सरकार केवल राजनीतिक बयान बाजी कर रही है। यह मामला हाइकोर्ट और ट्रिब्यूनल में फंसा है। हाइकोर्ट और ट्रिब्यूनल में इस मामले पर जल्द फैसला करने के बदले राज्य सरकार कमेटी बनाने की बात कह रही है। लेकिन जब मामला कोर्ट में हो तो राज्य सरकार अथवा कोयला मंत्रालय कुछ नहीं कर सकता। सरयू राय के सवाल का जवाब देते हुए राधाकृष्ण किशोर ने कहा कि केंद्र और राज्य की कमेटी ही आपसी विमर्श के बाद जो राशि तय करेगी इस पर ट्रिब्यूनल या कोर्ट कोई फैसला ले सकता है। इसलिए राज्य सरकार ने 1 मार्च 2025 को कमेटी का गठन किया है जो राशि का आकलन करेगी। केंद्रीय कोयला मंत्री ने मुलाकात के दौरान दिल्ली में स्वीकार किया है की झारखंड को उसकी बकाया राशि मिलेगी। इससे पहले प्रभारी मंत्री योगेंद्र प्रसाद ने सरयू राय के सवाल का जवाब देते हुए कोयला कंपनियों के यहां बकाया राशि का ब्रेकअप भी दिया। उन्होंने भी केंद्र से सूद की राशि लेने का दावा किया।

बजट में किसान और महिलाओं के उत्थान पर जोर : शिल्पी नेहा तिर्की

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने झारखंड के अबुआ बजट को गांव-गरीब-किसान-नौजवान और महिलाओं के उत्थान का बजट बताया है। झारखंड में गांव के आर्थिक विकास और आधारभूत संरचना को लेकर सरकार की गंभीरता इस बजट में झलकती है। मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा है कि हेमंत सोरेन की अगुवाई वाली गठबंधन सरकार के इस बजट में शहर से लेकर गांव और शिक्षा-स्वास्थ्य से लेकर पर्यटन क्षेत्र के विकास पर जोर दिया गया है। राज्य के किसान समृद्ध हों, उनके फसल का सही मूल्य मिल सके, उन्नत कृषि के साथ किसानों का जुड़ाव सरकार की प्राथमिकता में है। हेमंत सोरेन सरकार पार्ट 2 का ये पहला 1 लाख 45 हजार 400 करोड़ का बजट है। इसके पहले बजट में गठबंधन वाली सरकार के द्वारा जनता से किये गये वायदों को पूरा करने के लिए ये पहला कदम है। राज्य सरकार जनता से किये गये वायदों को लेकर कृतसंकल्पित है। सरकार का लक्ष्य समाज के अंतिम पायदान पर खड़े लोगों का सामाजिक, आर्थिक दृष्टिकोण से विकास करना है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में राज्य का आर्थिक विकास दर 7.5 प्रतिशत होने का अनुमान है।

जनता के सपनों को पूरा करने वाला बजट: सुप्रियो

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड के वित्त मंत्री राधा कृष्ण किशोर ने राज्य का 1 लाख 45 हजार 400 करोड़ रुपये का अबुआ बजट 2025-26 पेश किया। इस बजट में राज्य के विकास के कई पहलुओं पर ध्यान दिया गया है, जिसमें शिक्षा, रोजगार, कृषि, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा पर खास जोर दिया गया है।

झारखंड मुक्ति मोर्चा के महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने रांची में आयोजित प्रेस वार्ता में कहा कि सरकार ने अपने चुनावी वादों को प्राथमिकता दी है। उन्होंने बताया कि इस बजट में युवाओं के लिए रोजगार, कृषि क्षेत्र में सुधार, महिलाओं के लिए विशेष योजनाएं और सामाजिक सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई फैसले लिये गये हैं। सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि शिक्षा क्षेत्र में सरकार ने कौशल विकास, कानूनी शिक्षा और छात्रों के लिए नये अवसर देने की योजनाएं बनायी हैं। इसके अलावा, युवाओं को रोजगार और स्वरोजगार के लिए पर्यटन क्षेत्र को उद्योग से जोड़ने की योजना है। महिलाओं और बुजुर्गों के लिए मंईयां सम्मान योजना के तहत विशेष सहायता दी जायेगी।

उन्होंने यह भी बताया कि किसानों के लिए राहत देने के लिए कई योजनाएं बनायी गयी हैं और पुरानी पेंशन योजना को फिर से लागू करने के लिए विशेष फंड का गठन किया जायेगा। जेएमएम नेता ने कहा कि यह बजट झारखंड की जनता की उम्मीदों का प्रतिनिधित्व करता है और राज्य के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

कृषि एवं संबद्ध प्रक्षेत्र

बजट : 4 हजार 587 करोड़ 66 लाख 24 हजार रुपये

मिलेट मिशन योजनांतर्गत 1 लाख किसानों को अनुदान

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। वित्त मंत्री राधा कृष्ण किशोर ने कहा कि आगामी वर्ष में 2025-26 में कृषि एवं संबद्ध प्रक्षेत्र के लिए 4 हजार 587 करोड़ 66 लाख 24 हजार रुपये का बजट प्रस्तावित है। उन्होंने कहा कि राज्य की आर्थिक-संस्कृति आज भी मुख्यतः खेती-किसानी पर ही आधारित है। हमारी सरकार की मुख्य प्राथमिकता किसानों को ऋण से मुक्त करना, सूखा से राहत दिलाना और सबसे महत्वपूर्ण उनके आय में वृद्धि करना है। हमारी सरकार ने झारखंड कृषि ऋण माफी योजना के माध्यम से अब तक लगभग 4 लाख किसानों का 2 लाख रुपये तक का ऋण माफ किया है। इस मद में कुल 769 करोड़ रुपये से अधिक का व्यय किया गया है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में लागू बिरसा बीज उत्पादन, विनिमय वितरण एवं फसल विस्तार योजना को आगे बढ़ाते हुए वित्तीय वर्ष 2024-25 में लगभग 3,83,000 (3 लाख 83 हजार) किसानों को आच्छादित करते हुए कुल 39 करोड़ 10 लाख रुपये व्यय के साथ अनुदान पर बीज वितरण किया गया। वित्तीय वर्ष 2025-26 में इस योजनांतर्गत 95 करोड़ रुपये व्यय का प्रस्ताव है।

तालाबों के जीणोद्धार योजना पर खर्च होंगे 203 करोड़ : वित्तीय वर्ष 2024-25 में मृदा एवं जल संरक्षण के क्षेत्र में बंजर भूमि राईस फैलो उपयोजना एवं जलनिधि उपयोजना अंतर्गत कुल 1,200 (बारह सौ) सरकारी/निजी तालाबों का गहरीकरण/जीर्णोद्धार कराया जा रहा है। जिसके माध्यम से कृषि कार्य हेतु 9,600-12,000 हेक्टेयर भूमि में अतिरिक्त सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। इसे जारी रखते हुए वित्तीय वर्ष 2025-26 में जल निधि उप योजना अंतर्गत तालाबों का गहरीकरण/जीर्णोद्धार, डीप बोरिंग आदि कार्य कराने हेतु 203 करोड 40 लाख रुपये का बजट प्रस्ताव है।

मिलेट मिशन से किसानों को किया जायेगा आच्छादित : खेती में कृषि यंत्रों के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कृषि यंत्र वितरण योजना के अंतर्गत मिनी ट्रैक्टर, पावर टीलर, पंप सेट, रीपर, ट्रॉसप्लांटर आदि का वितरण किया जा रहा है, जिसके लिए वित्तीय वर्ष 2025-26 में 8400 लाभुकों के लिए 140 करोड़ (1 सौ 40 करोड़) रुपये का बजट प्रस्तावित किया गया है। सुखाड़ की स्थिति से निबटने हेतु संचालित झारखंड राज्य मिलेट मिशन अंतर्गत किसानों को लगातार आच्छादित किया जा रहा है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में झारखंड राज्य मिलेट मिशन योजनांतर्गत एक लाख किसानों को अनुदान देने का प्रस्ताव है, जिसपर 24 करोड़ 50 लाख रुपये का बजट प्रस्तावित किया गया है।

डेयरी विकास योजना को और बढ़ाया जायेगा

उद्यानिकी क्षेत्र में अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित करने, कृषकों की आय में वृद्धि करने और पलायन रोकने के उद्देश्य से राज्य उद्यान विकास की योजना को आगे बढ़ाते हुए इस योजना अंतर्गत आगामी वित्तीय वर्ष में सब्जी की खेती, फूल की खेती, कृषक प्रशिक्षण, सैंपलिंग नर्सरी की स्थापना, मधुमक्खी पालन की योजना, चाय की खेती का प्रत्यक्षण आदि पर वित्तीय वर्ष 2025-26 में 304 करोड़ 85 लाख का बजट प्रस्तावित किया गया है। पशुपालन एवं गव्य विकास के क्षेत्र में मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 में कुल 79,000 (79 हजार) लाभुकों को आच्छादित करने के लक्ष्य पर 255 करोड़ (2 सौ 55 करोड़) रुपये का बजट प्रस्तावित है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में दुग्ध उत्पादन का लक्ष्य 38,01,000 (38 लाख 01 हजार) मीट्रिक टन प्रस्तावित है। झारखंड मिल्क फेडरेशन के माध्यम से राज्य में दूध संग्रहण, विधायन एवं विपणन व्यवस्था के विस्तारीकरण/सुदृढ़ीकरण हेतु झारखंड डेयरी डेवलपमेंट प्लान के क्रियान्वयन का प्रस्ताव है।

जिला स्तरीय सहकारी संघ लिमिटेड के लिए हिस्सा पूंजी का प्रावधान

झारखंड राज्य के किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए उन्हें कृषि उत्पादन में आर्थिक नुकसान से भरपाई हेतु बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का क्रियान्वयन कराया जा रहा है, जिसके अंतर्गत प्रतिकूल मौसम के कारण फसलों के उत्पादन में क्षति होने की स्थिति में फसलों की क्षति का आकलन कर किसानों को क्षतिपूर्ति राशि प्रदान की जा रही है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के लिए 350 करोड़ (3 सौ 50 करोड़) रुपये का बजटीय उपबंध प्रस्तावित है। राज्य में वैजफेड, सिदो-कान्हू सहकारी संघ लिमिटेड आदि सहकारी संस्था कार्यरत हैं। जो अपने-अपने प्रक्षेत्र में सहकारिता के प्रचार-प्रसार एवं विकास हेतु क्रियाशील हैं एवं इनके माध्यम से सभी प्रकार की समितियों को आधारभूत संरचना एवं प्रशिक्षण दिया जाता है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में उक्त फेडरेशनों के आधारभूत संरचना के विकास एवं प्रशिक्षण हेतु 77.76 करोड़ (77 करोड़ 76 लाख) रुपये का बजटीय प्रावधान किया गया है। कृषि एवं अनुषंगी गतिविधियों और वनोपज के व्यापार से ठेकेदारी प्रथा को समाप्त कर अनुसूचित जनजाति एवं ग्रामीणों को उनके द्वारा उत्पादित एवं संग्रहित उत्पादों का उचित पारिश्रमिक एवं उचित मूल्य दिलवाने आदि के उद्देश्य से सिदो-कान्हू कृषि एवं वनोपज राज्य सहकारी संघ लिमिटेड एवं जिला स्तरीय सहकारी संघ लिमिटेड का गठन किया गया है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में जिला स्तरीय सहकारी संघ लिमिटेड के लिए हिस्सापूंजी हेतु 24 करोड़ (चौबीस करोड़) रुपये का बजटीय प्रावधान किया गया है।

मच्छली उत्पादन को बढ़ाया जायेगा

वर्तमान में लैंप्स/पैक्स विभिन्न सेवाओं के लिए कार्य कर रहे हैं। इनके माध्यम से किसानों के उपज के भंडारण एवं संरक्षण हेतु गोदाम निर्माण योजनांतर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 में 118 गोदामों के निर्माण का कार्य प्रस्तावित है, जिसपर 259 करोड़ 52 लाख का बजटीय उपबंध किया गया है। आगामी वित्तीय वर्ष 2025-26 में ग्रामीण एवं शहरी इच्छुक युवाओं को मछली पालन की विभिन्न विधाओं में सहायता प्रदान कर स्वरोजगार के अधिकाधिक अवसर सृजित करने हेतु 4,10,000 (4 लाख 10 हजार) मीट्रिक टन मछली का उत्पादन कराने की योजना है।

नगर विकास एवं आवास

बजट: 3 हजार 577 करोड़ 68 लाख 91 हजार रुपये

रांची और चास शहरी जलापूर्ति योजना इस वर्ष पूरा करने का लक्ष्य

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सराकर ने नगर विकास एवं आवास विभाग के लिए 3 हजार 577 करोड़ 68 लाख 91 हजार रुपये के बजट का प्रस्ताव किया है। प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) अंतर्गत अब तक झारखंड राज्य के लिए कुल 2,11,010 आवासीय इकाई स्वीकृत है, जिसमें से 1,29,045 आवास पूर्ण किये जा चुके हं एवं 63,990 आवासीय इकाईयों का निर्माण कार्य प्रगति पर है। रांची में नयी एवं उभरती तकनीक से लाइट हाउस प्रोजेक्ट के तहत 1,008 आवासों का निर्माण कार्य पूर्ण कर लाभुकों को आर्वटित कर दी गयी है। अमृत एवं अमृत 2.0 मिशन योजनांतर्गत विभिन्न जलापूर्ति योजनाओं का निर्माण कार्य प्रक्रियाधीन है। इनमें से रांची शहरी जलापूर्ति, चास शहरी जलापूर्ति एवं आदित्यपुर सिवरेज प्रबंधन योजना का निर्माण कार्य वित्तीय वर्ष 2025-26 में पूर्ण कर लिया जायेगा। वित्तीय वर्ष 2025-26 में

जलापूर्ति परियोजनाओं का निर्माण कार्य 11 नगर निकायों, यथा चास, गिरिडीह, धनवार, कपाली, गुमला, लोहरदगा, विश्रामपुर, बरहरवा, श्रीबंशीधरनगर, छत्तरपुर एवं हरिहरगंज में प्रारंभ किया जायेगा। मुख्यमंत्री श्रमिक योजना अंतर्गत 2024-25 में कुल 20,000 जॉब कार्ड बनाने के लक्ष्य के विरुद्ध अबतक 7 हजार 282 जॉब कार्ड निर्गत किये जा चुके हैं तथा 10 लाख मानव दिवस सृजित किये जाने के लक्ष्य के विरुद्ध 3 लाख 23 हजार 512 मानव दिवस सृजित किये जा चुके हैं। वित्तीय वर्ष 2025-26 में कुल 20 हजार जॉब कार्ड बनाने तथा 10 लाख मानव दिवस सृजित किये जाने का लक्ष्य है। नमामि गंगे योजना अंतर्गत राज्य में 300 किमी तक बहनेवाली गंगा की सहायक नदी दामोदर को नमामि गंगे परियोजना में शामिल करते हुए फुसरो, रामगढ़ एवं धनबाद शहर हेतु सिवरेज परियोजना का कार्य प्रक्रियाधीन है। इसे चालू वित्तीय वर्ष में पूरा किया जायेगा। वित्तीय वर्ष 2025-26 में राची स्मार्ट सिटी क्षेत्र में ग्रीन फिल्ड, ओपेन स्पेश एवं पार्क का विकास करने की योजना है।

पेयजल एवं स्वच्छता

बजट : 4 हजार 710 करोड़ 2 लाख 56 हजार रुपये

केंद्र से अब तक नहीं मिली राशि, राज्य सरकार करा रही हकाम

रांची (आजाद सिपाही)। जल जीवन मिशन के तहत राज्य के कुल 62 लाख 55 हजार ग्रामीण परिवारों को कार्यरत घरेलू नल संयोजन के द्वारा शुद्ध पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित किये जाने के लक्ष्य के विरुद्ध अबतक 34 लाख 17 हजार परिवारों को इस योजना से आच्छादित किया जा चुका है। इस वित्तीय वर्ष में केंद्रांश मद में अब तक कोई राशि प्राप्त नहीं होने के कारण राज्यांश मद की राशि से योजना के संचालन का निर्णय लिया गया है। स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) चरण 2 के तहत

अबतक 6 लाख 16 हजार 758 व्यक्तिगत घरेलू शौचालयों का निर्माण किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त नवनिर्मित घरों और वैसे घरों जिनमें शौचालयों की सुविधा नहीं है, में शौचालयों का निर्माण कार्य जारी है।

पथ निर्माण

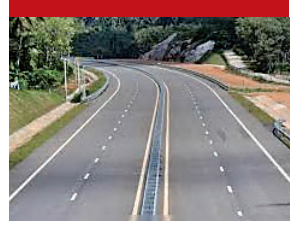

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सरकार ने पथ निर्माण विभाग के लिए 5 हजार 900 करोड़ 89 लाख 28 हजार रुपये के बजट का प्रस्ताव किया है। राज्य गठन के समय राज्य में पथों की कुल लंबाई 5 हजार 400 किमी थी, जो अब बढ़कर 14 हजार 879 किमी हो गयी है। पथों का घनत्व वर्ष 2024-25 के प्रारंभ में 177 किमी प्रति 1,000 वर्ग किलोमीटर से बढ़कर वर्तमान में 188.69 किमी प्रति 1,000 वर्ग किलोमीटर हो गयी है। पथ घनत्व की वृद्धि के साथ राज्य के महत्वपूर्ण सड़कों के यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ एवं सुचारु बनाने हेतु सड़कों को फोर लेन में परिणत करने एवं फ्लाइओवर बनाने का कार्यक्रम है।

पथ निर्माण विभाग के पथों को उन्नत अवस्था में संधारित करने हेतु क्षतिग्रस्त पथों के सुधार का प्रस्ताव है। नये उच्चस्तरीय पुलों के निर्माण के निर्धारित लक्ष्य के तहत नये पुल बनाये जाने का प्रस्ताव है। राज्य की लगभग 1,200 किमी सड़क का उन्नयन किया जायेगा और 10 उच्चस्तरीय पुलों का निर्माण किया जायेगा।

बजट: 5 हजार 900 करोड़ 89 लाख 28 हजार रुपये

राज्य में 1,200 किमी सड़क का किया जायेगा उन्नयन

पंचायती राज बजट : 2,144 करोड़ 78 लाख 14 हजार रुपये

परिसंपत्तियों का निर्माण और मरम्मत के लिए राशि का प्रावधान

रांची (आजाद सिपाही)। शत-प्रतिशत राज्य योजना मद अंतर्गत राज्य सरकार के द्वारा आगामी वित्तीय वर्ष 2025-26 में पंचायत सचिवालय सुदृढ़ीकरण योजना, विभिन्न भवन परिसंपत्तियों के निर्माण/मरम्मत/ जीर्णोद्धार, सामुदायिक सेवा केंद्र और पंचायत ज्ञान केंद्र आदि पर कुल 280 करोड़ के बजटीय उपबंध का प्रस्ताव है। वर्ष 2025-26 में 15वें वित्त आयोग द्वारा अनुदान मद में 1,322 करोड़ (1 हजार 3 सौ 22 करोड़ रुपये की राशि प्राप्त होने की संभावना है। इस राशि से संबंधित संस्था 30 (तीस) प्रतिशत जलापूर्ति पर, 30 (तीस) प्रतिशत स्वच्छता पर एवं शेष 40 (चालीस) प्रतिशत का व्यय स्थानीय आवश्यकता की योजनाओं पर कर सकेगी।

अबुआ बजट प्रगतिशील; लोक कल्याणकारी : डॉ रामेश्वर उरांव

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड सरकार के पूर्व वित्त मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव ने हेमंत सरकार के पेश किये गये अबुआ बजट को लोक कल्याणकारी, गरीब हितकारी, बहुआयामी, लोक उपयोगी बजट बताया है। उन्होंने कहा कि सरकार ने जनता पर किसी प्रकार का कोई बोझ नहीं दिया है जो यह दर्शाता है कि सरकार ने बजट तैयार करने में काफी परिश्रम किया है। उन्होंने कहा बजट का आकार बढ़ा है और सभी विभागों में राशि आवंटित किये गये हैं और यह कहा जा सकता है कि राज्य का बजट प्रगतिशील बजट है। डॉ रामेश्वर उरांव ने कहा कि वित्तीय प्रबंधन की कुशलता का ही यह परिणाम है कि आज झारखंड हिंदुस्तान के दूसरे प्रदेशों की तुलना में आगे बढ़ता हुआ चौथे पायदान पर खड़ा है और यह पिछले कई वर्षों की मेहनत का परिणाम है। वर्तमान सरकार ने मूलभूत संरचनाओं के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र में भी बजट में प्रावधान सुनिश्चित किया है जो अच्छी बात है। महिला सशक्तिकरण के लिए विशेष प्रावधान। बजट में मैया सम्मान योजना के लिए राशि का प्रावधान कर सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि सरकार महिला सशक्तिकरण के लिए कितनी प्रतिबद्ध है। जहां भाजपा सहित संपूर्ण विपक्ष सरकार की आलोचना पर लगा हुआ था कि सरकार मंईयां सम्मान योजना के लिए किस तरह रुपये का व्यवस्था करेगी; वहीं सरकार ने बजट में मंईयां सम्मान योजना के लिए स्पष्ट तौर पर धन राशि का प्रावधान कर यह दिखा दिया कि सरकार महिलाओं के विकास और जनता से किये गये वादे के लिए कितनी प्रतिबद्ध है।

अबुआ बजट लोगों के जीवन में बदलाव लायेगा : लाल किशोर नाथ

रांची (आजाद सिपाही)। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मुख्य प्रवक्ता लाल किशोर नाथ शाहदेव ने कहा कि झारखंड सरकार द्वारा पेश बजट एक ओर झारखंड के विकास को गति देगा। वहीं झारखंड वासियों को मजबूती प्रदान करने वाला है। आधी आबादी महिलाओं के लिए मंईयां सम्मान योजना को महत्व देना, पेंशन की राशि निर्धारित करने जैसे कई सामाजिक क्षेत्र को मजबूती दी गयी है। सरकार का यह प्रयास है कि झारखंड वासियों को सीधे तौर पर लाभ पहुंचाया जाये। शाहदेव ने कहा कि राज्य की जनता पर कोई अतिरिक्त कर नहीं लगाना कुशल वित्तीय प्रबंधन का हिस्सा है। यह अबुआ बजट कल्याणकारी और लोगों के जीवन में बदलाव लाने वाला होगा।

लोगों के अनुरूप बना बजट है: केशव महतो कमलेश

रांची (आजाद सिपाही)। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने कहा कि हेमंत सरकार द्वारा 145400 करोड़ रुपये का पेश बजट झारखंड के लोगों के आशाओं और सपनों के अनुरूप बना बजट है। यह अबुआ बजट है, इसमें समाज के सभी वर्गों को शामिल करके सरकार ने अपनी दूरदर्शी सोच को दर्शाया है। इस अबुआ बजट को बनाने में झारखंड की जनता ने अपना विचार सरकार के समक्ष रखा था, यह जनता का बजट है। केशव महतो कमलेश ने कहा कि पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में लगभग 13 प्रतिशत अधिक का बजट निश्चित रूप से राज्य के विकास की गति को तेज रखेगा। बगैर कोई अतिरिक्त कर लगाये राज्य की आमदनी और खर्च का वित्तीय संतुलन बजट में साफ दिख रहा है। बजट में स्थापना एवं योजना व्यय का 37:63 का अनुपात ही साफ है कि विकास कार्यों को सरकार प्राथमिकता दे रही है। किसानों के लिए फसल विस्तार योजना में 95 करोड़ का प्रावधान कृषि यंत्र संयंत्र, दूध उत्पादन फसल बीमा योजना, कृषि उत्पादों के भंडारण के लिए गोदाम के निर्माण के लिए बजट में वृद्धि से किसान समुदाय के विकास में सहायता मिलेगी।

आने वाला समय झारखंड के सुनहरे भविष्य का है: राकेश सिन्हा

रांची (आजाद सिपाही)। प्रदेश मीडिया प्रभारी राकेश सिन्हा ने कहा कि बजट में किसानों महिलाओं युवाओं छात्रों के भविष्य को आधार बनाया गया है। आने वाला समय झारखंड के सुनहरे भविष्य का है। वर्तमान में चल रही योजनाओं के आकार को बढ़ाने के साथ सरकार ने नयी योजनाओं को प्रारंभ करने की घोषणा की है। बजट के विकासपरक योजनाओं के धरातल पर उतरने से निश्चित रूप से विकास की गति तेज होगी। अनुसूचित जाति,जनजाति किसानों के आर्थिक मजबूती का एक पूर्ण संकल्प बजट में दिख रहा है। कृषक क्षेत्र के साथ ही शिक्षा और स्वास्थ्य पर भी सरकार ने संतुलित ध्यान दिया है। बजट में हर क्षेत्र के विकास का आपसी संतुलन बनाया गया है ताकि कोई भी क्षेत्र विकास के कदमों से अछूता ना रहे।

बाबा साहेब की परिकल्पना साकार करने में महत्वपूर्ण होगा हेमंत सरकार का अबुआ बजट : वेदांत कौस्तव

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सिविल इंजीनियर और युवा समाजसेवी वेदांत कौस्तव ने कहा है कि हेमंत सोरेन सरकार का अबुआ बजट बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की परिकल्पना को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। राज्य सरकार ने बजट में सबसे ज्यादा महिला, बाल कल्याण और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में 22 हजार 33 करोड़, 33 लाख रुपये का प्रावधान किया है। बाबा साहब महिलाओं के प्रति समर्पित थे और महिला सशक्तिकरण को लेकर उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। उनका मानना था कि किसी भी समाज की प्रगति महिलाओं की प्रगति से मापी जाती है। अबुआ सरकार का अबुआ बजट में भी महिला सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के लिए सरकार ने 13363 करोड़ का

प्रावधान कर सरकार ने अपना ठोस इरादा जाहिर कर दिया है। इसके अलावा शिक्षा, चिकित्सा कृषि और आधारभूत सरंचना के निर्माण और विकास के लिए सरकार ने विषेश जोर दिया है। राज्य में विकास का दर लगातार बढ़ रहा है और स्थापना और व्यय के अनुपात को 37:63 के अनुपात में लाने से भी विकास की गति तेज होगी। तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में विकास के लिए बजट में महत्वपूर्ण कदम उठाये गये हैं। इस साल का बजट शिक्षा क्षेत्र के लिए भी खास है क्योंकि वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने राज्य में व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दो नये विश्वविद्यालय, कौशल विश्वविद्यालय और फिन-टेक विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव दिया है। इसके साथ ही जमशेदपुर, पलामू, रांची, धनबाद, हजारीबाग और देवघर में स्कूल ऑफ बिजनेस एंड मास कम्युनिकेशन की भी स्थापना की जायेगी। इस साल का बजट शिक्षा क्षेत्र के लिए भी खास है। शिक्षा के क्षेत्र में 17,607 करोड़ रुपये से अधिक का प्रावधान किया गया है। कौशल विकास के लिए 585 करोड़ का प्रावधान करने से हुनर को सामने लाने और रोजगार के अवसर सृजित करने के रास्ते खुलेंगे। इनके अलावा, हजारीबाग, रांची, धनबाद, दुमका और पलामू में पांच नये विधि महाविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव भी युवाओं के लिए महत्वपूर्ण हैं।

उद्योग

बजटः 486 करोड़ 31 लाख 61 हजार रुपये

20 हजार करोड़ रुपये का निवेश लाने की है योजना

15 हजार लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलेगा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सरकार ने उद्योगों के विकास और विस्तार विशेषकर मध्यम, लघु और सूक्ष्म उद्योगों को प्राथमिकता देते हुए वर्ष 2025-26 में उद्योग विभाग के लिए 486 करोड़ 31 लाख 61 हजार रुपये के बजट का प्रस्ताव रखा है। झारखंड राज्य प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण ऐसा राज्य है। जहां औद्योगिक विकास की असीम संभावनाएं हैं। राज्य सरकार अनुकूल औद्योगिक वातावरण के निर्माण हेतु निरंतर प्रयासरत है। इस क्रम में विभिन्न नयी औद्योगिक

नीतियों का सूत्रण किया गया, ताकि न सिर्फ राज्य में पूंजी निवेश का निरंतर प्रवाह बने, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसर में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सके, जिससे उनकी आय में वृद्धि हो। आगामी वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए विभाग से संबंधित योजनाओं के कार्यान्वयन हेतु 450 करोड़ रुपये प्रस्तावित है। औद्योगिक नीतियों के तहत आगामी वर्ष में 20 हजार करोड़ रुपये का निवेश लाया जायेगा, जिससे राज्य के लगभग 15 हजार लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलने की संभावना है। औद्योगिक इकाइयों की देयता के निष्पादन एवं राज्य के औद्योगिक विकास और पूंजीनिवेश हेतु प्रक्षेत्रवार अधिसूचित नीति अंतर्गत स्थापित नये औद्योगिक इकाइयों को देय अनुदान/सब्सिडी के निमित्त राशि का प्रावधान किया गया है। सिंगल विंडो व्यवस्था के तहत निवेशकों को सभी प्रकार की आवश्यक सूचना उपलब्ध करायी जाती है एवं ऑनलाइन आवेदन की सुविधा उपलब्ध है। सिंगल विंडो के संचालन हेतु आगामी वित्तीय वर्ष के लिए राशि का प्रावधान किया गया है। आगामी वित्तीय वर्ष 2025-26 में जियाडा अंतर्गत बोकारो, गिरिडीह, कांड्रा, सिंदरी, आदित्यपुर, जसीडीह एवं देवीपुर औद्योगिक क्षेत्रों में आधारभूत संरचना से संबंधित योजनाएं कार्यान्वित की जायेगी। झारखंड तसर रेशम उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर रहा है।

बजट की 10 बड़ी घोषणाएं

1. शिक्षा के लिए

वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने शिक्षा के क्षेत्र में कई बड़े एलान किये हैं। प्रदेश में शिक्षा का इनोवेशन हब बनेगा। जमशेदपुर, गुमला तथा साहिबगंज में नये विश्वविद्यालय की स्थापना की जायेगी। राजधानी रांची, खूंटी, गिरिडीह, जमशेदपुर, धनबाद, देवघर और जामताड़ा में मेडिकल कालेज की स्थापना होगी। जमशेदपुर, पलामू, रांची, धनबाद और देवघर में स्कूल ऑफ बिजनेस एंड मास कम्यूनिकेशन की स्थापना का प्रस्ताव।

2. बाल बजट

झारखंड के बजट में पहली बार बाल बजट का एलान किया गया है। इसके लिए सरकार ने 9411.27 करोड़ रुपये का प्रविधान किया है।

3. कारोबारियों के लिए

बोकारो, गिरिडीह, कांड्रा, सिंदरी, आदित्यपुर, जसीडीह, देवीपुर औद्योगिक क्षेत्र में आधारभूत संरचना का विकास किया जायेगा।

4. किसानों के लिए

वित्त मंत्री ने मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना के लिए 255 करोड़ रुपये का एलान किया है। फसल बीमा के लिए 350 करोड़, किसानों को कृषि यंत्रों के लिए 140 करोड़, कृषि उपज भंडारण के लिए 259 करोड़, कृषि क्षेत्र का कुल बजट 4 हजार 587 करोड़ 66 लाख 24 हजार रुपये का एलान किया गया है। ग्रामीण विकास का कुल बजट 9841 करोड़ रुपये का है। जल संसाधन के लिए 2257 करोड़ 45 लाख, तालाब- डीप बोरिंग के लिए 203 करोड़, उद्यान विकास योजना के लिए 304 करोड़, पंचायती राज के लिए 2144 करोड़ 78 लाख 14 हजार रुपये का एलान किया गया है। चास, गिरिडीह, धनवार, कपाली, गुमला, लोहरदगा, विश्रामपुर, बरहरवा, श्रीवंशीधरनगर, छत्तरपुर एवं हरिहरगंज में जलापूर्ति परियोजनाओं का एलान किया गया है।

5. मंईयां सम्मान योजना के लिए

मंईयां सम्मान योजना के लिए बजट में बड़ा एलान किया गया है। बजट में मंईयां सम्मान योजना के लिए 13363 करोड़ रुपये आवंटित किये गये हैं।

6. पर्यटक स्थलों के लिए

वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने पर्यटन के क्षेत्र में झारखंड में असीम संभावनाओं को देखते हुए प्रमंडल स्तर पर पर्यटन सर्किट बनाने की घोषणा की। इससे राज्य में रोजगार के अवसर और राजस्व दोनों में इजाफा होगा।

7. परामर्शदातृ समिति की स्थापना

राज्य में टीएसी की तर्ज पर अनुसुचित जाति के लिए परामर्शदातृ समिति की स्थापना की जायेगी।

8. पेंशन के लिए

सर्वजन पेंशन योजना के तहत 3 हजार 850 करोड़ 66 लाख रुपये के बजट का प्रावधान किया गया है।

9. आंगनबाड़ी केंद्रों का निर्माण

प्रदेश में वर्ष 2025 में 2500 आंगनबाड़ी केंद्रों का निर्माण कराया जायेगा। इसके लिए 250 करोड़ 17 लाख रुपये आवंटित किये गये हैं।

10. कौशल विकास मिशन

10. कौशल विकास मिशन के लिए वित्तीय वर्ष 2025-26 में 585 करोड़ 99 लाख रुपये के बजट का प्रावधान किया गया है।

खाद्य, सार्वजनिक वितरण एवं उपभोक्ता मामले

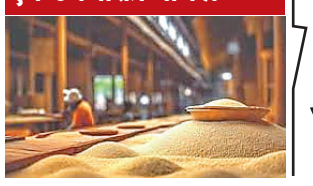

बजटः 2 हजार 863 करोड़ 49 लाख 22 हजार रुपये

धोती-साड़ी-लुंगी वितरण योजना के लिए 600 करोड़ का प्रावधान

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सराकर ने वर्ष 2025-26 में खाद्य, सार्वजनिक वितरण एवं उपभोक्ता मामले विभाग के लिए 2 हजार 863 करोड़ 49 लाख 22 हजार रुपये का बजट प्रस्तावित किया है। इनमें झारखंड राज्य खाद्य सुरक्षा योजना का सुगम संचालन एवं किसानों को ससमय उनके धान का मूल्य प्राप्ति को ध्यान में रखते हुए धान अधिप्राप्ति योजना अंतर्गत क्रय किये गये धान से प्राप्त चावल से झारखंड राज्य खाद्य सुरक्षा योजना को संचालित किये जाने के संबंध में कुल 100 करोड़ रुपये का बजटीय उपबंध प्रस्तावित किया गया है। शत-प्रतिशत राज्य योजना के अधीन दाल वितरण योजनांतर्गत लाभुकों को प्रतिमाह एक किलोग्राम चना दाल और नमक वितरण योजनांतर्गत लाभुकों को प्रतिमाह

एक किलोग्राम नमक वितरण सुनिश्चित करने हेतु वित्तीय वर्ष 2025-26 में 720 करोड़ रुपये का बजटीय उपबंध का प्रस्ताव है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना से अनाच्छादित गरीब परिवारों को झारखंड राज्य खाद्य सुरक्षा योजनांतर्गत आच्छादित कर अनाज वितरण के लिए 470 करोड़ रुपये का बजटीय उपबंध का प्रस्ताव है। शत-प्रतिशत राज्य योजना के अधीन संचालित धोती-साड़ी-लुंगी वितरण योजना अंतर्गत 600 करोड़ रुपये का बजटीय उपबंध का प्रस्ताव है। राज्य के किसानों के कृषि उत्पादों को न्यूनतम समर्थन मूल्य का उचित दर मिले, इसके लिए सरकार कटिबद्ध है। गठबंधन सरकार की घोषणा के अनुरूप किसानों को धान के साथ-साथ लाह, तसर, करंज, इमली, महुआ, चिरौंजी आदि के समर्थन मूल्य में वृद्धि की जायेगी।

ऊर्जा बजट

9 हजार 894 करोड़ 35 लाख 53 हजार रुपये

100 यूनिट बिजली मुफ्त योजना के लिए राशि का प्रावधना

रांची (आजाद सिपाही)। राज्य में गुणवत्तापूर्ण निर्बाध बिजली आपूर्ति करना सरकार का लक्ष्य है। राज्य के सभी घरेलू एवं शहरी उपभोक्ताओं को 200 यूनिट प्रतिमाह मुफ्त बिजली उपलब्ध करायी जा रही है। इस योजना का लाभ लगभग 35 लाख उपभोक्ता उठा रहे हैं। वित्तीय वर्ष 2025-26 में इस योजनांतर्गत 5 हजार 5 करोड़ 9 लाख रुपये व्यय करने का प्रस्ताव है। झारखंड संपूर्ण बिजली आच्छादन योजना के क्रियान्वयन से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण विद्युत उपलब्धता में वृद्धि हुई है। साथ ही कृषि उपभोक्ताओं हेतु नये विद्युत संरचना का निर्माण भी किया गया है। पतरातू में चार हजार मेगावाट के सुपर थर्मल पावर प्लांट स्थापित करने की प्रक्रिया चल रही है। मुख्यमंत्री उज्ज्वल झारखंड योजना अंतर्गत ग्रामीण एवं शहरी विद्युतीकरण हेतु वित्तीय वर्ष 2025-26 में 500 करोड़ रुपये का बजटीय उपबंध प्रस्तावित है। नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित पीएम-कुसुम योजना अंतर्गत राज्य में सिंचाई कार्य हेतु वित्तीय वर्ष 2025-26 में कांपोनेंट बी के तहत स्वीकृत 10,000 सोलर पंपसेट की आपूर्ति, अधिष्ठापन एवं पांच वर्ष के रख-रखाव की योजना के लिए राज्य अनुदान के रूप में 150 करोड़ के बजटीय उपबंध का प्रस्ताव है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में विद्युत संचरण संबंधी परियोजनाओं पर कार्य जारी रखने हेतु बजटीय उपबंध का प्रस्ताव किया गया है।

बेहद सामान्य और विरोधाभासी है यह बजट : सरयू राय

रांची (आजाद सिपाही)। जदयू के विधायक सरयू राय ने कहा कि बीते पांच वर्षों में जिस तरीके का बजट पेश होता आया है, यह वैसा ही बजट है। इसे बेहद सामान्य बजट कह सकते हैं। 450 रुपये में सिलेंडर देने का चुनावी वादा किया था, जिसका कोई जिक्र इसमें नहीं है। बजट का आकार कृत्रिम रूप से तो बढ़ा दिया गया है लेकिन मुझे नहीं लगता कि साल भर में सरकार 75 से 80 प्रतिशत धनराशि भी खर्च कर पायेगी। 50 साल के ऊपर वाले जो लोग हैं, उनके पेंशन की स्थिति क्या है, वह सर्वज्ञात है। मंईयां पर जोर है, पहले से जो पेंशन स्कीमें चल रही हैं, उनकी स्थिति को सुधारने के लिए कोई प्रयास नहीं दिखता। विरोधाभासी लगता है यह बजट।

देश-विदेश की खबरों के लिए क्लिक करें
www.azadsipahi.in

CCL सेन्ट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड
Fuelling Sustainable Growth "एक मिनिरत्न कम्पनी" (कोल इण्डिया लिमिटेड की एक सहायक कम्पनी)

सूचना

सामग्री, कार्यों एव सेवाओं के खरीद हेतु सीआईएल एवं इसकी अनुषंगी कंपनियो द्वारा जारी सभी निविदाएँ कोल इण्डिया लिमिटेड की वेबसाइट **www.coalindia.in/** संबंधित अनुषंगी कंपनी (सीसीएल, **www.centralcoalfields.in)** सीआईएल ई-प्रोक्योरमेंट पोर्टल **https://coalindiatenders.nic.in** एवं सेन्ट्रल पब्लिक प्रोक्योरमेंट पोर्टल **https://eprocure.gov.in** पर उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त जीईएम पोर्टल **https://gem.gov.in** के माध्यम से भी खरीद की जाती है।

झारखंड सरकार के बजट में सिर्फ आंकड़ों का खेल : दीपक प्रकाश

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद दीपक प्रकाश ने झारखंड सरकार के द्वारा पेश किये गये 2025-26 के बजट को सिर्फ आकार में बड़ा और आंकड़ों का खेल बताया है। इस बजट से राज्य की जनता को कुछ लाभ नहीं होने वाला है। झारखंड सरकार 2029 तक 10 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था का लक्ष्य रखा है लेकिन उसकी तैयारी का कोई रोडमैप नजर नहीं आया इस बजट में। पिछले बजट की तुलना में पूंजीगत व्यय में मात्र 7 हजार करोड़ की वृद्धि की गयी है जो ऊंट के मुंह में जीरा के समान है। राज्य में युवाओं को कैसे रोजगार उपलब्ध करायेगी यह सरकार इसका कोई विजन नहीं है। यहां कैसे उद्योग लगेंगे, इसकी कोई जानकारी नहीं मिली इस बजट में। सरकार ने स्वास्थ्य बजट में इस बार मात्र 1 प्रतिशत की वृद्धि की है इससे साफ झलकता है कि सरकार के विकास की योजना में स्वास्थ्य का कितना मायने रखता है। सरकार के पिछले बजट के वादों को यदि हम अध्ययन करेंगे तो पायेंगे कि उनका एक भी वादा धरातल पर नहीं उतरा है। अतः यह सरकार घोषणावीर सरकार है, सिर्फ और सिर्फ राज्य की जनता को ठगने और बरगलाने का काम करती है। अतः कुल मिलाकर कहें तो यह बजट अबुआ बजट नहीं बल्कि बबुआ बजट जरूर है।

यह बजट सिर्फ नाम का अबुआ बजट है : प्रदीप वर्मा

रांची (आजाद सिपाही)। राज्यसभा सांसद प्रदीप वर्मा ने हेमंत सरकार के बजट पर कड़ी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि यह बजट सिर्फ नाम का अबुआ बजट है। इससे गांव, गरीब किसान, मजदूर किसी का भी भला नहीं होने वाला है। सबसे खास बात है कि बजट में कुछ भी नयी घोषणा नहीं है। सरकार ने चुनाव पूर्व 450 रुपये में रसोई गैस देने, धान क्रय में एमएसपी बढ़ाने, हर जिले में मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेज खोलने, रोजगार देने समेत अन्य जो घोषणाएं की थीं, उनके लिए भी बजट में कोई प्रावधान नहीं किया गया है। कुल मिलाकर पूरे बजट में कहीं कोई विजन नहीं है।

बजट, गठबंधन सरकार की राजनीतिक मजबूरियों का प्रतीकः सुदेश

रांची (आजाद सिपाही)। आजसू सुप्रीमो सुदेश महतो ने कहा कि मुख्यमंत्री के वक्तव्य में जो बजट झलक रहा है, वह कहीं-कहीं गठबंधन सरकार की राजनीतिक मजबूरियों का प्रतीक लगता है। यह बजट राज्य की जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप नहीं है। इस बजट में न तो नौकरियों का कोई ठोस प्रावधान दिखता है, न ही रोजगार सृजन की कोई योजना। झारखंड, जो लेबर सप्लाई के मामले में अग्रणी राज्य माना जाता है, उसकी इस पहचान मिटाने का कोई प्रतिबिंब इस बजट में नहीं दिखायी देता है। वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर द्वारा पेश किये गये 1.45 लाख करोड़ रुपये के बजट (2025-26) में स्वाभिमान, स्वावलंबी विकास, नौकरी नीति और युवा नियोजन जैसे शब्दों का इस्तेमाल तो हुआ है, पर ये महज दिखावे या खानापूर्ति लगते हैं। राज्य की बड़ी युवा आबादी साल-दर-साल सरकारी आश्वासनों के भरोसे समय गंवाती जा रही है। उनके लिए इस बजट में कोई नई उम्मीद नहीं दिखती।

जनता को अनिश्चित और अंधकार की ओर रखने को मजबूर करने वाला बजट है : दीपक बंका

रांची (आजाद सिपाही)। भाजपा के प्रदेश कोषाध्यक्ष दीपक बंका ने कहा कि हेमंत सरकार के द्वारा 25-26 वित्तीय वर्ष के लिए बजट पेश की गयी जिसके तहत 145400 करोड़ रुपये का बजट प्रस्तुत किया गया जो कि पिछले साल के संशोधित अनुमानित बजट के आकार 130718 करोड रुपये बजट के तुलना में लगभग 11 प्रतिशत बड़ा है। स्थापना व्यय का आकार 43 प्रतिशत होना भी चिंताजनक है। सरकारी ऋणों की वसूली जहां 23-24 में 7276 करोड़ रही, वहीं वसूली 2024-25 में 380 करोड़ रुपये मात्र है और 25-26 में मात्र 247 करोड़, जो की सरकार की वित्तीय प्रबंधन की कमजोरी को दर्शाता है। सरकार के द्वारा 20254 करोड़ वेतन मद में अनुमानित व्यय है जबकि आधी रकम 10173 करोड़ पेंशन मद की देयता रहेगी। यह देयता क्रमशः बढ़ती जायेगी। इसके प्रबंधन और जोखिम पर कोई चर्चा नहीं की गयी। पेंशन सिंकिंग फंड में लगभग 750 करोड़ की आवंटन आसन्न देयता को पूर्ण नहीं कर पायेगी। सरकार बार-बार राजकोष के घाटा को कम करने की बात करती रही लेकिन यह घाटा जो 22-23 में 1.01 प्रतिशत था वह अब 2.02 प्रतिशत रहने का अनुमान है। उन्होंने कहा कि कुल मिलाकर सरकार जिस कल्याण या सामाजिक कल्याण के नाम पर मंईयां जैसी कई योजनाओं से लाभान्वित करने की बात की है, वहीं जनता को विकास से दूर रख कर, विकास की धीमी गति की ओर धकेल कर अनिश्चित और अंधकार की ओर रखने को मजबूर करने जैसी बात परिलक्षित हुई है। पूरे बजट के अध्ययन के उपरांत यह कहीं से भी एक प्रगतिशील बजट नहीं कहा जा सकता। कुल मिलाकर इस बजट से जनता बहुत ज्यादा आशान्वित नहीं हो सकती।

इस बजट से किसान और ग्रामीण सबसे अधिक निराशः रमेश सिंह

रांची (आजाद सिपाही)। भाजपा नेता रमेश सिंह ने कहा कि हेमंत सरकार का यह बजट राज्य की अर्थव्यवस्था को गति देने में विफल रहेगा। उन्होंने कहा कि बजट में किसानों और ग्रामीणों की उपेक्षा की गयी है, जो सबसे अधिक निराश करने वाली है। उन्होंने कहा कि 2030 तक राज्य की अर्थव्यवस्था को 10 लाख करोड़ तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है, लेकिन सरकार ने यह नहीं बताया है कि यह लक्ष्य कैसे हासिल किया जायेगा। झारखंड सरकार 15 प्रतिशत के दर से विकास दर प्राप्त करने में सफल होगी, इस बजट से किसान और ग्रामीण सबसे अधिक निराश हुए हैं, क्योंकि किसानों की ऋण माफी पर सरकार चुप है। उन्होंने कहा कि सरकार बजट की राशि को खर्च करने के बजाय सरेंडर करवा रही है जिससे सरकार को योजनाओं को धरातल पर उतरने में रुचि नहीं दिख रही।

जनता को आश्वासन और घोषणा वाला बजट : सन्नी टोप्पो

रांची (आजाद सिपाही)। मांडर विधानसभा क्षेत्र के भाजपा नेता सन्नी टोप्पो ने झारखंड सरकार द्वारा पेश किये गये बजट को आश्वासन और घोषणा वाला बजट बताया है। श्री टोप्पो ने कहा कि पिछले छह वर्षों से झारखंड की कांग्रेस, झामुमो और राजद गठबंधन की सरकार जनता के साथ सिर्फ धोखा कर रही है। यह आम बजट भी इस धोखे की एक कड़ी है। रोजगार, भ्रष्टाचार, पलायन, विकास जैसे मुद्दों पर यह सरकार पूरी तरह से नाकाम रही है। मजदूर, किसान, महिला सभी बेहाल हैं। इस सरकार के पास जनहित में काम करने की इच्छाशक्ति ही नहीं है। झूठे आश्वासनों के दम पर आयी यह सरकार, आम बजट के नाम पर पूरे झारखंड को धोखा देने का काम कर रही है। श्री टोप्पो ने कहा कि आदिवासी हितों की बात करने वाली इस सरकार के पास आदिवासियों के कल्याण के लिए कोई योजना ही नहीं है। इस सरकार ने अबुआ बजट के नाम पर एक बार फिर से झारखंड की जनता की आंखों में धूल झोंकने का काम किया है। श्री टोप्पो ने कहा कि एक तरफ केंद्र की मोदी सरकार की योजनाओं को धरातल पर उतारने में राज्य सरकार फेल हो चुकी है तो दूसरी तरफ केंद्र पर सिर्फ दोषारोपण कर रही है।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया अच्छे लोग, अच्छा बैंक — Union Bank of India Good people to bank with — भारत सरकार का उपक्रम A Govt. of India undertaking

वाहन नीलामी बिक्री सूचना

क्षेत्रीय कार्यालय, धनबाद

वाहन जिसका नाम एवं मॉडल निचे दिए गए शेड्यूल में उल्लेखित है, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के द्वारा नीचे दिए गए विवरण के अनुसार सार्वजनिक नीलामी किया जायेगा, उपरोक्त उद्देश्य के लिए अद्योहस्ताक्षरी को बैंक का अधिकृत अधिकारी नियुक्त किया गया है। संभवित खरीददारों से एतद द्वारा **"जहाँ है, जिस हालत में है और जो है के आधार पर"** नीचे उल्लेखित वाहनों की बिक्री हेतु मुहरबंद निविदाएं आमंत्रित किये जाते हैं।

क्र० सं०	शाखा एवं संपर्क	ऋणकर्ता	बकाया राशि	वाहन का प्रकार, निर्माण वर्ष एवं पंजीयन सं.	आरक्षित मुल्य एवं ईएमडी
01	GGPS 82924 39566	अंकित मित्तल	रु. 5,85,000/-	TATA PUNCH JH09BC2339, 2023	रु. 3,60,000.00 / रु. 36,000.00

नीलामी की तिथि/ समय : 19.03.2025, बुधवार अपराह्न 04:00 बजे
नीलामी स्थल : युनियन बैंक ऑफ इंडिया के संबंधित शाखा में।
बिड एवं ईएमडी जमा करने की अंतिम तिथि : 18.03.2025, मंगलवार अपराह्न 04:00 बजे से पहले
बीड बढ़ोत्तरी राशि : रु. 10,000.00
सफल बोलीदाता को बोली राशि का 25% (पच्चीस प्रातिशत), ईएमडी राशि घटाकर, जो अगले कार्य दिवस तक जमा करनी होगी और शेष राशि का भुगतान बैंकर्स चेक के रुप में नीलामी की तारीख से 15 दिनों के भीतर किया जाना है। किसी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक द्वारा जारी किए गए चेक/ IOI को 'शाखा प्रबंधक, युनियन बैंक ऑफ इंडिया, या संबंधित शाखा को RTGS/ NEFT के माध्यम से प्रेषित किया जाना है। अद्योहस्ताक्षरी किसी एक या सभी बोली को स्वीकार/अस्वीकार करने या बिना कोई कारण बताए नीलामी को स्थगित करने का अधकिार सुरक्षित रखता है।
बिक्री के विस्तृत नियम व शर्तों की जानकारी एवं वाहन निरीक्षण के लिये कृप्या अद्योहस्ताक्षरी से संपर्क करें।

प्राधिकृत अधिकारी
युनियन बैंक ऑफ इंडिया

दिनांक : 03.03.2025 । स्थान : धनबाद
त्रुटि के स्थिति में अंग्रेजी पाठ्य मान्य होगा ।

AFFIDAVIT

As per Affidavit Ref. No. 187 date 20.02.2025, I, BUDHWA MUNDA son of Naru Munda, resident of Village- Jorar Basti, P.S. Namkum, District- Ranchi (Jharkhand), do hereby solemnly affirm and declare as follows:-
1. That I am an Indian citizen by birth and resident of above mentioned address.
2. That my actual and correct name is BUDHWA MUNDA according to my Voter ID Card being ID No. BBD2597144.
3. That in my Aadhaar Card being UID No. 3505 5117 0315, my name is written as SUKRA MUNDA. 4. That in my Ration Card being Ration Card No. 202004828568, my name is written as BUDHWA MUNDA.
5. That this affidavit is made for the purpose of BUDHWA MUNDA and SUKRA MUNDA is same and one person i.e. myself. 6. That the contents of this affidavit are true and correct to the best of my knowledge and belief. Sworn and signed on this the 20 day of February, 2025 at Ranchi.

शपथ पत्र

शपथ पत्र के अनुसार क्र. सं. 641 दिनांक 21.12.2024 मैं वशिष्ट कुमार सिंह पुत्र स्वर्गीय मुनी सिंह, निवासी वार्ड नंबर 2, मेहदी नगर, हुसैनाबाद पलामू, थाना- हुसैनाबाद, जिला. पलामू, झारखण्ड - 822116, एतद्द्वारा निम्नानुसार पुष्टि एवं घोषणा करता हूँ की 1.- कि मैं जन्म से भारतीय नागरिक हूँ। 2. कि मैं अपने अंकित पते पर रह रहा हूँ। 3. मेरी बेटी के जन्म प्रमाण पत्र के अनुसार परी कुमारी सत्य और सही नाम है, लेकिन गलती से आधार कार्ड संख्या 6905 6404 4858 में बेटी का नाम सोन परी के रूप में अंकित हो गया। 4. मेरी पुत्री का नाम सोन परी के स्थान पर परी कुमारी करने हेतु आवश्यक संशोधन। 5. वह परी कुमारी और सोन परी दोनों का नाम एक है 6. यह कि मेरी पुत्री की जन्मतिथि 01.01.2010 है। 7. यह कि मेरे उपरोक्त कथन सत्य एवं सही हैं। 8. इसलिए यह शपथ पत्र मेरी बेटी के आधार कार्ड में नाम सुधार के लिए है।

शपथ पत्र

शपथ पत्र के अनुसार क्र. सं. 731 दिनांक 01.03.2025 मै प्रभाकर सिंह पुत्र जितेन्द्र सिंह, उम्र लगभग 24 वर्ष, हिन्दू धर्म , ग्राम भुसाई, पी.ओ. पी.एस. इचाक, जिला - हजारीबाग (झारखंड) का निवासी, एतत्द्वारा सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञान करता हूँ तथा निम्न प्रकार घोषित करता हूँ:-
1. कि मेरा आधार कार्ड संख्या 9211 4005 3272 प्रभाकर सिंह के नाम पर है जो सही है। 2. कि मेरा पैन कार्ड संख्या KUDPS8474M प्रभाकर सिंह के नाम पर है जो सही है। 3. कि बैंक ऑफ इंडिया, इचाक मोड़ शाखा, हजारीबाग का बचत बैंक खाता संख्या 493810510000538 प्रभाकर सिंह के स्थान पर प्रभाकर कुमार सिंह के नाम पर है। 4. कि प्रभाकर सिंह और प्रभाकर कुमार सिंह एक ही व्यक्ति हैं।
5. कि उक्त बैंक खाते में मेरा नाम प्रभाकर सिंह के रूप में सुधारा जाए।

किसी ने बजट को सराहा, तो कुछ ने निराशाजनक बताया

दीपक सिंह

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। हेमंत सरकार 2.0 का पहला बजट सोमवार को विधानसभा में पेश हुआ। वित मंत्री राधा कृष्ण किशोर ने एक लाख 45 हजार 400 करोड़ रुपये का बजट पेश किया। वित मंत्री ने बजट पेश करते हुए कहा कि यह बजट नए झारखंड का विकसित बजट है। इससे विकास के द्वार खुलेंगे और झारखंड तेजी से आगे बढ़ेगा। बजट के बाद राजनीतिक दलों के नेताओं ने अपनी अपनी प्रतिक्रिया दी है। जहां सता पक्ष के नेताओं ने बजट को सराहा है, वहीं विपक्ष ने इसे निराशाजनक बताया हैं।

निराशाजनक बजट, चुनावी वादे पर नहीं किया काम : मनीष जायसवाल

हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल ने बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह बजट अबुआ सरकार का राग अलापने वाली गठबंधन सरकार का झारखंड कि जनता को बबुआ बनाने वाला बजट है। इस बजट से झारखंडियों का कोई भला नहीं होना वाला है। उन्होंने कहा कि गठबंधन की हेमंत सरकार जिस चुनावी वादे के साथ सरकार में आई थी उस से झारखंड की जनता में इस बजट को लेकर एक आस जगी थी और लोगों को उम्मीद था कि बजट में चुनावी घोषणा पर सरकार अमल करेगी लेकिन इस बजट में बेरोजगार युवाओं के सपने को चकनाचूर कर दिया। मंईयां सम्मान की बात कहकर सरकार ने जो बजट का प्रावधान इस योजना के लिए किया है उसमें राज्य की आधी महिलाओं को भी यह लाभ नहीं मिल पायेगा।

युवाओं और महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है : मुन्ना सिंह

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह ने बजट को जनहितैषी और समावेशी करार दिया है। उन्होंने कहा कि यह बजट झारखंड के विकास को गति देने के साथ-साथ सभी वर्गों का ध्यान रखता है। सरकार ने इस बजट में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और बुनियादी ढांचे को प्राथमिकता दी है, जिससे झारखंड के आम नागरिकों को सीधा लाभ मिलेगा। किसानों को यंत्र खरीदने के लिए 144 करोड़ रूपया और संपूर्ण ग्रामीण विकास के लिए 9841 करोड़ रूपया का प्रावधान किया गया है, उन्होंने बजट की सराहना करते हुए कहा, यह बजट गरीबों, किसानों, युवाओं और महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

अबुआ राज का उन्नतिशील बजटः अमित साहू

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। फेडरेशन ऑफ झारखंड चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अमित साहू ने आम बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह बजट राज्य के सर्वांगीण विकास, समावेशिता और जनकल्याण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस बजट में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन, बुनियादी ढांचे और रोजगार सृजन पर विशेष ध्यान दिया गया है, जो राज्य और राज्यवासियों के उज्जवल भविष्य को सुनिश्चित करने के साथ ही विकास को नई रफ्तार भी प्रदान करेगा। सरकार की यह दूरदर्शी नीति आर्थिक सशक्तिकरण को नई ऊंचाइयों तक ले जाने में सहायक होगी। यह बजट हर वर्ग के विकास का संकल्प और प्रदेश को प्रगति के पथ पर आगे ले जाने का सशक्त माध्यम भी है। विकसित झारखंड की हमारी परिकल्पना को पूरा करने की दिशा में यह विकासोन्मुखी बजट अहम भूमिका अदा करेगा।

झारखंड के लोगों पर कर्ज का बोझ बढ़ेगाः गोबिंद बेदिया

आजाद सिपाही संवाददाता

बरकाकाना। झारखंड सरकार द्वारा पेश किये गये बजट पर मसमोहना निवासी सह समाजवादी पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष गोबिंद बेदिया ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा है कि झारखंड सरकार द्वारा पेश किया गया बजट झारखंड के लोगों को कर्जदार बनाने जैसा है। श्री बेदिया ने कहा कि पूर्व के बजट में पास किये गये योजनाओं को धरातल पर नहीं उतार पायी झारखंड सरकार। साथ ही पिछले बजट में पास राशि को खर्च न कर पाना और नए बजट में राशि बढ़ाना झारखंड के आदिवासी समाज सहित अन्य सभी लोगों के लिए हितकारी नहीं है। यह बजट आम लोगों के लिए नहीं बल्कि चुनिंदे लोगों को देख कर तैयार किया गया है।

बजट में किसानों की आमदनी बढ़ाने पर जोर : बटेश्वर

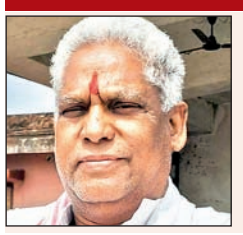

बरकट्ठा विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी बटेश्वर प्रसाद मेहता ने बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह बजट संतुलित है। महिला सशक्तिकरण और किसानों के आमदनी बढ़ाने पर जोर दिया गया है। मंईयां सम्मान योजना के लिए 13 हजार 363 करोड़ 35 लाख का बजटीय उपबंध किया गया है।

किसानों के हित का ध्यानः मनोहर राम

झामुमो वरिष्ठ नेता सह इचाक बीस सूत्री अध्यक्ष मनोहर राम ने बजट को संतुलित बताते हुए किसानों के लिए बजट बताया है। उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि इस बजट में किसानों को ध्यान में रखा गया है। किसानों को यंत्र खरीदने के लिए 144 करोड़ रूपया और संपूर्ण ग्रामीण विकास के लिए 9841 करोड़ रूपया का प्रावधान किया गया है।

झारखंड सरकार ने संतुलित बजट पेश किया: गणेश कुमार

सीपीआई एम के जिला सचिव गणेश कुमार सीटू ने झारखंड सरकार के बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि राज्य सरकार ने 1, 45, 400 करोड़ रूपया का बजट पेश किया है जो बीते वर्ष से 22000 करोड़ रूपया अधिक का बजट है। इस बजट से झारखंड का जीडीपी लगभग 8% बढ़ने की की उम्मीद है।

जनता के हर वर्ग का रखा गया ख्याल : विनोद

बजट को कांग्रेस के प्रदेश महासचिव विनोद कुशवाहा ने संतुलित करार दिया है। उन्होंने कहा कि यह बजट राज्य के किसानों, मजदूरों, युवाओं, महिलाओं और व्यापारियों के हितों को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

बजट जनता के साथ छलावा है: प्रदीप प्रसाद

हजारीबाग सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने राज्य सरकार द्वारा पेश किये गये बजट को विफल और दिशाहीन करार दिया है। उन्होंने कहा कि यह बजट राज्य की जनता को भ्रमित करने और खोखले वादों से गुमराह करने वाला है। यह बजट पूरी तरह से जमीनी सच्चाई से कटा हुआ है। इसमें ना तो राज्य के युवाओं के लिए कोई ठोस योजना है, ना महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण पर ध्यान दिया गया है और ना ही राज्य की कानून-व्यवस्था को सुधारने के लिए कोई ठोस नीति बनायी गयी है। सरकार केवल आंकड़ों की बाजीगरी कर जनता को गुमराह करने का प्रयास कर रही है।

निराशाजनक है राज्य सरकार का बजट खोखला साबित हुआ वादा : मनोज यादव

बरही (आजाद सिपाही)। झारखंड सरकार के बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए बरही विधायक मनोज कुमार यादव ने कहा कि निराशाजनक है राज्य की बजट। अंदर से खोखला साबित हुआ। रोजगार सृजन, किसानों के लिए समर्थन, स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार और चुनावी वादों को पूरा करने जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है। किसानों के लिए यह बजट निराशाजनक है। किसानों को उम्मीद थी कि सरकार उनकी आय बढ़ाने और कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए कुछ ठोस कदम उठाएगी। लेकिन बजट में किसानों के लिए कोई विशेष प्रावधान नहीं होने से वे निराश हैं। बजट में रोजगार सृजन के लिए पर्याप्त प्रावधान नहीं होने से युवाओं में निराशा है। बजट में स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए कोई विशेष प्रावधान नहीं होने से लोगों में निराशा है। बजट में चुनावी वादों को दूर रखा गया है। लोगों को उम्मीद थी कि सरकार अपने चुनावी वादों को पूरा करेगी। लेकिन बजट में चुनावी वादों को पूरा नहीं करने से लोगों में निराशा है।

युवाओं को रोजगार देने पर जोर दिया जाना चाहिए था : संजय पासवान

कोडरमा (आजाद सिपाही)। झारखंड बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए सीटू के राज्य सचिव संजय पासवान ने कहा कि वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए 1 लाख 45 हजार 400 करोड़ रुपये का बजट पेश किया है। बजट में हर क्षेत्र का ध्यान रखा गया है। इसलिए यह एक संतुलित बजट है, लेकिन बजट में रोजगार पर कोई विशेष चर्चा नहीं है। जबकि युवाओं को रोजगार देने के लिए लिए विशेष जोर दिया जाना चाहिए था। सर्वजन पेंशन योजना के तहत बुजुर्ग, विधवा और अनुसूचित जाति की 50 वर्ष से उपर की महिलाएं को सर्वजन पेंशन योजना के तहत मिलने वाली पेंशन को मंईयां योजना की तरह 2500 रुपये किया जाना चाहिए था। बजट में बिजनस स्कूल खोलने की घोषणा की गयी है, जो शिक्षा का निजीकरण की ओर इशारा करता है। जो गरीब छात्रों के हित में नहीं होगा। इसके लिए सरकार ने 9411.27 करोड़ रुपये का प्रविधान किया है, जो स्वागत योग्य है। बजट से आंगनबाड़ी सेविका सहायिका, स्वास्थ्य सहिया, विद्यालय रसोइया, जल सहिया को निराशा हांथ लगी है। केन्द्र सरकार ने तो अपनी बजट में इनके लिए कुछ नहीं किया, हेमंत सरकार से इन योजना कर्मियों को काफी उम्मीद थी कि, इनको न्यूनतम वेतन के दायरे में लाया जायेगा और मानदेय वृद्धि होगी।

सिर्फ घोषणाएं, अबुआ नहीं पिछुआ बजट है: डॉ नीरा

कोडरमा (आजाद सिपाही)। राज्य की हेमंत सरकार द्वारा आज विधानसभा में प्रस्तुत बजट में सिर्फ घोषणायें की गयी हैं और अपनी नाकामी छुपाने के लिए केंद्र सरकार पर दोष मढ़ने का काम किया है। कोडरमा विधायक डॉ नीरा यादव ने राज्य के बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह सरकार सिर्फ घोषणा करना जानती है। मंईयां योजना का क्या हाल हो रहा है, पूरा प्रदेश देख रहा है। पूरे राज्य में लूट और अफसरशाही हावी है। उन्होंने पिछले बजट का उल्लेख करते हुए कहा कि उसमें कहा गया था कि जनजातीय गावों में अखड़ा का निर्माण किया जाएगा तथा पारंपरिक वाद्य यंत्रों की आपूर्ति की जायेगी। राज्य में 19 डिग्री कॉलेज खोले जाने, चार महिला कॉलेज बीआइटी सिंदरी में स्टेट टेक्नोलाजी पार्क की स्थापना की घोषणा की गयी थी। हर जगह फ्लाई ओवर बनाये जाने का आश्वासन मिला था। ऋण माफी को 50 हजार से बढ़ाकर दो लाख करने और एनपीए खाता धारक किसानों को भी इस योजना के तहत शामिल किए जाने का एलान किया गया था, पर हुआ क्या? इस बार भी ना तो बजट में रोजी रोजगार की चिंता है और ना ही युवाओं का पलायन कैसे रुके, बुनियादी सुविधाओं का विकास कैसे हो, ना इसपर कोई प्रावधान है। स्वास्थ्य और शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए भी कुछ उपाय नहीं किये गये हैं। राज्य के ग्रामीण सड़कों की हालत खराब है, हर जगह पेयजल आपूर्ति की व्यवस्था नहीं हो पायी है, पर इनपर भी बजट में विशेष प्रावधान नहीं किया गया है। कुल मिलाकर जिस बजट को अबुआ बजट कहा गया है वह राज्य को और पीछे ले जाने वाला बजट है, यह अबुआ नहीं पिछुआ बजट है।

किसानों को आमदनी बढ़ाने का अवसर मिलेगा: रामधन

कोडरमा(आजाद सिपाही)। झारखण्ड की अबुआ बजट में कई नई योजनाओं और परियोजनाओं की घोषणा की गई, जो राज्य के विकास और नागरिकों के जीवन मे सुधार के लिए मील का पत्थर साबित होगी। झारखण्ड सरकार की अबुआ बजट झारखण्ड के विकास और प्रगति के लिए गेम चेंजर बजट है। उक्त बातें जिला परिषद अध्यक्ष सह राजद जिलाध्यक्ष रामधन यादव ने बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कही। श्री यादव ने कहा कि वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने शिक्षा क्षेत्र में इनोवेशन हब और पर्यटन स्थलों को टूरिस्ट सर्किट से जोड़ने को लेकर खास ऐलान किया। इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, वहीं प्रतिभावान छात्रों को झारखण्ड में ही तकनीकी तौर पर बेहतर कार्य करने लिए प्लेटफॉर्म मिलेगा। कृषि क्षेत्र और ग्रामीण विकास का कुल बजट 15 हजार करोड़ के करीब है, जो हेमन्त सरकार की गठबंधन सरकार की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती है। श्री यादव ने कहा कि कृषि और ग्रामीण विकास क्षेत्र में प्रावधान से किसानों को आमदनी बढ़ाने का अवसर मिलेगा। वहीं ग्रामीण विकास की योजनाओं को गांव और झारखंडी आमजनमानस को आत्मनिर्भर व समृद्ध बनाने में मददगार साबित होगी।

यह अबुआ बजट नहीं, ठगुवा बजट है : रौशन लाल चौधरी

आजाद सिपाही संवाददाता

बड़कागांव। बड़कागांव विधायक रोशन लाल चौधरी ने झारखंड में पेश हुए बजट को लेकर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा है कि यह बजट पूरी तरह से फ्लॉप है । यह अबूआ नहीं ठगुवा बजट है। इस बजट में ना ही आदिवासी ना मूलवासी ना युवा ना किसान वर्ग को ख्याल रखा गया है इस बजट में पूरी तरह से इन सभी वर्गों को बजट से वंचित रखा गया है । सरकार को ध्यान देना चाहिए कि मैया सम्मान निधि योजना के चक्कर मे झारखंड सरकार जनता पर और अतिरिक्त बोझ न डाल दे। पूर्व से ही झारखंड के कई योजनाओं का सही समय पर संचालन नहीं हो पा रहा है। उसे पर भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि झारखंड का आम जनमानस इस बजट से काफी उम्मीद रखता था परंतु यह बजट पेश होने के बाद झारखंड का आम जनमानस पूरी तरह से निराश हो गया है। राज्य के ग्रामीण सड़कों की हालत खराब है, हर जगह पेयजल आपूर्ति की व्यवस्था नहीं हो पायी है, पर इनपर भी बजट में विशेष प्रावधान नहीं किया गया है। यह बजट बिल्कुल ही दिशा विहीन बजट है यह झारखंड को आबाद नहीं बर्बाद करने वाला बजट है।

टाटीझरिया प्रखंड के जनप्रतिनिधियों ने बजट पर प्रतिक्रिया दी

टाटीझरिया(आजाद सिपाही)। झारखंड सरकार में वित्त मंत्री राधाकृष्ण मोहन ने सोमवार को बजट पेश किया। जिसे विकासोन्मुख, गरीब, किसान, और युवाओं को समर्पित बताया है। बजट के उपरांत टाटीझरिया प्रखंड के जनप्रतिनिधियों और समाजसेवीयो ने अलग-अलग प्रतिक्रिया दी है। किसी ने बजट को सराहा है तो किसी ने इसे नकारते हुए जनता की उम्मीदों को कुचलने वाला बताया है।

शिबू प्रसाद सोनी

कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष शिबू प्रसाद सोनी ने पेश किये गये बजट को विकासोन्मुख बजट और मील का पत्थर साबित होने वाला बताया है। कहा कि कृषि, स्वास्थ्य और शिक्षा को प्राथमिकता देकर सरकार ने सबों को एक साथ लेकर चलने का काम किया है और मंईयां योजना को ध्यान में रखते हुए बजट पेश किया गया है जो संतोष जनक है।

कैलाश पतिसिंह

भाजपा मंडल अध्यक्ष कैलाश पतिसिंह ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि यह बजट किसी भी तरह जनता के हित में नही है। सरकार सिर्फ जनता को घोषणा का झुनझुना पकड़ा रही है। और ठगने का काम किया है।

संतोष मंडल

भाजपा प्रखंड मंडल महामंत्री संतोष मंडल ने बजट को झारखंड कि साढ़े तीन करोड़ जनता कि उम्मीदों को कुचलने वाला बताया है। आम जनता के लिए बजट निराशाजनक है।

उपेंद्र पांडेय

महेश अग्रवाल

भाजपा के वरिष्ठ नेता उपेंद्र पांडेय और महेश अग्रवाल ने कहा कि यह सरकार का बजट लुभावन नहीं है किसी भी वर्ग के लोगों का ध्यान नहीं रखा गया है सरकार लॉलीपॉप दे रही है।

प्रविल प्रसाद

रवि वर्णवाल

भाजपा नेता प्रविल प्रसाद और रवि वर्णवाल ने कहा कि झारखंड सरकार का यह बजट पूर्णतः फैल साबित हुआ इससे न ही किसान और न ही गरीबों को भला होगा।

कांग्रेस नेता सुरेंद्र यादव ने बजट को सराहते हुए कहा कि बजट में सरकार की दूरदर्शिता झलक रही है। बजट में सभी वर्गों का ध्यान रखा गया है। झारखंड की जनता से किये गये चुनाव के पूर्व वायदों को गति देने की दिशा में यह बजट कारगर साबित होगा सभी वर्ग के लोगो को ध्यान में रख कर बजट पेश किया गया है , मैं सरकार को धन्यवाद देता हूं।

भाजपा के वरिष्ठ नेता मिथलेश कुमार पाठक ने बजट को निराशाजनक बताते हुए कहा कि इसमे न कुछ नया है और न ही आम जनता को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह सरकार काम पर नहीं बल्कि सिर्फ घोषणा पर विश्वास करती है।

झमुमो नेता जितेंद्र पासवान और इब्राहिम अंसारी ने कहा कि बजट अच्छा है और इससे राज्य के प्रगति को बढ़ावा मिलेगा। स्वास्थ्य और शिक्षा पर ध्यान देना सरकार की प्राथमिकता है। किसानों को मासिक सौ यूनिट बिजली मुफ्त देने की घोषणा भी अच्छी पहल है।

कोतरे में अवैध मुहानों को बंद कराने के लिए पुलिस एक्टिव मोड में

ब्लास्टिंग कर 143 अवैध मुहानों और 11 सुरंगों को किया गया बंद

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। अवैध खनन पर रोक को लेकर उपायुक्त चंदन कुमार द्वारा जिले के अलग-अलग क्षेत्र में अवैध मुहानों को चिन्हित कर उन्हें बंद करने का निर्देश दिया गया है। विगत दिनों में उपायुक्त चंदन कुमार, पुलिस अधीक्षक अजय कुमार, अनुमंडल पदाधिकारी अनुराग कुमार तिवारी, खनन पदाधिकारी निशांत अभिषेक सहित अन्य अधिकारियों द्वारा मांडू प्रखंड अंतर्गत बसंतपुर क्षेत्र के कोतरे में विभिन्न अवैध मुहानों को चिन्हित किया गया था। इसी क्रम में शनिवार से चिन्हित अवैध मुहानों को बंद करने का कार्य प्रारंभ किया गया था। जो सोमवार को 2625 किलोग्राम ब्लास्टिंग सामग्री के उपयोग से ब्लास्टिंग कर कुल 143 अवैध मुहानों और 11 सुरंगों को बंद किया गया। वहीं रविवार को 21 अवैध मुहानों व 2 सुरंगों को बंद करने का कार्य किया गया था। जिले के अन्य क्षेत्रों में भी अवैध मुहानों को बंद करने हेतु पदाधिकारियों द्वारा सर्च अभियान चलाकर स्थल चिन्हित किया जा रहा है।

कल्याणी महिला संघ का अधिवेशन 5 को

आजाद सिपाही संवाददाता

गोला। कल्याणी महिला संघ का 16वां वार्षिक अधिवेशन 5मार्च को तिरला मोड़ के समीप में मनाया जायेगा। कार्यक्रम में पद यात्रा, सखी स्वागत, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पारंपरिक विदाई का आयोजन किया गया है। संघ के सरिता देवी ने बताया कि महिलाओं को सशक्त और समृद्ध बनाने के लिए कल्याणी महिला संघ लगातार प्रयासरत है। इसी कड़ी में प्रत्येक वर्ष अधिवेशन का आयोजन किया जाता है। उन्होंने क्षेत्र के सभी महिलाओं को कार्यक्रम में भाग लेने की अपील की है।

सांडी में राम नाम महायज्ञ को लेकर निकली कलश यात्रा

आजाद सिपाही संवाददाता

कुजू। श्री श्री राम नाम प्राण प्रतिष्ठा महायज्ञ को लेकर मनमोहन नगर साण्डी से भव्य कलश यात्रा निकाली गई। कलश यात्रा मंडप परिसर से देवी देवताओं के जयघोष के साथ प्राचीन शिव मंदिर टूटी झरना पहुंची। जहां यज्ञाचार्य शशिकांत मिश्रा और उनके सहयोगी आलोक शुक्ला, देवेंद्र द्विवेदी, प्रांजुल शुक्ला, दीपक द्विवेदी द्वारा यजमान बने अरुण तिवारी, भास्कर सिंह, राहुल सिंह, रूपेश कुमार सिंह, भोला साव, राकेश सिंह सपत्नीक को वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विधिवत पूजार्चना कराया गया। तत्पश्चात गाजे बाजे के साथ 551 कलशधारी अपने सिर पर कलश में पवित्र जलभर मंदिर से रवाना हुए। वहीं, देर संध्या वृन्दावन के कथावाचक रुद्र कृष्ण जी महाराज ने कथा की। कलश यात्रा में प्रेम प्रजापति, नीरज झा, मुंशी मांझी, राजेश कुमार सिन्हा,राम बहादुर सिंह, गणेश मालाकार, गया प्रसाद राय, कन्हैया सिंह, संजय सिंह, प्रवीण, राजेंद्र सिन्हा, डॉ एसके सिंह,सत्येंद्र प्रसाद, संजय शुक्ला, केदार पटेल समेत काफी संख्या में श्रद्धालु शामिल रहे।

ट्रैक्टर की चपेट में आने से परीक्षार्थी की मौत, एक घायल

अवैध बालू तस्करी रोकने में प्रशासन नाकामः ग्रामीण

आजाद सिपाही संवाददाता

बरकट्ठा। प्रखंड क्षेत्र के ग्राम ढ़ोढ़िया नदी के समीप बालू लदे ट्रैक्टर के चपेट में लेने से मैट्रिक परीक्षा देने जा रहे छात्र की मौत हो गयी। जबकि एक छात्र गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना सोमवार की सुबह 9.15 बजे के करीब परीक्षा देने बरकट्ठा आ रहे छात्र की मोटर साइकिल को ट्रैक्टर के चपेट में लेने से हुआ। हादसे में ग्राम सिमारिया चुगलामो निवासी रोहित कुमार 18 वर्ष पिता अर्जुन महतो की मौके पर ही मौत हो गयी। जबकि बाइक पर सवार चचेरा भाई ग्राम बनपुरा चुगलामो निवासी नीतीश कुमार 18 वर्ष पिता मंटू महतो गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे तुरंत ग्रामीणों के सहयोग से इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरकट्ठा ले जाकर भर्ती कराया गया। मामले की सूचना मिलने पर बरकट्ठा जिप सदस्य कुमकुम देवी और मृतक के परिजन रोते-बिलखते घटना स्थल पर पहुंचे। घटना के बाद अवैध बालू लदा ट्रैक्टर भागने में सफल हो गया। ग्रामीणों ने बरकट्ठा पीपचो मार्ग को जाम कर दिया। सूचना मिलने पर बरही एसडीपीओ अजीत कुमार बिमल, बरकट्ठा इंस्पेक्टर इमदाद अंसारी, बरकट्ठा थाना प्रभारी राजेश कुमार भोगता घटना स्थल पर पहुंचे। लोगों को समझा बुझाकर कर जाम छोडवाने का प्रयास किया लेकिन लोग मुआवजा की मांग पर अडे रहे। छः घंटे बीत जाने के बाद भी परिजन शव के साथ सड़क पर डटे रहे। समाचार भेजे जाने तक ट्रैक्टर मालिक के द्वारा संतोषजनक उत्तर नहीं दिया जा रहा है जिससे जाम लगा रहा।

ग्रामीणों का आरोप है कि प्रतिदिन बरकंनगांगों एवं बराकर घाट से सैकड़ों की संख्या में ट्रैक्टर और टीपर गाड़ी से अवैध बालू की तस्करी धड़ल्ले से बेरोकटोक किया जा रहा है। बालू लदीं गाडियां प्रतिदिन बरकट्ठा व गोरहर थाना क्षेत्र से होकर गुजरती है। जिसे पुलिस प्रशासन अंकुश लगाने में पूरी तरह से नाकाम साबित रही है। जिसमें सबसे सुरक्षित जोन गोरहर थाना क्षेत्र के बंडासिंघा मोड़ इचाक-खैरा मार्ग होकर सभी गाडियां हजारीबाग और इचाक की ओर जाती है।

बजट पर गढ़वा और गुमला में जनप्रतिनिधियों की मिली-जुली प्रतिक्रिया

यह बजट झारखंडवासियों के साथ छलावा है : रितेश

गढ़वा। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी रितेश चौबे ने कहा है कि झामुमो सरकार का अबुआ बजट झारखंडवासियों के साथ छलावा है। अबुआ बजट जनविरोधी है अबुआ बजट के नाम पर जनता को लालीपाप मिला है बजट में युवा महिला किसान व्यापारी अनुबंधकर्मी सबको धोखा मिला है उन्होंने कहा कि बजट बनाने वाले लोगों ने गरीब एवं मध्यम वर्ग के उत्थान का ख्याल नहीं रखा। अबुआ बजट झारखंड को निराश करने वाला है अबुआ बजट में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, रोजगार, ग्रामीण विकास महिला सशक्तिकरण सहित अन्य किसी भी क्षेत्र में बेहतर बजट नहीं लाया गया है। अबुआ बजट से जनता को धोखा मिला है। उन्होंने कहा कि झामुमो सरकार ने अबुआ बजट के नाम पर जनता को ठगने का काम किया है। अबुआ बजट से एसटी एससी ओबीसी सामान्य अल्पसंख्यक किसी वर्ग को कोई लाभ नहीं मिला। उन्होंने कहा कि झामुमो सरकार में बैठे लोग अबुआ बजट के नाम पर अपनी खुद की पीथ थपथपा रहे हैं। बजट में छोटे व्यापारी को कोई लाभ नहीं मिला। टैक्स में भी कोई छुट नहीं दिया गया।

यह बजट सिर्फ लॉली पॉप : उमेश कश्यप

गढ़वा। भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष उमेश कश्यप ने कहा है कि यह झारखंड सरकार द्वारा जन विरोधी बजट लाया गया है इससे युवा, महिला और अनुबंध कर्मी किसी के बारे में नहीं सोचा गया। यह सरकार सिर्फ लॉली पॉप दिखाने का कार्य की है। यह सरकार ने अपने चुनावी वादो से भी मुकरने का कार्य किया है।

बजट में युवाओं और विद्यार्थियों के लिए कुछ नहीं : प्रिंस

कांडी। झारखंड सरकार द्वारा पेश किये गये बजट को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य प्रिंस कुमार सिंह ने अपनी निराशा व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि इस बजट में युवाओं और विद्यार्थियों को निराशा ही हाथ लगी है, जबकि चुनाव के दौरान शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में बड़े-बड़े सुधार के वादे किये गये थे। प्रिंस कुमार सिंह ने कहा कि सरकार का दावा था कि एक साल में 5 लाख नौकरियां दी जायेंगी, लेकिन बजट में कहीं भी रोजगार के मुद्दे पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। यही नहीं, शिक्षा के क्षेत्र में भी सरकार ने गंभीरता से कोई कदम नहीं उठाए हैं।

किसी ने सराहा, तो किसी ने की बजट की आलोचना

आजाद सिपाही संवाददाता

संतोष गुप्ता गुड्डू

हिमांशु केशरी

कलीम अख्तर कल्लन

संदीप कुमार

गुमला। बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कांग्रेस के जिला महासचिव संतोष गुप्ता गुड्डू ने कहा कि गठबंधन की सरकार ने झारखंड में इस बार एक अनोखा बजट पेश किया है। इस बजट में गरीबों का पूरा ध्यान रखा गया है। हर तबके को राहत पहुंचाने का प्रयास किया गया है। विशेष कर मंईयां सम्मान योजना का बजट लाकर झारखंड की महिलाओं के संशय को सरकार ने दूर कर दिया है। मंईयां सम्मान योजना को लेकर विपक्ष द्वारा फैलायी गयी अफवाह पर विराम लग गया है। झारखंड मुक्ति मोर्चा के अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष नगर परिषद के उपाध्यक्ष कलीम अख्तर कल्लन ने कहा कि सरकार ने यह बजट काफी सोच समझा कर तैयार किया है। बजट को गौर करने पर सरकार और उनके सलाहकारों के सूझबूझ का पता चलता है। बजट में हर तबके के लिए कुछ ना कुछ राहत देने का प्रयास किया गया है।

वहीं गुमला चेंबर ऑफ कॉमर्स के पूर्व अध्यक्ष हिमांशु केशरी ने कहा कि झारखंड सरकार द्वारा आज जो बजट पेश किया गया है उसमें व्यवसायी समुदाय के लिए कुछ खास नहीं मिला, उन्हें नजर अंदाज करते हुए बजट पेश किया गया है।। वहीं गुमला के नागफेनी अंबाघाघ को पर्यटकीय विकास हेतु स्वीकृति स्वागतयोग्य है। परंतु गुमला के अन्य पर्यटक स्थलों यथा पालकोट, बाबा टांगीनाथ धाम, नवरत्न गढ़ किला, आंजन धाम, आदि को भी नजर अंदाज किया गया। भाजपा युवा जिला अध्यक्ष संदीप प्रसाद ने कहा कि इस बजट से झारखंड के युवाओं को काफी निराश हुईं हैं। अपने चुनावी भाषणों में हेमंत सोरेन और झारखंड मुक्ति मोर्चा ने जो घोषणा पत्र जनता के बीच लाया था उन वादों और घोषणाओं का जिक्र बजट में कहीं नहीं किया गया है। राज्य के युवाओं का वोट लेकर सरकार बनी लेकिन युवाओं के रोजगार और रोजगार के लिए नियोजन नीति पर बजट में कोई चर्चा नहीं की गयी।

मुखिया संघ के अध्यक्ष चुने गये मूंगा साह

आजाद सिपाही संवाददाता

केतार। सोमवार को बलिगढ़ पंचायत सचिवालय में परती कुशवानी पंचायत मुखिया मुनी देवी के अध्यक्षता में सभी मुखिया की बैठक आहूत किया गया। जिसमें प्रमुख प्रतिनिधि सुरेंद्र प्रसाद मुखिया मुनी देवी, मुखिया प्रतिनिधि मंनोरंजन प्रसाद गुप्ता, मुखिया प्रतिनिधि सीता राम शर्मा, मूंगा साह उपस्थित हुए। इस बैठक में मुखिया संघ का अध्यक्ष का चुनाव किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से मुकुंदपुर पंचायत के मुखिया मूंगा साह को मुखिया संघ का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। इस अवसर पर सभी मुखिया ने एक स्वर में कहा कि तीन वर्ष बीत जाने के बावजूद पहले से निर्वाचित मुखिया संघ के अध्यक्ष प्रमोद कुमार के द्वारा किसी मुखिया के प्रति खरा नहीं उतरे। उसे लेकर एक घंटा बिचार विमर्श हुआ, जिसमें प्रस्ताव में लाकर सर्वसमिति से मुकुंदपुर पंचायत के मुखिया मुंगा साह को मुखिया संघ का अध्यक्ष बनाया गया।

अघोराचार्य बाबा किना राम जी की प्रतिमा का होगा अनावरण

आजाद सिपाही संवाददाता

सगमा। प्रखंड के मकरी गांव स्थित श्री सर्वेश्वरी समूह आश्रम में आगामी सात मार्च स्थापना दिवस में शामिल होंगे पूज्य अघोरेस्वर पुज्यपाद बाबा संभव रामजी अघोरा चार्य बाबा किना रामजी के प्रतिमा का होगा अनावरण।

उक्त जानकारी देते हुए सर्वेश्वरी समूह सखा मकरी कुटिया के व्यवस्थापक बिहारी राम ने बताया की उक्त अवसर पर तीन दिवसीय कार्यक्रम रखा गया है, जिसमें छः मार्च को सुबह से साफ सफाई सात मार्च को आश्रम परिसर में स्थापित श्री यंत्रम शिव लिंग तथा बड़े बाबा पूज्य अघोरेस्वर भगवान राम के समीप पूजा पाठ के बाद अघोराचार्य संत किना रामजी के प्रतिमा का अनावरण पूज्य पाद बाबा संभव राम जी के कर कमलों द्वारा किया जायेगा, तत्पश्चात अष्टयाम संकीर्तन प्रारंभ होगा। इस मौके पर मेगा स्वस्थ शिविर का आयोजन होगा, जिसमें निःशुल्क इलाज के साथ दावा वितरण होगा साथ ही शुच्छम प्रसाद वितरण एवं विशाल भंडारा का आयोजन किया जायेगा। आठ मार्च को अष्ट्याम संकीर्तन का समापन सफल योनि पाठ के बाद दोपहर में प्रसाद वितरण तथा लघु गोष्टी का आयोजन होगा।

एफजेसीसीआइ के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष से मिलने पहुंचे चेंबर के कई पदाधिकारी

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। गुमला चेम्बर ऑफ कॉमर्स गुमला के पूर्व अध्यक्ष सह एफजेसीसीआई के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष रमेश कुमार चीनी के अस्वस्थ होने की खबर सुनकर गुमला चेंबर के अध्यक्ष राजेश सिंह, पूर्व अध्यक्ष मो सब्बू, हिमांशु केशरी, दिनेश अग्रवाल, व्यवसायी मनोज सिंह आदि ने उनके गुमला स्थित आवास में जाकर उनका कुशल क्षेम जाना। गौरतलब है कि फरवरी माह में अचानक उनके छाती में दर्द होने की शिकायत पर आनन फानन हैदराबाद जाकर अपने स्वस्थ की जांच करवाई, जहां उनके हृदय में ब्लॉकेज की जानकारी मिली। वहीं त्वरित इलाज करवाते हुए उन्होंने वहाँ के डॉक्टर के कहने पर अपने हृदय का ऑपरेशन करवाया। फिलहाल वे गुमला वापस आ चुके हैं। वह डॉक्टर के द्वारा सुझाई गयी दिशा निर्देश के अनुसार परहेज करते हुए अपने आवास में आराम कर रहे हैं। कुशल क्षेम जानने गये चेंबर के अध्यक्ष व पूर्व अध्यक्षों ने जल्द ही उनकी स्वस्थ्य ठीक होने की कामना करते हुए अपने बीच उनका मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु विश्वास जतायी है। रमेश चीनी ने बताया कि अब पहले से वे खुद को ज्यादा फिट महसूस कर रहें हैं। उन्होंने कहा कि माता रानी तथा सभी छोटे बड़ों के आशीर्वाद और प्रार्थना से ही वे सबों के बीच स्वस्थ हैं।

लायंस क्लब ने किया आंखों की जांच का शिविर और वनभोज का आयोजन

गुमला (आजाद सिपाही)। लायन्स क्लब गुमला के सौजन्य से रविवार को लायंस क्लब के परिसर मेंऑपरेशन किये गये मरीजों के आगे की कार्रवाई आंखों की जांच के उपरांत की गयी। गुमला जिला अंतर्गत रायडीह प्रखंड के हीरा मे भी बीपी, ब्लड, सुगर और आंखों की जांच हेतु बिनय कुमार लाल के फार्महाउस में शिविर का अयोजन किया गया। विंदवासनी मेडिकल हांल गुमला तथा बनवासी कल्याण केन्द्र गुमला के सहयोग से आस पास के गांव के 65 लोगों ने पंजीकरण करा कर जांच कराए। मौके पर सचिव अशोक कुमार जायसवाल पूर्व अध्यक्ष शंकर लाल जाजोदिया, पीआरवो योगेंद्र प्रसाद साहू, कोषाध्यक्ष अनिल कुमार अग्रवाल, पवन कुमार अग्रवाल, विजय गरोदिया, मनमोहन केसरी, अरुण केसरी, संजय अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

अस्थायी लोक अदालत का आयोजन

गुमला (आजाद सिपाही)। इंडियन बैंक गुमला में स्थायी लोक अदालत के द्वारा विशेष शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें स्थायी लोक अदालत के कार्यकारी अध्यक्ष शिव कुमार वर्चुअल उपस्थित रहे। अस्थाई लोक अदालत के सदस्य शंभू सिंह ने ऋण धारकों से कहा कि जो भी ऋण धारक हैं किसान क्रेडिट कार्ड का हो या अन्य छोटे व्यापार संबंधी हो वह अपने पुराने ऋण का चुकता करें और नए ऋण लेकर अपना व्यापार अच्छे ढंग से करें। उन्होंने कहा कि यदि आपका लेन-देन बैंक के साथ अच्छा बना रहेगा तो हर समय बैंक आपकी मदद के लिए तत्पर रहेगी और ऐसे में आप बैंक के सहयोग से कृषि के क्षेत्र में या छोटे-मोटे व्यापार के क्षेत्र में अच्छे प्रगति कर पायेंगे। इसलिए पुराने ऋण को चुकता कर नया ऋण लेकर अपना कार्य को ढंग से चलाएं। किसी भी तरह का परेशानी होने पर हमारे अस्थाई लोक अदालत जो प्रत्येक कार्य दिवस में खुला रहता है वहां निशुल्क अपना मामला दर्ज कर सकते हैं। जहां आपका त्वरित सुनवाई होगी। उन्होंने आगे कहा कि 8 मार्च को राष्ट्रीय लोक अदालत जो सिविल कोर्ट परिसर गुमला में आयोजित किया जायेगा, उसमें भी आप अपने मामले का निपटारा कर सकते हैं। इस अवसर पर स्थायी लोक अदालत के सदस्य राजकुमार गुप्ता, शंभू सिंह बैंक प्रबंधक अमित तिग्गा कर्मचारी जीतू नायक आदि उपस्थित थे।

घाघरा: मुख्यमंत्री दाल भात केंद्र में रखे चावल सहित कई सामान की चोरी

घाघरा (आजाद सिपाही)। घाघरा के ब्लॉक चौक स्थित मुख्यमंत्री दाल भात केंद्र में रखे चावल सहित कई सामान की चोरी कर ली। इस संबंध में पीड़ित संचालक मानती उरांव ने कहा कि सूरजमुखी महिला मंडल द्वारा मुख्यमंत्री दाल भात योजना का संचालन होता है। हर दिन की भांति केंद्र बंद कर शाम को घर चली गयी। वहीं सोमवार को जब सुबह केंद्र खोलने पहुंची, तो देखा कि केंद्र का ताला टूटा हुआ है। और केंद्र में रखे 50 किलोग्राम चावल, गैस सिलेंडर, चूल्हा, डेगची बर्तन की चोरी हो गया है। इस संबंध में घाघरा थाना में लिखित आवेदन दिया गया है।

मारपीट में एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल

डंडई (आजाद सिपाही)। डंडई थाना क्षेत्र के रारो गांव निवासी शिवधर यादव को रविवार की रात्रि करीब 10 बजे उसके गांव के ही विकाश यादव पिता उदय यादव ने मारपीट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। उसे इलाज के लिए गढ़वा सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना के संबंध में शिवधर यादव ने बताया कि गांव के ही विकास यादव से किसी बात को लेकर बातचीत हो रही थी, तभी अचानक विकास यादव भड़क गया और लाठी-डंडे से हमला कर दिया। आरोप है कि विकास यादव के बाबा ने भी मारपीट में उसका साथ दिया, जिससे शिवधर यादव गंभीर रूप से घायल हो गये। मारपीट के बाद आरोपी मौके से फरार हो गये। परिजनों को घटना की सूचना मिलने पर वे मौके पर पहुंचे और घायल को मेराल अस्पताल में भर्ती कराया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने गंभीर अवस्था को देखते हुए गढ़वा रेफर कर दिया। डॉक्टरों के अनुसार, शिवधर यादव के माथे में गंभीर चोट लगी है, और उनका इलाज जारी है। मामले में थाना प्रभारी अवधेश कुमार यादव ने बताया कि मारपीट के मामले में प्राथमिकी दर्ज हो गयी है। फिलहाल आरोपी फरार है उसे पकड़ने के लिए छापेमारी जारी है।

सदर एसडीओ के निर्देश पर राजकीय मध्य विद्यालय कांडी की भूमि का हुआ सीमांकन

आजाद सिपाही संवाददाता

कांडी। सदर एसडीओ संजय कुमार के निर्देश पर प्रखंड के राजकीय मध्य विद्यालय कांडी की भूमि का सीमांकन सोमवार को किया गया। गढ़वा अंचल के अमीन कृष्णा राम ने भूमि का सीमांकन किया गया। विद्यालय के पश्चिम तरफ चाहरदीवारी का निर्माण स्कूल भवन के सटाकर किया जा रहा है। जिसको लेकर स्थानीय लोग व स्कूल प्रबंधन ने इसकी शिकायत एसडीओ से करते हुए मापी कराने की मांग किया था, जिसके बाद आज सीमांकन का कार्य किया गया। मालूम हो कि मध्य विद्यालय कांडी का कुल भूमि 60 डिसमिल सरकारी दस्तावेजों में अंकित है। हाल सर्वे के खाता संख्या 238 के प्लॉट संख्या 29 में 2 डिसमिल, प्लॉट 30 में 17 डिसमिल व प्लॉट 31 में 41 डिसमिल स्कूल का जमीन दर्ज है। कांडी पंचायत के पूर्व मुखिया व भाजपा नेता विनोद प्रसाद ने कहा कि आज की स्कूल के भूमि का सीमांकन जो किया गया है, वह स्पस्ट नहीं है। मापी में पारदर्शिता नही बरती गयी है। कांडी की जनता को व स्कूल प्रबंधन को स्कूल का 60 डिसमिल अलग कर दिया जाये। जब तक 60 डिसमिल जमीन विद्यालय को सुपुर्द नहीं किया जायेगा, यहां की जनता चुप नहीं बैठेगी।

इस विषय में अंचलाधिकारी राकेश सहाय ने बताया कि मध्य विद्यालय कांडी की भूमि का सीमांकन का कार्य पूरा कर लिया गया है। सीमांकन के बाद विद्यालय प्रबंधन को इसकी जानकारी दे दी गयी है कि आपका जमीन कहां तक है।

छात्रों को सड़क सुरक्षा के बारे में दी गयी जानकारी

गढ़वा (आजाद सिपाही)। जिला परिवहन पदाधिकारी, गढ़वा के निदेर्शानुसार जाटा स्थित हाई स्कूल मे छात्रों का काउंसलिंग कर सड़क सुरक्षा एवं यातायात नियमों से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्यों से अवगत कराया गया। जैसे- बाइक चलाने वक्त हेलमेट का प्रयोग जरूर करे, कभी भी नाबालिक को वाहन चलाने की अनुमति ना दें, कभी भी गति सीमा को पार ना करे, रोड पर कभी भी क्रोधित होकर वाहन का प्रयोग न करें, वाहन चलानें वक्त गतिसीमा से बाहर ना जाए आदि। हिट एंड रन एवं गुड सेमिरिटन योजना के बारे में भी जागरूक किया गया और बताया गया कि सड़क पर वाहन चलाते समय ट्रैफिक नियमों का पालन जरूर करें। लोगों के बीच रोड़ सेफ्टी हैंडबुक और रोड़ सेफ्टी पंपलेट का भी वितरण किया गया। कार्यक्रम के दौरान जिला सड़क सुरक्षा प्रबंधन संजय बैठा एवं परिवहन कार्यालय के अन्य पदाधिकारी, कर्मचारी आदि उपस्थित थे।

एक व्यक्ति ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

घाघरा (आजाद सिपाही)। घाघरा थाना के जोकारी गुटूवा निवासी लाल उरांव 50 वर्ष ने अपने घर के कंडी में रस्सी के सहारे फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।वही पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम हेतु गुमला भेज दिया। मृतक के भाई रहमन उरांव ने बताया कि उसका छोटा भाई लाल उरांव का मानसिक स्थिति ठीक नहीं था। मृतक की पत्नी ने रविवार को अपराह्न लगभग 3 बजे दरवाजा खोला तो देखा कि उसके पति लाल उरांव घर के कंडी में ही रस्सी के सहारे फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। आनन फनन में इसकी सूचना मृतक के बड़े भाई रहमन को दी। इसके बाद पत्नी ने रस्सी को काटकर शव को नीचे उतारा। इसकी सूचना घाघरा थाना को दिया गया और घाघरा पुलिस घटनास्थल पर पहुंच शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए गुमला अस्पताल भेजा गया।

रायडीह ब्लॉक के नकटीझरिया गांव में पहुंची सोलर पैनल से बिजली

आजाद सिपाही ने लगातार प्रकाशित की थी नकटीझरिया की समस्याओं से संबंधित खबरें

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। आजाद सिपाही में लगातार खबर प्रकाशित होने के बाद उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी ने रायडीह प्रखंड के नकटीझरिया गांव का दौरा किया था और अखबार आजाद सिपाही में छपी खबरों के आधार पर वहां की समस्याओं से रूबरू हुए थे। उसके बाद नकटीझरिया जिला पदाधिकारी की नजर में आ गया और अब वहां धीरे-धीरे समस्याओं का समाधान होने लगा है। इसी क्रम में जिला प्रशासन,गुमला के पहल पर नकटिझरिया में सोलर पैनल लगवाया गया है। यह सोलर पैनल 25 केवी का है। जिससे कि गांव के दो टोले के कुल 40 घरों के लोग अब बिजली की सुविधा ले सकेंगे। यह गांव सुदूर इलाके में होने के कारण यहां तक बिजली की सुविधा अबतक नहीं पहुंच सकी थी। किंतु उपायुक्त की पहल पर नकटिझरिया गांव में सोलर पैनल लगवा कर ग्रामीणों को बिजली की सुविधा दी गई। सोलर पैनल लगाने से गांवों में बिजली की समस्या दूर होगी और ग्रामीणों को आर्थिक रूप से भी फायदा होगा है। ग्रामीणों का कहना है कि बिजली के बिना बहुत से काम नहीं हो पाते थे। लेकिन अब बिजली आने से हमें खेती - बारी में भी काफी मदद मिलेगी। साथ ही साथ बिजली से ग्रामीण आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा।

गढ़वा में दिनदहाड़े ढाई लाख की लूट, एक लुटेरा पकड़ा गया

पीड़ित ने बहादुरी का परिचय देते हुए एक लुटेरे को धर दबोचा

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा शहर के मेन रोड स्थित जवाहर भोजनालय के पास सोमवार को दिनदहाड़े दो अज्ञात लुटेरों ने एक राहगीर से 2.5 लाख रुपये की लूट की। लेकिन लुटेरों की योजना पर तब पानी फिर गया जब पीड़ित ने साहस दिखाते हुए एक लुटेरे को पकड़ लिया। इसके बाद स्थानीय लोगों ने पकड़े गये लुटेरे की जमकर धुनाई की और पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने आरोपी को हिरासत में लेकर थाने ले गयी।

मिली जानकारी के अनुसार, पलामू जिले के चैनपुर थाना क्षेत्र के रबदा गांव निवासी दिलीप चौधरी छत्तीसगढ़ जाने के लिए गढ़वा आये थे। वह रंका मोड़ के पास एक टेंपो से उतरे और बस स्टैंड की ओर पैदल जा रहे थे। इसी दौरान जवाहर भोजनालय के पास एक मोटरसाइकिल पर सवार दो युवक उनके पास पहुंचे और बहाने से मोबाइल मांगा। दिलीप चौधरी ने जैसे ही मोबाइल दिया, दोनों लुटेरों ने उनके गले में टंगे बैग को रुपये समेत झपट लिया और मोटरसाइकिल तेज भगाने लगे। घटना के बाद भी दिलीप चौधरी ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना लुटेरों की बाइक के पिछले हिस्से को पकड़ लिया। लुटेरे बाइक की गति बढ़ाने लगे, जिससे दिलीप नीचे गिर गये, लेकिन उन्होंने बाइक को छोड़ने से इनकार कर दिया। कुछ दूर तक घसीटे जाने के बाद बाइक असंतुलित होकर गिर गयी। इसी दौरान एक लुटेरा मौका पाकर फरार हो गया, लेकिन दिलीप ने दूसरे लुटेरे को दबोच लिया।

लोगों ने लुटेरे की कर दी धुनायी: घटना के तुरंत बाद मौके पर लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गयी। उन्होंने पकड़े गये लुटेरे को जमकर पीटा और पुलिस को सूचना दी। स्थानीय लोगों के सहयोग से पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और आरोपी को गिरफ्तार कर थाने ले गयी।

इस संबंध में थाना प्रभारी बृज कुमार ने बताया कि लूट की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और एक आरोपी को पकड़ लिया गया है। फरार लुटेरे की तलाश जारी है। हालांकि, अब तक पीड़ित द्वारा लिखित आवेदन प्राप्त नहीं हुआ है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और जल्द ही पूरे घटनाक्रम का खुलासा किया जायेगा।

भाजपा में बूथ स्तर से जिला स्तर तक पदाधिकारियों के चयन की प्रक्रिया शुरू

संगठन चुनाव में सभी मंडलों की महती भूमिका: गणेश मिश्रा

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। भाजपा गुमला जिला के संगठन चुनाव में सभी मंडलों को महती भूमिका निभानी है। उक्त बातें भाजपा के प्रमंडलीय चुनाव प्रभारी गणेश मिश्रा ने सोमवार को पर्यटन भवन के सभागार में कहीं। वे गुमला जिला के सभी मंडलों के चुनाव प्रभारी और सह प्रभारी, सभी जिला पदाधिकारियों एवं जिला सदस्यता प्रभारी एवं सह प्रभारी की एक संयुक्त बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने उपस्थित सभी प्रभारियों को अगले तीन दिनों के अंदर अपने अपने मंडलों में बूथ लेबल पर सभी बूथ समितियों का चुनाव कर लेने का निर्देश दिया। ताकि क्रमवार मण्डल अध्यक्ष का चुनाव तथा तत्पश्चात जिला अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया शुरू की जा सके। बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिला अध्यक्ष विनय लाल ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में जिला में अबतक बने सक्रिय सदस्य एवं प्राथमिक सदस्यता की विस्तृत प्रगति रिपोर्ट पेश की और यह विश्वास भी जताया की सदस्यता का बाकी काम जो थोड़ा छूट गया है वो दो दिनों के अंदर पूर्ण कर लिया जायेगा। जिला में संगठनात्मक चुनाव की प्रक्रिया शुरू होने का रास्ता साफ हो जायेगा। गुमला जिला प्रभारी मनोज मिश्रा ने सभी पदाधिकारियों को स्पष्ट रूप से कहा कि सदस्यता अभियान यथाशीघ्र पूरा कर लें क्योंकि सदस्यता हेतु ऑनलाईन पोर्टल अभी खुला हुआ है, एक भी कार्यशील कर्मठ सदस्य को सक्रिय सदस्य बनाने से छूटना नहीं चाहिए, साथ ही संगठनात्मक चुनाव के लक्ष्य को समयानुसार पूर्ण कर लेने का आह्वान किया। बैठक में सर्वसम्मति से गुमला जिला के सभी मंडलों में नये सिरे से मण्डल चुनाव प्रभारी एवं सह प्रभारी को नियुक्ति कर उन्हें बूथ लेबल की चुनाव प्रक्रिया को तत्काल प्रभाव से शुरू करने का निर्देश दिया गया। गुमला नगर मंडल से चुनाव प्रभारी जगनारायण सिंह, सहप्रभारी दामोदर कसेरा को बनाया गया। गुमला ग्रामीण मण्डल से विनोद कुमार और गायत्री देवी, सुजीत नंदा एवं अमरमणि उरांव, रायडीह मंडल से संजय साहू एवं सत्यनारायण पटेल, चैनपुर मंडल से नीरज शर्मा, डुमरी मण्डल से यशवंत सिंह, गजाधर सिंह,जारी मण्डल से अवधेश प्रताप शाहदेव, मुरकुंडा मंडल से संदीप कुमार भोला चौधरी एवं किशुन बड़ाइक टोटो मंडल से छोटे लाल उरांव, एवं सीता गुप्ता, घाघरा मंडल से विपीन बिहारी श्याम किशोर पाठक, आदर मंडल से प्रदीप प्रसाद गोपाल गोप कौशल ठाकुर, विशुनपुर मंडल से भिखारी भगत केदार साहू अनिल उरांव, गोपाल केशरी को चुनाव प्रभारी व सह प्रभारी बनाया गया।

यह कैसी कूटनीति

वाइट हाउस में अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप और यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की के बीच शुक्रवार को जिस तरह की तीखी नोकझोंक देखने को मिली, उसे कूटनीति के इतिहास में अभूतपूर्व कहा जा सकता है। लाइव टीवी कवरेज के जरिए पूरी दुनिया ने पहली बार देखा कि दो राष्ट्राध्यक्ष अपनी टीम के साथ एक-दूसरे से तू-तू मैं-मैं कर रहे हैं।

बात सही, तरीका गलत : वैसे, दोनों पक्षों के स्टैंड पर गौर करें तो उसमें ऐसी कोई बात नहीं दिखती जिसे सिरे से गलत कहा जाए। रूस-यूक्रेन युद्ध को तीन साल से ज्यादा हो चुके हैं। अमेरिका इस युद्ध में लगातार यूक्रेन के साथ खड़ा रहा है। अब अगर उसे लगता है कि अपने देश के करदाताओं का पैसा इस लड़ाई में नहीं झोंका जाना चाहिए, तो इसमें कुछ भी असंगत नहीं है। इस लिहाज से उसकी यह कोशिश जायज है कि यह लड़ाई जल्द से जल्द बंद हो।

सुरक्षा गारंटी का सवाल : दूसरी तरफ, यूक्रेन यह सुनिश्चित करना चाहता है कि युद्धविराम के बाद रूस फिर से हमला न कर बैठे। कारण चाहे जो भी हों, उसकी यह शिकायत तथ्यात्मक रूप से सही है कि रूस अलग-अलग बहानों से उस पर हमले करता रहा है, सहमतियां तोड़ता रहा है। ऐसे में जहां अमेरिका पहले समझौता और युद्धविराम पर जोर दे रहा था, वहीं यूक्रेन पहले सुरक्षा गारंटी चाहता था।

दो देशों के बीच सहमति बनने से पहले इस तरह का गतिरोध आना कोई नयी या अस्वाभाविक बात नहीं है। नयी बात यह हुई कि इन मतभेदों पर चर्चा मीडिया के सामने शुरू हो गयी। चूंकि बातचीत वाइट हाउस में हो रही थी, इसलिए स्वाभाविक ही इसकी जिम्मेदारी अमेरिका पर आ जाती है।

गतिरोध अस्वाभाविक नहीं : दो देशों के बीच सहमति बनने से पहले इस तरह का गतिरोध आना कोई नयी या अस्वाभाविक बात नहीं है। नयी बात यह हुई कि इन मतभेदों पर चर्चा मीडिया के सामने शुरू हो गयी। चूंकि बातचीत वाइट हाउस में हो रही थी, इसलिए स्वाभाविक ही इसकी जिम्मेदारी अमेरिका पर आ जाती है। राष्ट्रपति ट्रंप ने खुद भी उसी समय इस पूरी नोकझोंक को ग्रेट टेलिविजन करार दिया।

आगे क्या : मकसद चाहे जो भी रहा हो, इस पूरे प्रकरण से दोनों में से कोई भी पक्ष फायदे में नहीं दिख रहा। अमेरिका जो समझौता यूक्रेन के साथ करना चाहता था, वह टल गया। यूक्रेन को भले ही यूरोप का साथ मिलता दिख रहा है, अमेरिकी समर्थन के बगैर उसका इस युद्ध में टिकना मुश्किल है। ऐसे में बहुत संभव है कि देर-सबेर दोनों फिर बातचीत की टेबल पर आयें। बेहतर होगा कि इंतजार में ज्यादा वक्त और जिंदगियां न बर्बाद की जायें।

अभिमत
आजाद सिपाही

ब्लूम वैंचर्स की इंडस वैली की वार्षिक रिपोर्ट 2025 भारत की आर्थिक विषमता की यह तस्वीर पेश करती है। इस रिपोर्ट का सरकार द्वारा किसी तरह प्रतिवाद नहीं किये जाने से साफ जाहिर है कि देश की आर्थिक सेहत एकतरफा जा रही है। अमीरी और गरीबी की खाई का चौड़ा होना जारी है। रिपोर्ट में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि भारत का उपभोक्ता बाजार बड़े स्तर पर विस्तार नहीं कर रहा है, बल्कि एक ही जगह गहरा होता जा रहा है। इसका मतलब यह है कि भले ही अमीर लोगों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हो रही है, लेकिन जो लोग पहले से ही अमीर हैं, वे और भी अमीर हो रहे हैं।

असंतुलित आर्थिक नीतियां बढ़ा रही हैं अमीरी-गरीबी की खाई

योगेंद्र योगी

देश के लगभग 100 करोड़ भारतीयों के पास इतनी आय नहीं है कि वे विवेकाधीन वस्तुओं पर कुछ भी खर्च कर सकें अर्थात वे किसी भी प्रकार से किसी भी वस्तु पर अतिरिक्त खर्च करने में असमर्थ हैं। लोग जरूरत के अलावा सामान या सुविधाएं नहीं खरीद सकते। वहीं, देश के केवल 10 फीसदी लोग, अर्थात 13-14 करोड़ लोग देश की अर्थव्यवस्था को चला रहे हैं, क्योंकि ये लोग ही सबसे ज्यादा खर्च करते हैं और देश की तरक्की में बड़ा रोल निभाते हैं। केंद्र सरकार एक तरफ देश में तरक्की का नया मॉडल पेश करते हुए विकसित भारत की तरफ बढ़ते कदमों का आंकड़ा पेश करती है, वहीं गरीबी और अमीरी की बढ़ती खाई ने इस मॉडल पर सवालिया निशान लगा दिये हैं।

ब्लूम वैंचर्स की इंडस वैली की वार्षिक रिपोर्ट 2025 भारत की आर्थिक विषमता की यह तस्वीर पेश करती है। इस रिपोर्ट का सरकार द्वारा किसी तरह प्रतिवाद नहीं किये जाने से साफ जाहिर है कि देश की आर्थिक सेहत एकतरफा जा रही है। अमीरी और गरीबी की खाई का चौड़ा होना जारी है। रिपोर्ट में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि भारत का उपभोक्ता बाजार बड़े स्तर पर विस्तार नहीं कर रहा है, बल्कि एक ही जगह गहरा होता जा रहा है। इसका मतलब यह है कि भले ही अमीर लोगों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हो रही है, लेकिन जो लोग पहले से ही अमीर हैं, वे और भी अमीर हो रहे हैं। आंकड़ों के अनुसार शीर्ष 10 प्रतिशत भारतीयों (10 सबसे अमीर भारतीय) के पास अब कुल नेशनल आय का 57.7 प्रतिशत हिस्सा है, जो पहले 1990 में 34 प्रतिशत था, जबकि निचले स्तर पर यह हिस्सा पहले के 22.2 प्रतिशत से घट कर 15 प्रतिशत रह गया है। इसके अलावा, 30 करोड़ लोग ऐसे हैं जिन्होंने हाल फिलहाल खर्च करना शुरू किया है। ये लोग भी अपने खर्च को लेकर बहुत सावधान हैं। खर्च करने वाला वर्ग बढ़ नहीं रहा।

वर्ष 2023 में भारत में प्रति व्यक्ति खर्च 1,493 डालर था, जबकि चीन में वर्ष 2010 में ही ये 1,597 डालर था।

आंकड़ों के मुताबिक 5 साल पहले रियल एस्टेट की कुल बिक्री में अफोर्डेबल हाऊसिंग की हिस्सेदारी 40 प्रतिशत थी, जो अब घटकर महज 18 प्रतिशत रह गयी है। इस महीने पेश हुए बजट में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मध्यम वर्ग की जेब ढीली करने के लिए टैक्स में छूट दी। 12 लाख रुपये तक कमाई करने वालों को अब इनकम टैक्स नहीं देना होगा जिससे 92 प्रतिशत वेतनभोगी लोगों को राहत मिलेगी। इसके बावजूद भारत की खपत चीन से 13 साल पीछे है।

वर्ष 2023 में भारत में प्रति व्यक्ति खर्च 1,493 डालर था, जबकि चीन में वर्ष 2010 में ही ये 1,597 डालर था। माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में भी हालात ठीक नहीं हैं। माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में बढ़ता कर्ज का बोझ बढ़ता जा रहा है।

दिसंबर 2024 तक इस सेक्टर के नॉन-परफॉर्मिंग एसेट्स (एनपीए) 50,000 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। ये अब तक का सबसे ऊंचा स्तर है और कुल लोन का 13 प्रतिशत है। अमीर-गरीब के बीच की खाई भारत में कभी छिपी नहीं रही है। यह खाई और चौड़ी हो गयी है। माइक्रोफाइनेंस का मतलब है गरीब परिवारों को बिना गारंटी के लोन देना। इन परिवारों की सालाना कमाई 3 लाख रुपये से कम होती है। ज्यादातर महिलाएं इन लोन का इस्तेमाल करती हैं। लेकिन ज्यादा लोन देने की होड़ में हालात बिगड़ गये हैं। बंधन बैंक इंडसइंड, आइडीएफसी फर्स्ट जैसे बैंकों के एनपीए बढ़ गये हैं। बंधन बैंक के 56,120 करोड़ रुपए के लोन में से 7.3 प्रतिशत एनपीए हो चुके हैं। एनपीए वह कर्ज है, जिसकी कोई भी किस्त 180 दिनों तक चुकाने में लेनदार असफल हो जाता है। इसके बाद बैंकों को इस तरह के लोन को एनपीए में डालना होता है। हालांकि इस लोन की वसूली की कोशिश जारी रहती है और कई बार ये पूरा या आंशिक तौर पर वापस मिल जाता है। आंकड़ों के मुताबिक 91 से 180 दिन का बकाया लोन कुल आऊटस्टैंडिंग का 3.3 फीसदी है, जबकि 180 दिन से ज्यादा बकाया लोन 9.7 प्रतिशत है।

देश के शीर्ष एक फीसदी लोगों ने 2022-23 में औसतन 53 लाख रुपए कमाये, जो औसत भारतीय की आय से 23 गुना अधिक है जिसने 2.3 लाख रुपये की आय सृजित की। देश के निचले पायदान के 50 फीसदी और बीच के 40 फीसदी लोगों की औसत आय क्रमश 71, 000 रुपये (राष्ट्रीय औसत का 0.3 फीसद) और 1,65,000 रुपये (राष्ट्रीय औसत का 0.7 फीसद) रही सबसे अमीर 9,223 लोगों (9.2 करोड़ वयस्क भारतीयों में से) ने औसतन 48 करोड़ रुपये कमाये (औसत भारतीय आय से 2,069 गुना)।

देश के शीर्ष एक फीसदी लोगों ने 2022-23 में औसतन 53 लाख रुपए कमाये, जो औसत भारतीय की आय से 23 गुना अधिक है जिसने 2.3 लाख रुपये की आय सृजित की। देश के निचले पायदान के 50 फीसदी और बीच के 40 फीसदी लोगों की औसत आय क्रमश 71, 000 रुपये (राष्ट्रीय औसत का 0.3 फीसद) और 1,65,000 रुपये (राष्ट्रीय औसत का 0.7 फीसद) रही सबसे अमीर 9,223 लोगों (9.2 करोड़ वयस्क भारतीयों में से) ने औसतन 48 करोड़ रुपये कमाये (औसत भारतीय आय से 2,069 गुना)। भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के बाद निजी उद्यम में वृद्धि और पूंजी बाजार की वृद्धि ने शीर्ष के कुछ ही लोगों के हाथों में संपत्ति का सिमटना बढ़ाया है।

उदारीकरण के बाद से सेवा की अगुवाई में हुई आर्थिक वृद्धि के भी असमान असर हुए। इस पूरे हालात से साफ है कि भारत की खपत ग्रोथ संतुलित नहीं है। एक तरफ जहां अमीर और अमीर हो रहे हैं, वहीं गरीब और गरीब, जिसके लिए आने वाले समय में सरकार को बड़े कदम उठाने होंगे जिससे आर्थिक असमानता कम हो सके।

कोल्हान की खबरें

टाटा समूह के संस्थापक जमशेदजी टाटा को शहरवासियों ने दी श्रद्धांजलि

सिंहभूम चैंबर ने किया टाटा समूह के चेयरमैन चंद्रशेखरन का अभिनंदन, पूर्व मंत्री बन्ना गुप्ता ने भी दी श्रद्धांजलि, जदयू ने भी श्रद्धा सुमन किये अर्पित

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। जमशेदपुर और टाटा समूह के संस्थापक जमशेदजी नसरवानजी टाटा को समाज के विभिन्न वर्गं के लोगों ने श्रद्धांजलि अर्पित की टाटा समूह के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने भी उनको अपनी श्रद्धांजलि दी तो उनसे कई लोगों ने मुलाकात भी की। सिंहभूम चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष विजय आनंद मूनका ने अपनी टीम के साथ श्री चंद्रशेखरन का अभिनंदन किया। सोनारी एयरपोर्ट पर उन्होंने मुलाकात की। इसके अलावा राज्य के पूर्व मंत्री बन्ना गुप्ता ने भी जमशेदजी टाटा को श्रद्धांजलि दी। बिष्टुपुर पोस्टल पार्क में पहुंचकर उन्होंने प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री गुप्ता ने कहा कि जमशेदजी टाटा ने लौहनगरी जमशेदपुर को स्वच्छ, सुंदर और

आधुनिक सुविधाओं का शहर बनाने का सपना देखा था, यहां रहने वाले हर वर्ग के नागरिकों को बेहतर और गुणात्मक नागरिक सुविधाएं उपलब्ध कराने का सपना उन्होंने देखा था, उनकी दूरदर्शी सोच का परिणाम हैं कि जमशेदपुर आज देश के प्रसिद्ध और उन्नत शहर के रूप मे विश्व विख्यात हैं।

जेडी(यू) नेताओं ने जमशेदजी नसरवानजी टाटा की मूर्ति पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित कीः जनता दल (यूनाइटेड) पूर्वी सिंहभूम जिला समिति के द्वारा जिला अध्यक्ष सुबोध श्रीवास्तव के नेतृत्व में औद्योगिक क्रांति के जनक, युगदृष्टा जमशेदजी नसरवानजी टाटा की जन्म जयंती के उपलक्ष पर बिष्टपुर पोस्टल पार्क स्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया। जद(यू) जिलाध्यक्ष सुबोध श्रीवास्तव ने कहा कि टाटा साहब आधुनिक भारत के निर्माता, देशवासियों के पथप्रदर्शक और राष्ट्र के निर्माता थे। उन्होंने कारखाना के साथ-साथ शिक्षण संस्थान, कैंसर अस्पताल, ताज होटल से लेकर जनहित में कई कार्य किया। नमक से लेकर हवाई जहाज तक के निर्माण में टाटा का नाम है। टाटा साहब के देशहित में किये अनेकों सराहनीय कार्यों के लिए उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में देश के इतिहास में अंकित रहेगा। आज जमशेदपुर शहर में बड़े पैमाने पर रोजगार उपलब्ध है, वह टाटा साहब की ही देन है। माल्यार्पण करने वालों में जिलाध्यक्ष सुबोध श्रीवास्तव जेडी(यू) प्रदेश महासचिव कौशल सिंह, युवा प्रदेशाध्यक्ष निर्मल सिंह, कुलविंदर सिंह पन्नू, प्रकाश कोया, कन्हैया ओझा, अर्जुन यादव, प्रेम सक्सेना, भरत पांडे, विजय सिंह, दीपक सुंडी, लक्ष्मण मिंज, दिलीप प्रजापति, अशोक सिंह, त्रिलोचन, दर्शन सिंह, मंगलानंद, दिलावर खान, बमबम प्रसाद आदि शामिल थे।

जेएन टाटा सशक्त भारत की पहचान : सुधीर

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। संस्थापक दिवस के मौके पर जमशेदपुर व्यवहार न्यायालय परिसर में शहर के वकीलों ने स्वर्गीय जमशेदजी नसरवानजी टाटा की 186वीं जयंती पर उन्हें भावभीनी श्रद्धा सुमन अर्पित किये। बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष मनोरंजन दास, पूर्व अध्यक्ष तापस मित्रा, पूर्व लोक अभियोजक पीएनगोप, पूर्व जिला अभियोजन पदाधिकारी सुशील कुमार जायसवाल, पूर्व जिला अभियोजन पदाधिकारी जगत विजय सिंह, देवेंद्र सिंह, रतन चक्रवर्ती, झारखंड बार काउंसिल के पूर्व सदस्य प्रकाश झा, समाजवादी चिंतक सुधीर कुमार पप्पू, उपाध्यक्ष बोलाई पांडा कोषाध्यक्ष जयप्रकाश भगत, सदस्य अभय कुमार सिंह आदि सैकड़ों अधिवक्ताओं ने श्रद्धांजलि दी। सुधीर कुमार पप्पू के अनुसार देश आज पूरी दुनिया में सशक्त है और इसका श्रेय स्वर्गीय जमशेदजी नसरवानजी टाटा को जाता है। उन्होंने कई कारखाने की स्थापना कर मजबूत आर्थिक भारत की नींव रखी और जमशेदपुर जैसा महान सुंदर शहर बसाया, जिसमें देश दुनिया के कोने-कोने में बसे लोगों को यहां प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार दिया और यहां के लोग एक गुलदस्ता के समान हैं। जिस पर हमें गर्व है और उनसे हमारी पहचान है।

अबुआ बजट में 'अबुआ' को ही किनारे कर दिया गयाः रघुवर दास

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने राज्य सरकार के बजट को 'गंधहीन, रंगहीन और दिशाहीन' करार दिया है। उन्होंने कहा बजट केवल आंकड़ों का संग्रह नहीं बल्कि राज्य की अर्थव्यवस्था को गति देने वाला दस्तावेज होता है। श्री दास ने आरोप लगाया बर्तमान सरकार अब दिन में सपने देख रही है। 'अबुआ बजट' में 'अबुआ' को ही किनारे कर दिया गया।पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा सरकार 2030 तक राज्य की अर्थव्यवस्था को 10 ट्रिलियन (10 लाख करोड़) रुपये तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है, लेकिन इसे कैसे हासिल करे इस पर कोई स्पष्टता नहीं है। उन्होंने सवाल किया क्या राज्य सरकार 15 प्रतिशत की विकास दर प्राप्त करने की योजना बना रही है। उन्होंने कहा इस बजट से किसान और ग्रामीण सबसे अधिक निराश हुए हैं। कारण किसानों की ऋण माफी पर सरकार चुप है और ग्रामीण विकास का बजट घटा दिया गया। श्री दास ने यह भी कहा कि बीते वित्तीय वर्ष में प्रस्तुत 1.28 लाख करोड़ रुपये के बजट में से जनवरी तक केवल 61 प्रतिशत राशि ही खर्च हुई है। जिसका सरकार के पास कोई जवाब नहीं है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को 450 रुपये में गैस सिलेंडर देने का वादा किया गया था, लेकिन अब सरकार इस पर कुछ नहीं बोल रही है। वृद्धा और विधवा पेंशन देने में भी सरकार असफल रही है। श्री दास ने निष्कर्ष निकालते हुए कहा इस बजट में जनता की घोर अनदेखी की गयी।

टाटा मोटर्स वर्कर्स यूनियन के रक्तदान शिविर में 2906 यूनिट रक्त का संग्रह

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। टाटा स्टील के संस्थापक जेएन टाटा के जन्म दिवस पर टाटा मोटर्स वर्कर्स यूनियन में महा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। सोमवार को यूनियन परिसर में सभी आगंतुकों द्वारा टाटा साहब के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। रक्तदान शिविर में बड़ी तादाद में टाटा मोटर्स कर्मियों समेत आस पास के विभिन्न कंपनियों के कामगारों व शहर के लोग शामिल हुए। रक्तदाताओं के हौसला अफजाई के लिए राजनीतिक दलों के नेताओं, शहर के समाजसेवियों, प्रबंधन के वरीय पदाधिकारियों समेत गणमान्य लोग उपस्थित हुए। शिविर में कुल 2906 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। अध्यक्ष गुरमीत सिंह, महामंत्री आरके सिंह सहित तमाम आगंतुकों को फूलों का गुलदस्ता व अंगवस्त्र भेंटकर स्वागत किया गया। रक्तदाताओं के सुविधा के लिए छह रजिस्ट्रेशन काउंटर बनाए गये थे, जबकि बेड़ की संख्या 45 रखा गया था। इस अवसर पर यूनियन अध्यक्ष गुरमीत सिंह व महामंत्री आरके सिंह ने रक्तदान शिविर को सफल बनाने में सहयोग करने वाले रक्तदाताओं, वीबीडीए व जमशेदपुर ब्लड बैंक के सहयोगकर्ताओं,वोलेंटियर्स, यूनियन के तमाम सदस्यों,कमेटी मेंबर्स,आफिस बेयरर व आगंतुक अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। मौके पर जमशेदपुर ब्लड बैंक के कर्मचारियों, ब्लड कोआर्डिनेट, वोलेंटियर्स, यूनियन के तमाम कमेटी मेंबर्स, पदाधिकारियों समेत वोलेंटियर्स ब्लड डोनर्स एसोशिएशन के सहयोगी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग रहा। अध्यक्ष गुरमीत सिंह ने कहा यह आयोजन टाटा साहब एवं रक्त के जरूरतमंद लोगों के प्रति समर्पित है। सभी के सहयोग से सफल बनाया गया। इसके लिए सभी को आभार व्यक्त करते है। महामंत्री आरके सिंह ने कहा थर्ड मार्च को आयोजित रक्तदान शिविर में जुटी भीड़ यह दशार्ता है लोग टाटा साहब को कितना चाहते हैं।

लोहरदगा और लातेहार में बजट को पक्ष ने सराहा, विपक्ष ने नकारा

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। झारखंड विधानसभा में सोमवार को गहमा गहमी के बीच राज्य के वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने बजट पेश किया इसके बाद राजनीतिक दलों और जैन सामान्य की ओर से बजट पर मंथन शुरू हो गया है। सत्ता पक्ष के लोग बजट की मुक्त कंठ से सराहना कर रहे हैं जबकि भाजपा आजसू समेत विपक्षी खेमे ने इसे लोक लुभावना और दिशाहीन बजट बता रहे हैं।

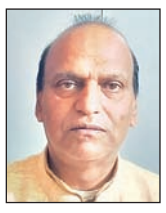
रामचंद्र गिरी

हाजी शकील अहमद

डॉ. टी साहू

मनीर उरांव

नेसार अहमद

मुजम्मिल अंसारी

ओम भारती

मुजम्मिल अहमद

एनुल अंसारी

रितेश साहू

समाजसेवी व शिक्षाविद् रामचंद्र गिरी ने कहा कि झारखंड सरकार द्वारा प्रस्तुत 2025-26 का आम बजट संतुलित है। इसमें आम जनता पर किसी भी तरह का टैक्स का बोझ नहीं बढ़ाया गया है। राजकोषीय घाटा को कंपनियों पर टैक्स लगाकर पूरा करने का वादा किया गया है। साथ हीं मंईयां सम्मान योजना के लिए 13000 करोड़ रुपये का अलग से प्रावधान करना दूरदर्शी कार्य है। 7.5 प्रतिशत विकास दर को बनाए रखने की प्रतिबद्धता सराहनीय है। शिक्षा, स्वास्थ्य और सिंचाई के क्षेत्र में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता थी।

कांग्रेस कार्यकारी जिलाध्यक्ष हाजी शकील अहमद ने कहा कि, झारखंड सरकार का बजट राज्य के विकास को नई दिशा और ऊर्जा देगा। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में बजट में विशेष व्यवस्था की गयी है। इससे ढांचागत बदलाव आयेगा। मंईयां सम्मान योजना के लिए सरकार ने अलग से बजट में व्यवस्था किया है इससे राज्य के आम नागरिकों पर कोई टैक्स का बोझ नहीं लगेगा।

शहर के प्रख्यात दंत चिकित्सक सह समाजसेवी डॉक्टर टी साहू ने कहा कि, राज्य सरकार ने बजट को संतुलित करने का प्रयास किया गया है पर, युवाओं और किसानों की अनदेखी की गई है। सार्वजनिक उपक्रम की कंपनियों पर अतिरिक्त टैक्स लगाने से कंपनियां अंततः जनता सही इसका भार वसूलेगी जिससे महंगाई बढ़ेगा।

भाजपा जिलाध्यक्ष मनीर उरांव ने कहा कि झारखंड सरकार का बजट दिशाविहीन और निराशा जनक बजट है। राज्य के किसानों और युवाओं को इस बजट से निराशा मिलेगी। बजट में सरकार आय से ज्यादा लोक लुभावन वादों को पूरा करने में फोकस किया है। जिससे राजकोषीय घाटा बढ़ना निश्चित है। रोजगार का अवसर बढ़ाने के लिए बजट में ठोस व्यवस्था नहीं करना दुखद है।

वरीय कांग्रेसी नेता नेसार अहमद ने कहा कि राज्य सरकार ने संतुलित और दूरदर्शी बजट पेश कर एक मिशाल पेश किया है। राजस्व संवर्धन समिति का गठन कर बजट में व्यय के अनुसार आई की ठोस व्यवस्था किया गया है मैया सम्मान योजना के लिए 13 हजार करोड़ आय की व्यवस्था कर सरकार ने कुशल नेतृत्व का परिचय दिया है। कहा बजट में शहरी और ग्रामीण विकास में फोकस करना सराहनीय है।

कांग्रेस अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष मुजम्मिल अंसारी ने कहा कि झारखंड सरकार का बजट राज्य के विकास को गति देगी। संतुलित और व्यावहारिक बजट प्रस्तुत किया गया है। ग्रामीण विकास और रोजगार बढ़ाने के लिए बजट में विशेष व्यवस्था करना सराहनीय है।

आजसू जिलाध्यक्ष ओम भारती ने कहा कि, झारखंड सरकार पूरी तरह लोकलुभावन भवन बजट प्रस्तुत कर जनता को गुमराह करने का प्रयास किया है। बजट में आम आदमी के राहत के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। बजट में युवाओं के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। बजट से किसान और युवा ठगा महसूस करेंगे।

झामुमो जिलाध्यक्ष मुजम्मिल अहमद ने कहा कि, झारखंड सरकार ने शहरी और ग्रामीण विकास को गति देने के साथ कृषि को बढ़ावा देने के लिए बजट में विशेष फोकस किया है। बजट में राज्य की महिलाओं को मैया सम्मान योजना की राशि लगातार मिलने की ठोस व्यवस्था की गई है। इससे महिलाएं आर्थिक स्वालंबी बनेंगे। हेमंत सरकार का बजट विकास को प्रत्यक्ष गति देने वाला बजट है।

झामुमो नेता सह कुडू प्रखंड उप प्रमुख एनुल अंसारी ने सरकार की बजट की सराहना कर कहा कि बजट में किसान और कृषि उत्पादन के लिए विशेष व्यवस्था है। कृषि उत्पादन बढ़ाकर डेयरी डेवलपमेंट प्लांट बैठने की योजना है। इससे राज्य में दूध उत्पादन बढ़ेगा और बच्चों को कुपोषण से मुक्ति मिलेगी। कृषि उत्पादन के लिए गोदाम और कोल्ड स्टोरेज बनाने से किसानों को लाभ होगा।

लोहरदगा चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष रितेश साहू ने कहा कि सरकार का बजट पूरी तरह निराशाजनक बजट है। कहा, बजट में छोटे शहरों में उद्योग धंधों का विकास व रोजगार बढ़ाने की कोई व्यवस्था नहीं है। लोगों को ट्रैफिक जाम से मुक्ति दिलाने के लिए भी पहल नहीं की गई है। जाम से मुक्ति के लिए बाईपास और फ्लावर बनाने के लिए बजट में कोई दिलचस्पी नहीं लिया गया। इससे आम लोग और व्यापारी वर्ग निराश है।

भाजपा नेता सह समाजसेवी अनिल उरांव ने कहा कि, लोक लुभावन बजट पेश कर झारखंड सरकार ने जनता को गुमराह किया है। निराशाजनक बजट से लोग मायूस है।

इस बजट के साथ ही सरकार का काउंटडाउन शुरू : प्रकाश राम

आजाद सिपाही संवाददाता

लातेहार। लातेहार विधानसभा क्षेत्र के विधायक प्रकाश राम ने कहा कि इस बजट के साथ ही सरकार का काउंटडाउन शुरू हो गया है। यह बजट सिर्फ घोषणाओं का बजट है, धरातल पर शून्य है। जब से झामुमो की सरकार बनी है वह सिर्फ घोषणा ही करती है,

जमीनी स्तर पर कोई कार्य नहीं होता। इस बजट से किसी भी वर्ग के लोगों को कुछ नहीं मिलने वाला है। विकास के नाम पर झारखण्ड वासियों को फिर से झुनझुना थमा दिया गया है। लातेहार जिला की अनदेखी की गयी है, पिछड़ा जिला होने के बावजूद यहां कॉलेज, रोजगार, मेडिकल सुविधाओं के लिए बजट में कुछ नहीं है।

शिक्षा और स्वास्थ्य को मिला बढ़ावा : बैद्यनाथ राम

लातेहार (आजाद सिपाही)। वही झारखंड राज्य के पूर्व शिक्षा एवं मध्य निषेध मंत्री वैद्यनाथ राम ने कहा कि झारखंड 2025 कम बजट झारखंडियों के लिए है और झारखंडियों को आगे बढ़ाने के लिए है सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षा और स्वास्थ्य को बढ़ावा दिया गया है जो यहां झारखंड के लोगों के लिए बहुत ही संतुलित बजट

माना जा रहा है। झारखंड मुक्ति मोर्चा जिला अध्यक्ष लाल मोती नाथ शाहदेव ने कहा कि झारखंड में जब से महागठबंधन की सरकार आयी है झारखंड के लोगों को हर संभव आगे बढ़ाने के लिए लगी रहती है इस आम बजट में भी झारखंड के लोगों को हित में देखते हुए झारखंड जब से अलग हुआ है तब से यह बजट बहुत ही सराहनीय है। आगे भी हेमंत सोरेन जी के सरकार में झारखंड के लोगों को हित के देखते हुए कार्य किया जायेगा।

गरीबों के लिए मील का पत्थर साबित होगा : रामचंद्र सिंह

लातेहार (आजाद सिपाही)। मनिका विधानसभा के विधायक रामचंद्र सिंह ने झारखंड की बजट को राज्य की जनता का बजट बताया है और कहा कि यह बजट लागू होने से राज्य की गरीब मजदूर व्यापारी वर्ग के लोगों

को आने वाले दिनों में मिल का पत्थर साबित होगा। राज्य की जनता को देख कर इस बजट को बनाया है।

राजद नेता ने हेमंत सरकार की तारीफ की

लातेहार (आजाद सिपाही)। राजद जिला अध्यक्ष रामप्रवेश यादव ने कहा कि महागठबंधन की सरकार झारखंड में बहुत ही सुंदर कार्य कर रही है कार्य को देखते हुए झारखंड की जनता ने हेमंत सोरेन को दूसरी बार राज्य की कमान को सौपा है जो यह देखने योग्य है। मुख्यमंत्री भी

राज्य की जनता को पूरे तन्मयता के साथ आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं।

आदिवासियों के लिए खतरा बन चुके हैं बांग्लादेशी घुसपैठिये : अनिल उरांव

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। भाजपा नेता अनिल उरांव ने बयान जारी कर कहा कि बांग्लादेशी घुसपैठिये संथाल परगना सहित पूरे झारखंड में आदिवासी समाज के लिए बहुत बड़ा खतरा बन चुके हैं। झारखंड के संथाल परगना में अवैध बांग्लादेश घुसपैठिया ने यहां रह रहे आदिवासी समाज का डेमोग्राफी बदल दिया है। पश्चिम बंगाल के रास्ते से अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों झारखंड में प्रवेश कर रहे हैं। झारखंड हाइ कोर्ट ने अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी घुसपैठियों को चिंहित करने का आदेश दिया है। बांग्लादेशी घुसपैठिया झारखंड में आकर यहां के भोले भाले आदिवासी लड़कियों को लव जिहाद के माध्यम से फंसा कर अवैध रूप से शादी कर रहे हैं और उसके बाद उसकी जमीन कब्जा कर लाखों बांग्लादेशियों को बसाने का काम कर रहे हैं यह काम लोहरदगा जिला में भी बड़ी तेजी से हो रहा है। बांग्लादेशी घुसपैठिया अवैध रूप से झारखंड में आकर अलग-अलग जिलों में योजनाबद्ध

तरीके से बसायी जा रहे हैं इतना ही नहीं इनका फर्जी आधार कार्ड एवं मतदाता पहचान पत्र भी बनाया जा रहा है झारखंड सरकार वोट बैंक के लिए बांग्लादेशियों को संरक्षण देने का काम कर रही है। इसका खुलासा लोहरदगा जिला में 2020 के हुए दंगे के दौरान प्रशासन के रिपोर्ट में भी हो चुका है। लोहरदगा जिला की जितनी आबादी है उससे अधिक यहां आधार कार्ड बन गये हैं जो बतलाता है कि लोहरदगा जिला में भी हजारों बांग्लादेशी घुसपैठियों अवैध रूप से रह रहे हैं। झारखंड सरकार एसआइटी का गठन कर इस मामले की जांच करें। इसकी मांग भारतीय जनता पार्टी नेता अनिल उरांव ने झारखंड सरकार से की है।

उतका गांव में पेड़ कटाई की हुई जांच

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। जिले के कैरों प्रखंड क्षेत्र के उतका गांव में बिना अनुमति के किए गए पेड़ कटाई मामले की जांच सोमवार को वन परिसर पदाधिकारी चंद्रशेखर महतो ने की। निरीक्षण के दौरान उन्होंने पाया कि बेचे गए जमीन में 13 विशालकाय साल के पेड़ सहित अन्य वृक्षों को काटा गया है। इस पर उन्होंने सख्त रुख अपनाते हुए स्थानीय ग्रामीणों व जमीन मालिकों को निर्देश दिया कि कटे हुए पेड़ यथास्थान ही रहें, यदि कोई इन्हें ले जाने का प्रयास करे तो तत्काल विभाग को सूचना दें, जिससे उचित कार्रवाई की जा सके। वन पदाधिकारी चंद्रशेखर महतो ने बताया कि इस अवैध कटाई की शिकायत अंचल कार्यालय में की गई थी, जिसके बाद वहां से सूचना वन विभाग को भेजी गई और जांच शुरू की गई। यह जमीन खतियानी रैयत अजय सिंह व विजय सिंह की थी, जिन्होंने इसका आधा हिस्सा बेच दिया था। बेची गई भूमि पर ही पेड़ काटे गए हैं। वन विभाग अब इस मामले में आगे की कार्रवाई करेगा और यदि अवैध कटाई की पुष्टि होती है, तो संबंधित लोगों पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। निरीक्षण के दौरान स्थानीय ग्रामीणों को भी जागरूक किया गया कि वे ऐसी गतिविधियों पर नजर रखें और अवैध कटाई की सूचना तुरंत प्रशासन को दें।

कुडू थाना में शांति समिति की बैठक आज

कुडू / लोहरदगा (आजाद सिपाही)। होली को लेकर लोहरदगा के कुडू थाना परिसर में शांति समिति की बैठक आज मंगलवार को दोपहर तीन बजे से होगा। उक्त आशय की जानकारी कुडू थाना प्रभारी ने देते हुए बताया कि इस बार के शांति समिति की बैठक में पुराने सदस्यों के अलावे थानाक्षेत्र के चौदहो पंचायत के मुखिया को क्षेत्र के छह छह प्रभावशाली सदस्यों को बैठक में लाने के लिए पत्र देकर अपील की है। जिसे भी शांति समिति से जोड़कर पूरे इलाके में शांति व्यवस्था में उनका योगदान लेने की बात कही। उन्होंने सभी से बैठक में भाग लेने की अपील की है।

बजट पर सरकार समर्थक और विरोधी बंटे नजर आये

आजाद सिपाही संवाददाता

बरवाडीह। झारखंड सरकार ने वित्तीय वर्ष 2025 के लिए 1.45 लाख करोड़ रुपये का बजट पेश किया। जिसमें राज्य की आर्थिक वृद्धि को तेज करने और समाज के सभी वर्गों के लिए कल्याणकारी योजनाओं पर जोर दिया गया है। जिसे लेकर बरवाडीह प्रखण्ड क्षेत्र में भी किसी ने सरकार को सराहा तो किसी ने एक सिरे नकार दिया है। सरकार समर्थक और विरोधी बंटे नजर आये। बजट का समर्थन करने वाले लोगों को कहना है कि इस बजट से राज्य आत्मनिर्भर हो सकेगा तथा आत्मनिर्भर झारखंड का सपना पूरा होगा। यह बजट पूरी तरह से संतुलित बजट है। जबकि बजट का विरोध करने

हर्षवर्धन सिंह उर्फ नान्हू

अनिल सिंह

कन्हाई प्रसाद

अजय चंद्रवंशी

वाले लोगों का कहना है कि यह बजट राज्यहित में नहीं है बल्कि यह पूरी तरह से उद्योगपतियों एवं पूजींपतियों के हित में है। आम लोगों के लिए बजट में कुछ नहीं है।

वही समाजसेवी अनिल सिंह ने कहा कि कल्याणकारी योजनाओं पर सरकार का फोकस रहा। बजट में गरीबों, किसानों और महिलाओं के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाओं का प्रावधान किया गया है। 'मंईयां सम्मान योजना' को सरकार का प्रमुख फोकस बताया गया, जिससे महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त किया जायेगा। इसके अलावा, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और आधारभूत ढांचे के विकास के लिए भी बड़े पैमाने पर निवेश का प्रस्ताव किया गया है।

राजद प्रदेश कार्य समिति सदस्य अजय चंद्रवंशी ने कहा राज्य सरकार औद्योगिक विकास, रोजगार सृजन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देने पर विशेष ध्यान दे रही है।बजट में यह सुनिश्चित किया गया है कि झारखंड की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़े।

वही भाजपा के नेता प्रखंड अध्यक्ष हर्षवर्धन सिंह ने कहा कि राज्य सरकार का यह बजट पूरी तरह से पूंजीपतियों को लाभ पहुंचाने वाला है। इससे आम लोगों को कुछ भी लाभ नहीं होने वाला है। इस बजट में किसान, गरीब आदि की अनदेखी की गयी है।

इसके अलावे भाजपा नेता कन्हाई प्रसाद ने कहा कि बजट जनविरोधी, किसान विरोधी एवं मध्यम विरोधी है। इसमें आम लोगों का तनिक भी ख्याल नहीं रखा गया है।

अलग-अलग सड़क दुर्घटना में चार घायल

सेन्हा/ लोहरदगा (आजाद सिपाही)। सड़क दुर्घटना में चार लड़का घायल हो गये। सभी को पुलिस के मदद से अस्पताल में कराया गया भर्ती कराया गया। विदित हो कि देर शाम सेन्हा थाना क्षेत्र के सेन्हा डिपू के समीप एन एच 143 ए पथ पर अनियंत्रित हो मोटरसाइकिल सवार स्प्लेंडर से गिरने पर गम्भीर रूप से जख्मी हो गया। घायल अवस्था मे युवक को गस्ती के दौरान सेन्हा पुलिस द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सेन्हा में भर्ती कराया गया। जहां प्राथमिकी उपचार के पश्चात चिकित्सक द्वारा बेहतर इलाज हेतु सदर अस्पताल लोहरदगा रेफर किया गया। वही घायल की पहचान गुमला जिला अंतर्गत घाघरा थाना क्षेत्र के बुरहु ग्राम निवासी शिकवार उरांव का 18 वर्षीय पुत्र विकास उरांव के रूप में किया गया।

सेवानिवृत्त बीइइओ रामजीवन नायक को सीओ, बीडीओ और डीइओ ने दी विदाई

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। प्रखंड संसाधन केंद्र, लोहरदगा के सभागार में प्रखण्ड लोहरदगा से सेवानिवृत्त प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी,लोहरदगा रामजीवन नायक की विदाई समारोह आयोजित किया गया। उक्त अवसर पर जिला शिक्षा अधीक्षक सह जिला शिक्षा पदाधिकारी, अभिजीत कुमार, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, गौरीशंकर ठाकुर, अंचल अधिकारी, आशुतोष की उपस्थिति में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। जिला शिक्षा पदाधिकारी अभिजीत कुमार और प्रखंड विकास पदाधिकारी, गौरीशंकर ठाकुर ने सेवानिवृत्त

प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी, लोहरदगा को शॉल प्रदान कर उनके उज्ज्वल भविष्य और उत्तम स्वास्थ्य की कामना किये। रामजीवन नायक सर को बुके, शॉल, वस्त्र एवं उपहार देकर ससम्मान विदाई का कार्यक्रम संपन्न हुआ। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, ने कहा कि नायक जी ने अपने कर्तव्यों का निर्वहन ईमानदारी और कुशलता के साथ किया। हमेशा ये खुश रहें और सामाजिक कार्य में अपनी जिम्मेदारी निभाएं। जिला शिक्षा अधीक्षक सह जिला शिक्षा पदाधिकारी, लोहरदगा ने कहा कि नायक जी के साथ कार्य करने का मौका नहीं मिल सका।

एलपीएल क्रिकेट प्रतियोगिता ऐतिहासिक और अविस्मरणीय होगी : धीरज साहू

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। लोहरदगा जिले के बीएस कॉलेज क्रिकेट स्टेडियम में 5 मार्च से 8 मार्च तक स्वर्गीय शिव प्रसाद साहू मेमोरियल ळ20 क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन होने जा रहा है। इसकी तैयारियों को अंतिम रूप देने में लोहरदगा जिला क्रिकेट एसोसिएशन पूरी तरह से जुटा हुआ है। लोहरदगा जिला क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष सह पूर्व राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू ने सोमवार को प्रेस वार्ता कर बताया कि इस टूर्नामेंट में देश के विभिन्न राज्यों की 8 टीमें भाग लेंगी। यह प्रतियोगिता आइपीएल की तर्ज पर आयोजित की जा रही है, जिससे लोहरदगा के क्रिकेट प्रेमियों में भारी उत्साह देखा जा रहा है। आयोजन की भव्यता को देखते

हुए स्टेडियम के पवेलियन में जिले के दिवंगत क्रिकेटरों के सम्मान में विशेष स्टैंड बनाये गये हैं। महिलाओं के लिए अलग से बैठने की व्यवस्था की गयी है ताकि वे भी आराम से इस प्रतियोगिता का आनंद उठा सकें। दर्शकों और खिलाड़ियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए 27 सीसीटीवी कैमरे लगाये गये हैं।

प्रतियोगिता का उद्घाटन 5 मार्च को कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश करेंगे। वही शाम को बॉलीवुड सिंगर अमित गुप्ता द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। इसी दिन बॉलीवुड अभिनेता एवं सांसद शत्रुघ्न सिन्हा दूसरे मैच का उद्घाघटन करेंगे। 8 मार्च को फाइनल मुकाबला खेला जायेगा। यह दिन नारी शक्ति और समर्पण के प्रतीक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर लोहरदगा जिला क्रिकेट एसोसिएशन की ओर से महिला खिलाड़ियों को कीटस और सामाजिक कार्य कर रहे सर्वश्रेष्ठ महिलाओं को इलेक्ट्रॉनिक सिलाई मशीनें भेंट की जायेगी। फाइनल मैच से पहले भारतीय क्रिकेट के दिग्गज खिलाड़ी हरभजन सिंह और सुरेश रैना के बीच प्रदर्शनी मैच खेला जायेगा। इस टूनार्मेंट में 8 से 10 विधायक भी शामिल होंगे, जिससे यह आयोजन और भी भव्य होगा। 8 मार्च को होने वाले फाइनल मैच और पूरे टूर्नामेंट का लोहरदगा और आसपास के क्षेत्र के क्रिकेट प्रेमी भरपूर आनंद उठायेंगे। अंतराष्ट्रीय क्रिकेट खिलाडी हरभजन सिंह और सुरेश रैना साथ ही सीने अभिनेता शत्रुघन सिन्हा मुख्य आकर्षण होंगे। इस अवसर पर धीरज प्रसाद साहू ने बताया की झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से वार्ता हुआ है आमंत्रित किया गया है लेकिन अभी तक पूर्ण सहमति प्राप्त नहीं हुआ है।

18 कर्मियों की सेवा संपुष्ट

आजाद सिपाही संवाददाता

लातेहार। लातेहार उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता की अध्यक्षता में जिला स्थापना समिति की बैठक की गयी। बैठक में समिति द्वारा समाहरणालय लातेहार के कुल 19 कर्मियों की सेवा संपुष्टि सहित अन्य बिंदुओं पर विचार विमर्श करते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया। बैठक में समिति द्वारा सर्वसम्मती से समाहरणालय लातेहार अंतर्गत कुल 19 कर्मियों में से 18 कर्मियों की सेवा संपुष्टि की गयी। जिसमे 08 अनुसेवक, 03 राजस्व उप निरीक्षक एवं 07 निम्न वर्गीय लिपिक हैं।

बैठक में अपर समाहर्ता रामा रविदास, अनुमंडल पदाधिकारी लातेहार अजय कुमार रजक, स्थापना उप समाहर्ता मेरी मड़की, जिला कल्याण पदाधिकारी अनिल कुमार, पंचायती राज पदाधिकारी श्रेयांश उपस्थित थे।

चुंगरु के दूधी माटी जंगल मे पेड़ से लटका शव मिला

आजाद सिपाही संवाददाता

बरवाडीह। बरवाडीह के छिपादोहर थाना क्षेत्र अंतर्गत चुंगरु पंचायत के दुधिमाटी जंगल में सोमवार को पेड़ में लटका शव छिपादोहर पुलिस ने बरामद किया है।शव की पहचान चुंगरु निवासी सेवक सिंह के 25 वर्षिय पुत्र राजेन्द्र सिंह के रूप में हुई।इस सम्बंध में थाना प्रभारी धीरज कुमार सिंह ने बताया कि स्थानीय लोगो के द्वारा सूचना मिली की दूधीमाटी जंगल मे किसी व्यक्ति का शव पेड़ मे लटका हुआ है।घटना की सूचना मिलते ही घटनास्थल पहुँच शव को कब्जे में लिया गया।शव उसके घर से महज 500 मीटर के दूरी पर जंगल मे पेड़ में लटका हुआ था।परिवार वालो के द्वारा शव को पेड़ से उतारा गया। प्रथम दृष्टयता यह प्रतीत होता है कि युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर अपनी लीला समाप्त की है। उधर पूरे मामले की गहनता से जांच की जा रही है। जांच करने व पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट हो पायेगा की युवक की मौत कैसे हुई है।

AFFIDAVIT

As per Affidavit Ref. No. 54 date 03.03.2025, i, Kriti Kumari Daughter of Tarkeshwar Mishra Resident of Village saytoli, P.o- Konbirnawatoli, P.s. Basia, District - Gumla, Jharkhand 835229, Do hereby solemnly affirm and declare follows :
1. That i am an indian citizen.
2. That i am residing at my aforsaid address. 3. That previously my nick name Gudia Tiwari Mentioned in my aadhar card No. xxxx xxxx 8058 4. That my actual name is Kriti Kumari Mentioned in my Voter ID & student ID Card 260171242531. 5. That i will be know by my actual name Kriti Kumari for ever and everywhere since today.
6. That need of the affidavite for my actual name i.e. Kriti Kumari in place of nick name Gudiya Tiwari Which shall be published in newspaper and gazette for my further identification.
7. that abouve statement are true and genuine if any found unture I shall be responsible.

शपथ पत्र

शपथ पत्र के अनुसार क्र. सं. 25 दिनांक 28.01.2025 मैं धमेन्द्र साव (Dharmendra Saw), पिता रमाशिष साव (RAMASHISH SAW), निवासी ग्राम गोपालगंज चडरी, पो०- राँची, जि.पि.ओ., थाना- लोअर बाजार, जिला- राँची, राज्य झारखण्ड, शपथपूर्वक बयान करता हूँ कि नीचे लिखी बातें मेरी जानकारी में सही एवं सत्य है:-
1. यह कि मैं भारतीय नागरिक हूँ एवं उपरोक्त पते का स्थायी निवासी हूँ।
2. यह कि मेरे पुत्र का नाम नवरंग कुमार (NAVRANG KUMAR) है, जो कि सही है, एवं मेरे पुत्र का सही जन्म तिथि 08/05/2015 है।
3. यह कि मेरे पुत्र का आधार कार्ड में आलेख राज (AALEKH RAJ) नाम लिखा गया है जो कि गलत है।
4. यह कि मैं अपने पुत्र का नाम आधार कार्ड में नवरंग कुमार (NAVRANG KUMAR) रखना चाहता हूँ और मेरे पुत्र का जन्म तिथि सर्टिफिकेट में नवरंग कुमार (NAVRANG KUMAR) ही है।
5. यह कि मेरे पुत्र का जन्म तिथि का पंजीकरण संख्या B-2019: 20-90032-002031 है। 6. यह कि मेरा पुत्र नवरंग कुमार (NAVRANG KUMAR) का आधार संख्या-4624 0001 9227 है। 7. यह कि मैं अपने पुत्र नवरंग कुमार (NAVRANG KUMAR) का नाम सुधार करने के लिए शपथ-पत्र बना रहा हूँ। 8. यह कि उपरोक्त वर्णित बाते मेरी जानकारी में सही एवं सत्य है। गलत पाये जाने पर इसकी पूर्ण जवाबदेही मेरी होगी।

पांकी विधायक ने राज्यपाल से की भेंट

आजाद सिपाही संवाददाता

पांकी/ पलामू। पांकी विधायक डॉ कुशवाहा शशिभूषण मेहता ने सोमवार को झारखंड के राज्यपाल संतोष गंगवार से राजभवन मे भेंट की। इस दौरान उन्होंने संवेदक मेसर्स सिलदिलिया कंस्ट्रक्शन्स द्वारा तरहसी से तेतराई होते हुए बलियारी मोड़ तक पथ निर्माण कार्य मे शिथिलता बरतने का मामला सहित ढूब छतरपुर मार्ग मे अधूरे पुल का धंसना और घटिया निर्माण कार्य की रिपोर्ट अब तक प्रस्तुत न करना इसके अलावा पूरे पांकी विधानसभा क्षेत्र मे जल-नल योजना मे संवेदको और पदाधिकारीयों की मिलीभगत से वित्तीय अनियमितताओं पर कारवाई की मांग की और क्षेत्र की महत्वपूर्ण समस्याओं पर चर्चा की एवं ज्ञापन सौंपा। जिस पर राज्यपाल ने इन गंभीर मुद्दों पर तत्काल संज्ञान लिया और आवश्यक जांच कराने का आश्वासन देते हुए संबंधित अधिकारीयों को निर्देशित किया। कहा कि क्षेत्र के विकास और भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था के लिए संघर्ष जारी रहेगा।

सक्रिय सदस्यता के साथ विभिन्न स्तरों पर कमेटी का होगा गठन : कमलेश

आजाद सिपाही संवाददाता

हुसैनाबाद। भाजपा के वरिष्ठ नेता पूर्व विधायक कमलेश कुमार सिंह के हुसैनाबाद स्थित आवास पर संगठनात्मक चुनाव को लेकर कमलेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में पार्टी के वरिष्ठ नेताओं प्रदेश एवं जिला पदाधिकारी, सभी मोर्चा के अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष एवं महामंत्री, मंडल प्रभारी, मंडल चुनाव प्रभारी एवं सह प्रभारियों की महत्वपूर्ण बैठक हुई। बैठक में कमलेश कुमार सिंह ने कहा कि पार्टी के निदेर्शानुसार संगठन पर्व सदस्यता अभियान को लेकर पलामू जिले में भी सक्रिय

सदस्यता बनाने का कार्य अग्रसर है। श्री सिंह ने कहा कि प्रदेश के निदेर्शानुसार मार्च महीने में ही संगठन के बूथ, मंडल एवं जिला स्तरीय चुनाव कराना तय किया गया है। उन्होंने कहा कि जिले के अधिकांश मंडलों में बूथ कमेटी बनाने का कार्य अंतिम चरण में है। जबकि बूथ कमेटी मंडल अध्यक्ष का चुनाव करेगी इसके बाद जिला अध्यक्ष का चुनाव किया जाएगा। वरिष्ठ नेता रामप्रवेश सिंह ने कहा कि बूथ कमेटी मे कम से कम तीन महिलाओं एवं सभी वर्गों की भागीदारी का होना अनिवार्य है। सभी कार्यकर्ता सक्रियता के साथ निर्धारित समय में ही बूथ एवं मंडल मे चुनाव संपन्न कराने को लेकर तत्परता के साथ जुट जायें। बैठक में अजित सिंह, अखिलेश मेहता, उदय विश्वकर्मा, रंजीत पासवान, विनय पासवान ,विनय पासवान, अजय गुप्ता, चंदन सिंह, सतीस शर्मा, संजय सिंह, रामचंद्र चौधरी समेत बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता शामिल थे।

विद्यालय में बच्चे कर रहे हैं मजदूरी, शिक्षक फरमा रहे हैं आराम : उप प्रमुख

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़/ पलामू। रामगढ़ प्रखंड क्षेत्र के अंतर्गत बेड़मा बभंडी पंचायत में राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय बेड़मा की उप प्रमुख मालती देवी ने औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान देखा कि प्रधानाध्यापक विद्यालय में सो रहें हैं और विद्यालय में मरम्मती का कार्य हो रहा था। जिसमें बच्चें बालू चालने का काम कर रहें थें। जहां प्रधानाध्यापक ने बताया कि इस विद्यालय में तीन शिक्षक हैं लेकिन शिक्षक मुरारी बैठा को मैट्रिक इंटर परीक्षा में नियुक्त किया गया हैं। वहीं शिक्षक विजय गुप्ता विद्यालय से बिना छूटी लिए हुए नदारद हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि संकुल साधनसेवी कन्हैया तिवारी हमेशा विद्यालय में निरीक्षण करने नहीं आते हैं वह पिछले चार माह पूर्व निरीक्षण करने आये थें जिसके बाद अभी तक विद्यालय में निरीक्षण करने नहीं आये हैं। इधर इस संदर्भ में संकुल साधनसेवी कन्हैया तिवारी ने कहा कि हम प्रत्येक माह निरीक्षण करने जाते हैं। उत्क्रमित मध्य विद्यालय के प्रधानाध्यापक प्रतिदिन नशे में होकर विद्यालय आते हैं वह नशे के हालत में कुछ भी आरोप लगा सकते हैं।

आरपीएस पब्लिक स्कूल जपला में नयी प्रधानाचार्य ने दिया योगदान

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। जपला के सुप्रसिद्ध विद्यालय आरपीएस पब्लिक स्कूल में सोमवार को नयी प्रधानाचार्य पूबाली रॉय ने योगदान दिया। विद्यालय प्रबंधन की ओर से एक पारंपरिक आयोजन के साथ नवागत प्रधानाचार्या का स्वागत किया गया। इस समारोह में नवागत प्रधानाचार्य पूबाली रॉय को पुष्प के साथ सम्मानित करते हुए विद्यालय के निर्देशक संजय सिंह (लड्डू) तथा शैक्षणिक निर्देशक प्रोफेसर डॉ. सुरेश चंद्रा ने विद्यालय के उज्जवल भविष्य की कामना की। इसके पश्चात विद्यालय के समस्त शिक्षक -शिक्षिकाओं एवं कर्मचारियों के साथ नवागत प्रधानाचार्या का परिचय करवाया गया। संपूर्ण कार्यक्रम शैक्षणिक निर्देशक एवं विद्यालय परिवार द्वारा सुचारू रूप से परिचालित हुआ। मौके पर प्रधानाचार्य श्रीमती रॉय ने कहा की हम सब टीम वर्क की तरह काम करेंगे। विद्यालय के निदेशक और शिक्षकों ने भी यह उम्मीद जतायी कि नयी प्रधानाचार्य के नेतृत्व में विद्यालय सफलता के नये पंख जोड़ेगा।

फरार अभियुक्त के घर पुलिस ने चिपकाया इश्तेहार

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। हुसैनाबाद थाना क्षेत्र के बेलबीघा पंचायत अंतर्गत धावाबार गांव में हुसैनाबाद महिला थाना कांड संख्या 03/2024 धारा 74, 75, 351 (2) एवं 3 बीएनएस के प्राथमिक अभियुक्त बीरेन्द्र यादव पता- बेल बिगहा, धावाबार, थाना हुसैनाबाद जिला पलामू के विरुद्ध हुसैनाबाद महिला थाना पुलिस के द्वारा आत्मसमर्पण हेतु अभियुक्त के घर पर विधिवत इश्तेहार चिपकाया गया। एसआइ रामनंदन प्रसाद के साथ अन्य कई पुलिस कर्मी व गाँव लोगों के उपस्थिति में ढोल बजाकर इश्तेहार लगाया गया। इस सबन्ध में महिला थाना के एसआई प्रसाद ने बताया की उपरोक्त अभियुक्त उक्त कांड संख्या में प्राथमिक अभियुक्त हैं और पुलिस को चकमा देकर फरार चल रहा है, जिसके बाद जिला न्यायालय दंडाधिकारी के निर्देश पर इश्तेहार चिपकाया गया है। उपरोक्त अभियुक्त अगर समयावधि में आत्मसमर्पण नही करते हैं तो न्यायालय के निर्देश पर कुर्की जब्ती भी की जायेगी। मौके पर कई ग्रामीण उपस्थित थे।

सात परीक्षा केंद्रों पर 32 परीक्षार्थी अनुपस्थित

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। हुसैनाबाद के सभी परीक्षा केंद्रों पर सोमवार को कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच मैट्रिक व इंटर की शांतिपूर्ण व कदाचार मुक्त परीक्षा हुई। हुसैनाबाद में मैट्रिक परीक्षा के लिए सात केंद्र बनाया गया है, जिसमें सोमवार को गणित विषय में सभी परीक्षा केन्द्र पर कुल 6,251 में 20 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। वही दूसरी पाली में मनोविज्ञान और कंप्यूटर इंटरमीडिएट की परीक्षा में कुल 472 में 12 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहें। शहीद भगत सिंह महाविद्यालय पर केंद्राधीक्षक प्रेमनाथ सिंह,प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी धर्मेंद्र कुमार, प्रो. संजय सिंह,कंचन सिंह, शिक्षक मुन्ना सिंह, बक्शी उच्च विद्यालय परीक्षा केंद्र पर केंद्राधीक्षक संतोष प्रसाद , बालिका प्लस टू विद्यालय पर उपेंद्र राम, हार्वे प्लस टू उच्च विद्यालय पर डॉ. सूजाउल हक , कमगारपुर प्लस टू उच्च विद्यालय पर विश्वजीत कुमार चौबे, सरस्वती विद्या मंदिर पर अशोक कुमार आदि परीक्षा केन्द्र का निरीक्षण करते देखे गये ।

कमांडर जीप की चपेट में आने से छात्रा का पैर टूटा

विश्रामपुर/ पलामू (आजाद सिपाही)। विश्रामपुर कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय की एक छात्रा कमांडर जीप की चपेट में आने से गंभीर रूप से जख्मी हो गयी है। घटना सोमवार दोपहर की है। मिली जानकारी के अनुसार दसवीं की छात्रा रागनी कुमारी मैट्रिक का परीक्षा देने केंद्र पर टेंपो से जा रही थी। उसका एक पैर टेंपो से बाहर निकला हुआ था। इसी बीच विपरीत दिशा की ओर से आ रही एक कमांडर जीप की चपेट में वह आ गयी। जिससे उसका दाहिना पैर बुरी तरह कुचल गया। प्राथमिक उपचार के बाद तत्काल उसे विद्यालय की ओर से मेदिनीनगर इलाज के लिये भेज दिया गया है। जहां एक निजी अस्पताल में उसका इलाज चल रहा है। वार्डेन रानी कुमारी ने कमांडर जीप चालक के खिलाफ इसकी लिखित शिकायत रेहला थाने को देकर उचित कार्रवाई करने का अनुरोध किया है।

रेहला रामनवमी पूजा समिति का पुनर्गठन आठवीं बार अध्यक्ष बने आलोक शुक्ला

आजाद सिपाही संवाददाता

विश्रामपुर / पलामू। रामनवमी पूजा को लेकर रेहला महावीर मंदिर परिसर में सोमवार को स्थानीय लोगों की बैठक हुयी। बैठक की अध्यक्षता डॉ वी पी शुक्ला ने किया। बैठक में इस बार रामनवमी पूजा महोत्सव व जुलुश को और भव्यतम करने का निर्णय लिया गया। पूजा के आयोजन और जुलूस के सफल संचालन के लिये पूजा समिति को पुनर्गठित किया गया। सर्वसम्मति से आलोक शुक्ला को लगातार आठवीं बार समिति का अध्यक्ष बनाया गया। वहीं संतोष कश्यप, रमाकांत शुक्ला, दिनेश शुक्ला व गोल्डन चौबे को उपाध्यक्ष, अमित चौबे,अवनीश दुबे व अनूप सोनी को सचिव, शैलेन्द्र दुबे, संजीत सिंह और विकास शुक्ला को कोषाध्यक्ष, सचिन चौबे, पुनीत शुक्ला व राजन मिश्रा को उप सचिव, संतोष गुप्ता, पंकज गुप्ता, जितेंद्र गुप्ता, राहुल शुक्ला, सुनील सिंह, रिंकू दुबे, पंकज चौबे,जीतू सोनी, सुजीत चौबे,सुमित तिवारी,सोनू पांडेय व रितेश पांडेय को संगठन मंत्री, मणिकांत दुबे व शशिकांत शुक्ला को मीडिया प्रभारी,राहुल चौबे,दीपक शुक्ला,अनूप शुक्ला व विजय कश्यप को आय व्यय पर्वेक्षक तथा छोटू चौबे, आलोक शुक्ला, नीरज शुक्ला, प्रियांशु शुक्ला, अभिषेक झा व उज्ज्वल शुक्ला को महामंत्री बनाया गया। जबकि शुशील चौबे, अमृत शुक्ला, महेंद्रनाथ चौबे,शशिनाथ चौबे,रामनाथ कश्यप, केदारनाथ कश्यप, रंजीत सिंह,संजू सिंह, विजय गुप्ता, महेंद्र सेठ, गुप्तेश्वर प्रसाद, डॉडू डीपी शुक्ला,राजेश चौबे, अरविंद शुक्ला व चंचल शुक्ला को समिति का महासंरक्षक चुना गया।

होली शांति और सौहार्द का पर्व, उपद्रव बर्दाश्त नहीं : सीओ

आजाद सिपाही संवाददाता

मनातू/ पलामू। होली महापर्व को शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण माहौल में मनाने को लेकर मनातू अंचल कार्यालय में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गयी। जिसमें सीओ मदन कुमार और उनके कर्मियों ने भाग लिया। बैठक के दौरान सीओ ने होली के त्यौहार और रमजान माह के एक साथ आने को लेकर सुरक्षा और शांति बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया। सीओ ने कहा कि होली का पर्व रंगों और खुशियों का त्यौहार है। लेकिन इस दौरान कुछ लोग नशे में धुत होकर शांति भंग करने की कोशिश करते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी किसी भी स्थिति से बचने के लिए सभी को सजग रहना चाहिए। सीओ ने पुलिस प्रशासन से अपील की कि किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो, इसके लिए अधिकारियों को सतर्क रहने की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि सोशल मीडिया पर होली से संबंधित आपत्तिजनक पोस्ट पर विशेष नजर रखी जायेगी।

इसके अलावा, मजिस्ट्रेट की प्रतिनियुक्ति की बात भी की गई ताकि किसी भी आपत्ति या असामाजिक गतिविधि पर तुरंत कार्रवाई की जा सके। बैठक में मिठाईयों में मिलावट की समस्या पर भी चर्चा की गई। सीओ ने बताया कि होली के दौरान मिष्ठान दुकानों में मिलावट की संभावना अधिक रहती है, जिससे लोगों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इस मुद्दे पर अधिकारियों को मिठाई दुकानों की जांच करने और गुणवत्ता नियंत्रण को सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी दी गयी।

दिशाहीन और विकास विरोधी है बजट : अमित तिवारी

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। झारखंड सरकार का 2025 बजट विकास विरोधी एवं दिशाहीन है। इस बजट में समाज के सभी वर्गों का ध्यान नहीं रखा गया है। हेमंत सरकार ने इस बजट को पेश कर-के दिखा दिया कि नौजवान,छात्र के प्रति एवं विकास के प्रति उनका कोई भी पहल नहीं है। किसानों के सिंचाई के लिए भी कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। झारखंड प्रदेश के लोगों की अपेक्षाएं इस बजट से ज्यादा थी लेकिन झारखंड वासियों को सिर्फ ठगा गया। आम जनता से चुनाव के समय किया गया सारा वादा इनका झूठा साबित हुआ। उन्होंने 450 रुपए मे गैस सिलेंडर देने का वादा किया था जो बजट में नहीं है। महिलाओं के स्वालंबन, रोजगार एवं विकास के लिए इस बजट में उसकी कोई चर्चा नहीं हुई। युवाओं के रोजगार के प्रति इस सरकार में कुछ भी ठोस पहल नहीं किया।

कल्पना सोरेन को अविनाश देव ने दी जन्मदिन की बधाई

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। झारखंड माटी कला बोर्ड के सदस्य सह संत मरियम आवासीय विद्यालय के चैयरमेन व झामुमो के वरिष्ठ नेता अविनाश देव ने सोमवार को गांडेय विधायक कल्पना सोरेन से मुलाकात कर उन्हें जन्मदिन की बधाई दी। इस दौरान अविनाश देव ने श्रीमती सोरेन को हेमंत सरकार के नेतृत्व में महिला सशक्तिकरण को लेकर किये गये कार्य पर चर्चा की। कहा कि सरकार के इस प्रयास का साकारात्मक असर देखने को मिल रहा हैं।साथ ही श्री देव ने विधायक कल्पना सोरेन को पलामू में आने का न्यौता दिया। इस पर कल्पना सोरेन ने भरोसा दिलाया कि जल्द हीं वह पलामू आयेगी और संत मरियम आवासीय विद्यालय के कार्यक्रम में भाग लेंगी। उन्होंने कहा कि स्कूल के आयोजन में बच्चों के बीच जा कर उन्हें भी बेहद खुशी मिलेगी। श्री देव ने कहा कि यह भी एक सुखद संयोग हैं जब कल्पना सोरेन के जन्मदिन के दिन हीं। राज्य का अबुआ बजट आया हैं। जो राज्य को नयी दिशा देगा और विकास की गति पूरी रफ्तार पकड़ेगा।

Jharkhand Urja Sancharan Nigam Limited
(CIN: U40108JH2013SGC001704)
OFFICE OF THE GENERAL MANAGER
TRANSMISSION ZONE-I, KUSAI COLONY, DORANDA, RANCHI,
Mob. / Tel No. :- 9431707300/0651-2490513Email:- gm.jusnl@gmail.com

e TENDER NOTICE

e- tender in two parts i.e. Technical (Part-I) and Financial (Part – II) is invited from the reputed parties ,having adequate financial and technical resources to undertake the following work:-

Sl. No.	e-NIT No.	Description of work	Estimated cost excluding GST & Other taxes	Earnest Money Deposit	e-Tender Fee.(Non - Refundable)
1	397/PR/JUSNL/ 2024-25	Procurement of Different Materials for 33 KV Main Bus Conductor Replacement Work at 132/33KV Grid Sub-Station, Hatia-I.	(Rs.) 35,56,890 /-	(Rs.) 71500/-	(Rs) 5900/-(including 18% GST)

Details	
Period of work	03 months from date of LOI/PO
Start Date & Time for Downloading of Tender Documents	04.03.2025 at 05:00 PM
End date and time for uploading of BID	24.03.2025 up-to 03:00 PM
Last date of submission of hard copy of bid, proof of tender cost and EMD in the office of General Manager, Transmission Zone-I, Ranchi	Up-to 24.03.2025 at 05:00 PM
BID Opening date for technical part	25.03.2025 at 04:00PM
BID Opening date for price part	Will be communicated
Procurement Officer and address for communication	GENERAL MANAGER TRANSMISSION ZONE-I, KUSAI COLONY, P.O.-DORANDA, RANCHI, Pin -834002

1.0 A complete set of bidding documents may be downloaded by any interested bidder from website https://jharkhandtenders.gov.in. Interested bidders have to necessarily register themselves on https://jharkhandtenders.gov.in to participate in the bidding under this NIT. It shall be the sole responsibility of the interested bidders to get themselves registered at the aforesaid website and apprise themselves adequately regarding all the relevant procedures and provisions related to uploading of the bids on the aforesaid website.

स्वहित एवं राष्ट्रहित में ऊर्जा बचावें। कृपया अपनी शिकयतों को टॉल फ्री नं० 1800 345 6570 पर दर्ज करायें।

Sd/-
General Manager
Transmission Zone-I, Ranchi

PR 347635 Jharkhand Urja Sancharan Nigam Ltd(24-25)D

नीलाम पत्र पदाधिकारी (खनन), –सह– उप निदेशक खान का कार्यालय, उत्तरी छोटानागपुर अंचल, हजारीबाग।

–: सूचना :–

नीलाम पत्र पदाधिकारी (खनन)–सह– उप निदेशक, खान का कार्यालय, उत्तरी छोटानागपुर अंचल, हजारीबाग द्वारा चतरा जिला के खनिज अनुदान/पट्टा संबंधी बकाएदारों के विरूद्ध सरकारी राजस्व का भुगतान नहीं होने के फलस्वरूप कुर्की वारन्ट निर्गत किया गया है, जिसका थानावार विवरणी निम्नलिखित है।

क्र0 सं0	कुर्की/गि0 वारंट	नी0 पत्र मुकदमा संख्या	बकायेदार का नाम	बकाया नी0 पत्रित राशि
1	2	3	4	5
(थाना–सदर, चतरा)				
1	कुर्की वारंट	148/78-79	श्री जीवलाल साव, पिता श्री बीजू साव, ग्राम–नगवाँ, पो0– चतरा, थाना– सदर चतरा, जिला– चतरा।	40,868.00
2	कुर्की वारंट	77/79-80	श्री चन्दु राम कहार, पिता श्री सरयू राम कहार, ग्राम–नई तालाब चतरा, पो0–थाना–जिला– चतरा।	21,140.00
3	कुर्की वारंट	59/80-81	श्री चन्दु राम कहार, पिता श्री सरयू राम कहार, ग्राम–नई तालाब चतरा, पो0–थाना–जिला– चतरा।	15,473.00
4	कुर्की वारंट	09/97-98	2. श्री अगद साव, पिता श्री गया प्रसाद साव, (जनसेवक), ग्राम–जतराहीबाग, पो0–थाना– जिला– चतरा।	4,04,339.00
5	कुर्की वारंट	06/98-99	श्री अब्दाल मोहम्मद, पिता मो0 मोहिउद्दीन, ग्राम–बिन्द मुहल्ला चतरा, पो0–थाना–जिला–चतरा।	32,502.00
6	कुर्की वारंट	07/17-18	श्री कुमार विवेक, पिता स्व0 शिव कुमार सिंह, ग्राम–टुडाग,पो0– तपेज, थाना–सदर, चतरा, जिला–चतरा।	3,12,369.00
7	कुर्की वारंट	03/18-19	मेसर्स जे0पी0एस0 ब्रिक्स प्रो0 श्री अमीत कुमार जायसवाल, पिता श्री शम्भु प्रसाद जायसवाल, ग्राम–अब्बल मुहल्ला, चतरा, पो0–चतरा, थाना–सदर,चतरा, जिला– चतरा।	3,36,690.00
(थाना–हंटरगंज)				
8	कुर्की वारंट	02/00-01	जय अम्बे ब्रिक्स 1.श्री अरविन्द सिंह, पिता श्री नितिश्वर सिंह, 2. श्री दिनेश्वर सिंह, पिता श्री जगदेव सिंह, दोनो का पता– ग्राम–सौहाद,पो0–थाना– हण्टरगंज, जिला–चतरा	1,1,8,538.00
9	कुर्की वारंट	06/00-01	जय अम्बे ब्रिक्स 1.श्री अरविन्द सिंह, पिता श्री नितिश्वर सिंह, 2. श्री दिनेश्वर सिंह, पिता श्री जगदेव सिंह, दोनो का पता– ग्राम–सौहाद,पो0–थाना– हण्टरगंज, जिला–चतरा	15,286.00
10	कुर्की वारंट	01/04-05	श्री अमरेन्द्र सिंह, पिता श्री दशरथ सिंह, ग्राम–पो0–हिरिंग, थाना– हण्टरगंज,जिला–चतरा।	1,03,751.00
11	कुर्की वारंट	04/04-05	श्री सुशील सिंह, पिता श्री नरेश नारायण सिंह, ग्राम–पो0–हिरिंग,थाना– हण्टरगंज, जिला– चतरा	98,129.0
12	कुर्की वारंट	08/04-05	श्री पंकज कुमार सिंह उर्फ पिकू सिंह, पिता श्री बालमुकुन्द सिंह, ग्राम–पो0–धधरी, थाना– हंटरगंज, जिला– चतरा।	1,18,980.00
13	कुर्की वारंट	09/04-05	श्री अमरेन्द्र सिंह, पिता श्री दशरथ सिंह, ग्राम–पो0–हिरिंग, थाना– हण्टरगंज,जिला–चतरा।	1,13,887.00
14	कुर्की वारंट	07/10-11	श्री अमरेश सिंह, पिता श्री नरेश सिंह, ग्राम–पो0–हिरिंग, थाना– हण्टरगंज, जिला– चतरा।	1,62,086.00
15	कुर्की वारंट	08/10-11	श्री अमरेन्द्र सिंह, पिता श्री दशरथ सिंह, ग्राम– पो0–हिरिंग,थाना– हण्टरगंज, जिला–चतरा	1,61,661.00
16	कुर्की वारंट	09/10-11	1.श्री झखुरी सिंह, पिता श्री गिरजा सिंह, 2.श्री सुमन सिंह, पिता श्री देवनन्दन सिंह, 3.श्री अनुज सिंह, पिता श्री विधा सिंह, सभी का ग्राम–पो0–हिरिंग,थाना– हंटरगंज, जिला– चतरा।	1,62,086.00
17	कुर्की वारंट	11/10-11	श्रीमती अनिता देवी, पत्नी श्री सुशील सिंह, ग्राम–पो0–हिरिंग, थाना–हंटरगंज, जिला–चतरा।	1,01,763.00
18	कुर्की वारंट	13/17-18	श्रीमती अनिता देवी, पति डा0 सुशील सिंह, ग्राम– पो0–हिरिंग,थाना– हण्टरगंज, जिला–चतरा	11,32,625.00
19	कुर्की वारंट	04/18-19	श्री केवल यादव, पिता श्री रउदी यादव, ग्राम–सैयपुर, पो0– नावाडीह, थाना– हण्टरगंज, जिला– चतरा।	1,32,586.00
20	कुर्की वारंट	13/18-19	श्री मुनेश्वर सिंह, पिता श्री महेन्द्र सिंह, ग्राम– भोजपुर, पो0–बिहियाँ, थाना– हण्टरगंज, जिला– चतरा।	12,62,537.00
21	कुर्की वारंट	05/21-22	श्री केवल यादव, पिता श्री रउदी यादव, ग्राम–सैयपुर, पो0–नावाडीह, थाना–हण्टरगंज, जिला– चतरा।	2,86,755.00
22	कुर्की वारंट	06/21-22	श्री केवल यादव, पिता श्री रउदी यादव, ग्राम–सैयपुर, पो0–नावाडीह, थाना–हण्टरगंज, जिला– चतरा।	2,28,262.00
(थाना–सिमरिया)				
23	कुर्की वारंट	09/97-98	1.श्री अनील कुमार, पिता श्री लक्ष्मण साव, ग्राम–खपिया, पो0–थाना–सिमरिया, जिला– चतरा।	4,04,339.00
(थाना–बचरा)				
24	कुर्की वारंट	07/87-88	श्री राज बहादुर सिंह, पिता श्री राम ध्यान सिंह, ग्राम– पो0– थाना– बचरा, जिला– चतरा	43,789.00
25	कुर्की वारंट	60/96-97	श्री राज कुमार चौहान, पिता श्री बासुदेव चौहान, ग्राम–पो0–राय, थाना– बचरा, जिला– चतरा।	61,940.00
(थाना–मयुरहण्ड)				
26	कुर्की वारंट	04/88-89	श्री बालेश्वर साव, पिता श्री राम देव साव, ग्राम– पो0– थाना– मयुरहण्ड, जिला– चतरा	11,023.00
27	कुर्की वारंट	134/90-91	श्री रघु सिंह, पिता श्री रामेश्वर सिंह, ग्राम–साले, पो0–पथरा, थाना– मयुरहण्ड, जिला– चतरा ।	26,479.00
(थाना–गिद्धौर)				
28	कुर्की वारंट	08/21-22	मेसर्स सुषमा ब्रिक्स इण्डस्ट्रीज प्रो0 श्री प्रकाश साव, पिता श्री परमेश्वर साव, ग्राम–पो0–गांगपुर, थाना–गिद्धौर, जिला– चतरा।	4,72,841.00
(थाना–कोठी, गया)				
29	कुर्की वारंट	11/17-18	श्री बिनोद प्रसाद, पिता श्री नारायण प्रसाद, ग्राम–बधौता, पो0–थाना–कोठी, जिला–गया, बिहार।	6,36,231.00
(थाना–डुमरिया, गया)				
30	कुर्की वारंट	11/00-01	श्री मुखदेव प्रसाद महतो, पिता श्री कृपाल प्रसाद, ग्राम–ज्योतिनडीह, पो0–पिपरा, थाना– डुमरिया, जिला– गया, बिहार।	1,24,468.00
(थाना–मानपुर, गया)				
31	कुर्की वारंट	10/18-19	श्री अभिषेक आनन्द, पिता स्व0 बिनोद सिंह, ग्राम–मानपुर कुम्हार टोली, पो0– बुनियादगंज, थाना– मानपुर, जिला–गया, बिहार।	14,22,511.00
(थाना–सदर, हजारीबाग)				
32	कुर्की वारंट	12/18-19	मेसर्स पुष्पांजली कंसट्रक्शन प्रो0 श्री अजय कुमार सिंह, पिता श्री राम लखन प्रसाद सिंह, ग्राम– सार्कतपूरी सदानन्द रोड, थाना–सदर, पो0–जिला– हजारीबाग।	18,38,273.00

अतः उपरोक्त बकायेदारों को सूचित किया जाता है कि वे अविलम्ब बकाये राशि का Online भुगतान कर नीलाम पत्र पदाधिकारी,(खनन), हजारीबाग के न्यायालय को सूचित करें अन्यथा वारंट तामिला कर दिया जायेगा।

PR 347559 (Mines and Geology) 24-25 (D)

नीलाम पत्र पदाधिकारी,खनन, हजारीबाग।

आजाद सिपाही
रांची, मंगलवार, 04 मार्च, 2025
www.azadsipahi.in
11

कोयलांचल में बजट पर आयी मिली-जुली प्रतिक्रिया

विधायक ने बाबुओं का बजट करार दिया

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। विधायक राज सिन्हा ने झारखंड विधानसभा में आज पेश वित्तीय वर्ष 2025 -26 बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि बजट का मूल आकार एक करोड़ 45 लाख 400 रुपये का है जबकि पिछले बजट 24-25 का आकार 128900 करोड रुपये का था। विधायक राज सिन्हा ने कहा कि बजट को ध्यान से देखने पता चलता है कि यह अबुआ बजट नहीं बल्कि बबुआ या बाबुओं का बजट है। पिछले बजट से वित्तीय वर्ष 25-26 का आकलन करने से पता चलता है कि पिछले बजट में जहां ग्रामीण विकास, पथ निर्माण विभाग, ऊर्जा विभाग, कृषि विभाग, जल संसाधन विभाग, पेयजल और स्वच्छता विभाग, गृह आपदा एवं महत्वपूर्ण विभाग सभी विभाग के बजट को घटाकर सिर्फ सरकारी राजस्व दुरूपयोग करने के लिए महिला एवं बाल विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है। ना तो शिक्षा ना तो कृषि क्षेत्र में ना ही रोजगार सृजन के बारे में न हीं नगर विकास को बढ़ावा देते हुए रोजगार सृजन करने में न हीं स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के क्षेत्र में न हीं किसान की आय को दोगुनी करने के लिए नहीं पर्यटक क्षेत्र को विकसित कर रोजगार के अवसर उत्पन्न करने की दिशा में बजट में कोई स्पष्ट प्रावधान किया गया है।

बीज से लेकर बाजार तक किसानों का कोई ख्याल नहीं रखा गया है।

जब सदन में यह पूछा गया कि राज्य का 1.36 लाख करोड़ रूपया केंद्र सरकार के पास किस-किस मद और किस अवधि का है तो राज्य सरकार के पास कोई स्पष्ट जवाब नहीं था। बजट में भी इसका उल्लेख नही किया गया है जबकि राज्य सरकार राजनीतिक लाभ लेने के लिए भ्रम फैलाने का कार्य कर रही है। अतः यह बजट पूरी तरह से भ्रामक है और झारखंड के मजदूर, किसान, दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित और आदिवासी बेरोजगारों के किसी भी प्रकार से हित करने वाला नहीं है।

झारखंड का बजट मात्र एक छलावा: श्रवण

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। भारतीय जनता पार्टी महानगर अध्यक्ष श्रवण राय ने झारखंड सरकार के द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए पेश किये गये बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि, झारखंड की जनता के साथ यह बजट केवल एक छलावा एवं भद्दा मजाक है। अत्यंत निराशाजनक बजट पेश किया गया है। केंद्र सरकार की योजनाओं और फंड के बदौलत झारखंड की जो बढ़ोतरी हो रही है उस पर झारखंड की हेमंत सरकार अपनी पीठ थपथपाने का कार्य कर रही है। यह बजट राज्यहित में नहीं। चुनाव के पूर्व किये गये वादों एवं घोषणाओं के अनुरूप इस बजट में कुछ भी नहीं। जिला महामंत्री मानस प्रसून और धनेश्वर महतो ने कहा कि हेमंत सरकार के दूसरे कार्यकाल का प्रथम बजट निराशाजनक और जन विरोधी बजट में सरकार ने बड़े-बड़े वादे तो किये हैं, लेकिन जमीनी हकीकत को देखते हुए यह बजट पूरी तरह से खोखला और दिशाहीन नजर आता है। इस बजट में गरीब किसान मजदूर युवा के लिए कोई ठोस प्रावधान नहीं किये गये। जिला मंत्री पंकज सिन्हा एवं जिला उपाध्यक्ष शेखर सिंह ने कहा कि, झारखंड का सबसे गंभीर मुद्दा बेरोजगारी है, परंतु इस बजट में युवाओं के लिए कोई ठोस रोजगार नीति नहीं बनायी गयी। उद्योग, कल, कारखानों के क्षेत्र में भी कुछ भी विशेष प्रबंध इस बजट में नहीं है। कुल मिलाकर यह बजट सिर्फ आंकड़ों का लोक लुभावना खेल मात्र है। जिला मंत्री प्रियंका देवी ने कहा कि महिला सुरक्षा के लिए सरकार ने बजट में कोई योजना प्रस्तुत नहीं की गयी है।

झारखंड को विकास की ओर ले जाने वाला बजट: ब्रजेंद्र सिंह

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। झारखंड विधानसभा में आज वित्त मंत्री राधा कृष्ण किशोर के द्वारा पेश किया। बजट जनकल्याण कारी बजट के रूप में पेश किया गया है। इस बजट से सभी वर्गों को फायदा होगा और एक तरह से यह झारखंड के लिए दूरदर्शी बजट पेश किया गया है। जनता के ऊपर कोई भी नया टैक्स नहीं लगाया गया है, जिससे यहां की जनता में खुशी का माहौल है। इस बजट को अगर हम कम शब्दों में बोलना चाहे तो यह कह सकते हैं कि यह बजट झारखंड को विकास की ओर ले जाने वाला बजट है। इसके लिए झारखंड के वित्त मंत्री और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

अबुआ सरकार की बजट बेहतरीन और ऐतिहासिक : अनुपमा सिंह

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। हेमंत है तो हिम्मत है अबुआ सरकार अपने टेनोर का पहला वित्तीय बजट 2025 26 पेश किया है, जिसमें सोशल सेक्टर का विशेष ध्यान के साथ-साथ सरकार ने अंतिम पायदान पर खड़े राज्य के कमजोर गरीबों वंचितों और महिलाओं के बारे में सबसे अधिक सोचा है और उसी पर सरकार काम करने जा रही है। सामाजिक सेक्टर पर विशेष ध्यान दिया गया है, साथ ही साथ उच्च और तकनीकी शिक्षा विभाग किसानों के ऋण वापसी जिसका फायदा इस बार चार लाख किसानों को होगा तथा सभी विभागों का ध्यान सरकार ने रखा है। शिक्षा के क्षेत्र को नयी उड़ान दी गयी है मेडिकल के साथ-साथ मास कंयुनिकेशन बिजनेस के कॉलेज खुलेंगे जिससे कि झारखंड के छात्र-छात्राओं को दूसरे प्रदेशों में उच्च शिक्षा के लिए नहीं जाना पड़ेगा। झारखंड ने अपने वित्तीय घाटे को कम किया है व्यापार के क्षेत्र में नीति आयोग ने भी माना है देश में झारखंड चौथे नंबर में है और फाइनेंशियल मैनेजमेंट में झारखंड पूरी मजबूती के साथ काम कर रहा है।

महुदा में शांति समिति की बैठक, रमजान और होली पर्व को शांति से मनाने की अपील

महुदा (आजाद सिपाही)। महुदा थाना परिसर में सोमवार को बाघमारा वीडियो लक्ष्मण प्रसाद यादव की अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक आयोजित की गयी। इस बैठक में रमजान और होली पर्व को शांतिपूर्ण तरीके से मनाने के लिए चर्चा की गयी। बैठक के दौरान विडिओ लक्ष्मण प्रसाद यादव ने दोनों समुदायों के लोगों से अपील की कि वे सोहार्दपूर्ण वातावरण में अपने पर्व मनाएं। उन्होंने पंचायत प्रतिनिधियों को निर्देश दिया कि वे अपने-अपने क्षेत्र में बैठकें आयोजित करें, ग्रामीणों की समस्याएं सुनें और किसी भी प्रकार की हुड़दंग मचाने वाले तत्वों पर नजर रखें। अंचल निरीक्षिका ममता कुमारी ने भी इस अवसर पर पंचायत प्रतिनिधियों से अपील की कि वे अगर कोई व्यक्ति बदतमीजी करता है, तो उसकी सूचना पुलिस को दें। ममता कुमारी ने कहा कि होली के मौके पर डीजे बजाना सख्त मना है। इस मौके पर थाना प्रभारी देवानंद प्रसाद, एएसआई महेंद्र राम, भाजपा जिला महामंत्री धनेश्वर महतो, पूर्व जिप सदस्य संतोष कुमार महतो, शिबु महतो, और अन्य पंचायत प्रतिनिधि भी मौजूद थे।

ट्रैक्टर ने स्कूटी में मारी टक्कर , स्कूटी सवार की हुई मौत

धनबाद (आजाद सिपाही)। तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने स्कूटी में मारी जोरदार टक्कर। घटना में स्कूटी सवार की हुई घटना स्थल पर मौत। जिससे स्कूटी सवार युवक ग्यार कुट दक्षिण पंचायत निवासी 36 वर्षीय टिंकू दुबे की मौके पर ही मौत हो गयी। स्कूटी स्टार्ट किये थे, तभी रोड के नीचे उतर ट्रैक्टर ने आकर टक्कर मार दी।

धनबाद विधायक राज सिन्हा ने सदन में उठाया मामला

पुलिस कर्मियों के खाली पद भरे जायें, बढ़ते अपराध पर अंकुश लगे

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। विधायक राज सिन्हा ने विधानसभा में थाना और ओपी को प्रभावी बनाने के लिए, पुलिस कर्मियों की रिक्त पदों पे नियुक्ति और बढ़ते अपराध पे नकेल कसने के लिए पुलिस की व्यवस्था दुरुष्त करने के संबंध में सवाल उठाया। सिन्हा ने गंभीर और महत्वपूर्ण प्रश्न के जवाब में सरकार के तरफ से आये जवाब को भ्रामक बताया। सिन्हा ने सदन को वस्तु स्थिति से अवगत कराते हुए कहा कि नेशनल पुलिस कमिशन के मानक के अनुरूप न तो थानों का सृजन हुआ है, और न हीं ओपी का सृजन हुआ। जितने भी थाने और ओपी वर्तमान मे हैं, वे सभी 90 के दशक से ही इस राज्य और धनबाद जिले में है। जबकि धनबाद की आबादी 30 लाख है, जितने भी ओपी हैं। अधिकतर किराये के मकान में चल रहे हैं, उनके पास पूरी व्यवस्था नहीं है, उनके पास मानव बल की कमी है।

जबकि झारखंड में वर्तमान में थाने ओपी और पुलिस कर्मियों के अनुपात में बेतहाशा, अप्रत्याशित अपराधिक घटनाओं मे वृद्धि हुई है। विधायक राज सिन्हा ने धनबाद में व्यापारियों, चिकित्सको और अन्य से रंगदारी वसूली एवं धमकी की घटनाओं में वृद्धि का और अपराधियों पर अविलंब नकेल कसने का मामला उठाया। साथ ही पुलिस कर्मियों के रिक्त स्थान को भरने की मांग की ताकि आर्थिक अपराधियों पर लगाम लग सके।

मुखिया को एसीबी ने दस हजार रुपये रिश्वत लेते दबोचा

धनबाद (आजाद सिपाही)। एसीबी धनबाद की टीम ने एक बड़ी कार्रवाई की है। चंद्रपुरा के पपलो पंचायत के मुखिया कार्तिक महतो को एसीबी की टीम ने 10 हजार रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया। दस हजार रुपये रिश्वत की यह पहली किस्त थी। मुखिया ने कुल 20 हजार रु रिश्वत मांगी थी। एसीबी के अधिकारी बिनोद कुमार महतो ने बताया कि पीएम आवास योजना के आवेदक से जीरो टैग के नाम पर मुखिया 20 हजार रिश्वत मांग रहा था। एसीबी टीम ने मुखिया के घर दबिश दी और फिर मुखिया जैसे ही रिश्वत की रकम ली टीम ने उसे रंगे हाथों धर दबोचा।

आइआइटी ने अत्याधुनिक पाठ्यक्रम की शुरुआत की

धनबाद (आजाद सिपाही)। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (इंडियन स्कूल ऑफ माइंस) धनबाद ने एक क्रांतिकारी नये पाठ्यक्रम की घोषणा की है। जिसका उद्देश्य छात्रों को उभरते तकनीकी क्षेत्रों में उन्नत ज्ञान और कौशल प्रदान करना है। इस पाठ्यक्रम के पाठ्यक्रम में थ्रीडी फ्लड मॉडलिंग डेम ब्रेक एनालिसिस सब्सिडेंस मैपिंग डिजास्टर प्रोन एरिया आइडेंटिफिकेशन टीरैन एनालिसिस और वाटरशेड डेलीनीएशन जैसी व्यापक विषयवस्तु शामिल हैं। प्रो एसआर समदर, एसोसिएट डीन और लोकल को ऑर्डिनेटर ने निर्णय लेने की प्रक्रिया और आपदा शमन रणनीतियों में जियोलॉजिकल इंटेलिजेंस के महत्व को रेखांकित किया। प्रो प्रधान, जो जियो इंफॉर्मेटिक्स और रिमोट सेंसिंग में अपने अग्रणी कार्यों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित हैं। प्रो प्रधान ने आज के तेजी से बदलते जलवायु परिदृश्य में जियोस्पेशियल टेक्नोलॉजीस की प्रासंगिकता पर जोर दिया। आइआइटी आइएसएम के डिप्टी डायरेक्टर, प्रो धीरज कुमार ने जिओस्पेशियएल की भूमिका को प्राकृतिक संसाधनों की खोज और सतत प्रबंधन के संदर्भ में महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने इस क्षेत्र में आईआईटी आइएसएम के योगदान और विशेषज्ञता पर भी जोर दिया। इस पाठ्यक्रम में देशभर से इंजीनियर, संकाय सदस्य, पेशेवर, शोधकर्ता और छात्र भाग ले रहे हैं। कोर्स के सह-समन्वयक प्रो वीजीके विलुरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया और प्रो बिस्वजीत प्रधान को आमंत्रित करने का सौभाग्य मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त की। प्रो प्रधान को क्लेरिवेट एनालिटिक्स द्वारा लगातार पांच वर्षों (2016-2020) तक हाइली सीटेड रिसर्चर के रूप में मान्यता प्राप्त है। उनके नाम 880 से अधिक जर्नल प्रकाशन, 76,000 से अधिक संदर्भ उद्धरण और 137 का एच इंडेक्स दर्ज है।

उपायुक्त ने भूमि संरक्षण सर्वेक्षण विभाग के कार्यों की समीक्षा की

लक्ष्य अनुरूप लाभुकों को चिन्हित कर योजना से लाभांवित करने का दिया निर्देश

आजाद सिपाही संवाददता

बोकारो। समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में उपायुक्त विजया जाधव भूमि संरक्षण सर्वेक्षण विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की प्रगति कार्य की समीक्षा किया। इस अवसर पर डीआरडीए निदेशक मेनका, अपर समाहर्ता मो मुमताज अंसरी, जिला परिवहन पदाधिकारी श्रीमती वंदना शेजवलकर, सहायक जनसंपर्क पदाधिकारी अविनाश कुमार समेत अन्य उपस्थित थे। उपायुक्त ने क्रमवार वित्तीय वर्ष 24-25 में छोटे और सीमांत कृषकों/स्वयं सहायता समूहों/महिला सखी मंडल/कृषक समूह को पंप सेट वितरण की योजना के संबंध में जानकारी ली। जिला भूमि संरक्षण सर्वेक्षण पदाधिकारी अंजली राय ने बताया कि योजना के तहत 1.5-3.0 एचपी का पंप सेंट 150 लाभुकों, 3.5-5.0 एचपी का 20 लाभुकों और 1.0 एचपी का सोलर पंपसेट 10 लाभुकों को दिया जाना है। इसी तरह कृषि यांत्रिकीकरण के प्रोत्साहन के लिए अनुदान पर मिनी ट्रैक्टर, पावर टीलर, रीपर, राईस ट्रांसप्लांटर एवं अन्य कृषि यंत्रों के वितरण की योजना के 05-05 लाभुक कृषक समूह/कृषक पैकेज को योजना से लाभांवित करना है। वहीं वित्तीय वर्ष 2024-25 और 2025-26 में कृषकों, महिला स्वयं सहायता समूहों एवं अन्य को कृषक यंत्रों का वितरण योजना अंतर्गत मुख्यमंत्री ट्रैक्टर वितरण योजना के तहत ट्रैक्टर पैकेज के लिए 50 लाभुक एवं कृषि यंत्र पैकेज के लिए 30 लाभुक का लक्ष्य है। जिसके विरूद्ध 39 लाभुकों का आवेदन प्राप्त है। उक्त योजना के तहत वित्तीय वर्ष 23-24 और 24-25 में भी 22 लाभुकों को योजना से लाभांवित किया जाना है, जिला स्तरीय समिति से लाभुकों की सूची का अनुमोदन कर लिया गया है। समीक्षा क्रम में, मृदा और जल संरक्षण योजना अंतर्गत बंजर भूमि/राइस फेलो विकास उपयोजना अंतर्गत 05 एकड़ से कम जल क्षेत्र वाले सरकारी/निजी तालाबों का जीर्णोद्धार/गहरीकरण की योजना और परकोलेशन टैंक निर्माण की योजना का भी जानकारी ली। वहीं, योजनाओं और लाभुकों के चयन से संबंधित आहर्ता के संबंध में जानकारी को लेकर बीडीओ/सीओ के साथ बैठक करने को कहा।

MINISTRY OF ROAD TRANSPORT AND HIGHWAYS NOTIFICATION

New Delhi, the 22nd November, 2024

S.O. **5026(E)**— In exercise of powers conferred by sub-section (1) of section 3A of the National Highways Act,1956 (48 of 1956) (hereinafter referred to as the said Act), the Central Government, after being satisfied that for the public purpose, the land, the brief description of which is given in the Schedule below, is required for building **Widening / Re-construction to Two Lane with paved Shoulder of NH-143AG from Km 37.400 (Design chainage) to Km 85.560 (Design Chainage) Bero - Khunti Section (in Ranchi district from Km 33.25 to Km 58.05) in the state of Jharkhand**, maintenance, management and operation of NH143AG in the stretch of land from Km. 37.400 to Km. 85.560 (DLAO RANCHI) in the district of RANCHI in the state of JHARKHAND, hereby declares its intention to acquire such land.

Any person interested in the said land may, within twenty-one days from the date of publication of this notification in the Official Gazette, object to the use of such land for the aforesaid purpose under sub-section(1) of section 3C of the said Act.

Every such objection shall be made to the Competent Authority, namely, District Land Acquisition Officer Ranchi in writing and shall set out the grounds thereof and the Competent Authority shall give the objector an opportunity of being heard, either in person or by a legal practitioner, and may, after hearing all such objections and after making such further enquiry, if any, as the Competent Authority thinks necessary, by order, either allow or disallow the objections.

Any order made by the Competent Authority under sub-section (2) of section 3C of the said Act shall be final.

The land plans and other details of the land to be acquired under their notification are available and can be inspected by the interested person at the aforesaid office of the Competent Authority.

SCHEDULE

Brief Description of the land to be acquired with or without structures falling NH143AG in the stretch of land from Km. 37.400 to Km. 85.560 **(in Ranchi district from Km 33.25 to Km 58.05)** (DLAO RANCHI) in the district of RANCHI in the state of JHARKHAND

State: JHARKHAND			District: RANCHI		
Sl. No.	Survey/Plot Number	Type of Land	Nature of Land	Area (in Local Unit)	Area (in Hectares)
1	2	3	4	5	6
Taluk: Bero					
Village: Khukhra					
382	4355	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1015 (Acre)	0.0410765
383	4356	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0377 (Acre)	0.015257
384	4358	Private (SIKMI)	TAND II	0.0256 (Acre)	0.0103602
385	4359	Private (SIKMI)	TAND II	0.0093 (Acre)	0.0037637
386	4394	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0088 (Acre)	0.0035613
387	4397	Private (RAIYATI)	PARTEE KADEEM	0.0035 (Acre)	0.0014164
388	4398	Government (GAIRMAJARUWA)	PARTI KADIM	0.0046 (Acre)	0.0018616
389	4400	Private (RAIYATI)	TAND III	0.0086 (Acre)	0.0034804
390	4401	Private (RAIYATI)	TAND II	0.2933 (Acre)	0.1186969
391	4402	Private (RAIYATI)	TAND II	0.02 (Acre)	0.0080939
392	4405	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1242 (Acre)	0.050263
393	4406	Private (RAIYATI)	TAND II	0.02 (Acre)	0.0080939
394	4407	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1079 (Acre)	0.0436665
395	4408	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0304 (Acre)	0.0123027
396	4410	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0777 (Acre)	0.0314448
397	4431	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0243 (Acre)	0.0098341
398	4432	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0897 (Acre)	0.0363011
399	4434	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0899 (Acre)	0.036382
400	4435	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0506 (Acre)	0.0204775
401	4438	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0302 (Acre)	0.0122218
402	4439	Private (SIKMI)	TAND II	0.0657 (Acre)	0.0265884
403	4440	Private (SIKMI)	TAND II	0.0346 (Acre)	0.0140024
404	4441	Government (GM KHAS)	PARTEE PATHAR	0.0059 (Acre)	0.0023877
405	4442	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1348 (Acre)	0.0545528
406	4443	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1202 (Acre)	0.0486443
407	4692	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1164 (Acre)	0.0471064
408	4693	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0994 (Acre)	0.0402266
409	4701	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1576 (Acre)	0.0637799
410	4702	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0733 (Acre)	0.0296641
411	4703	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1306 (Acre)	0.0528531
412	4724	Government (GM KHAS)	PARTEE PATHAR	0.0608 (Acre)	0.0246054
413	4725	Private (RAIYATI)	DON III	0.0166 (Acre)	0.0067179
414	4727	Private (SIKMI)	DON III	0.1156 (Acre)	0.0467827
415	4728	Government (GM KHAS)	PARTEE KADEEM	0.03 (Acre)	0.0121408
416	4729	Private (RAIYATI)	DON III	0.0761 (Acre)	0.0307973
417	4742	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0161 (Acre)	0.0065156
418	4743	Government (GM KHAS)	PARTEE KADEEM	0.0043 (Acre)	0.0017402
419	4876	Government (GM AAM)	RAASTA	0.1542 (Acre)	0.0624039
420	4878	Private (RAIYATI)	TAND II	0.3613 (Acre)	0.1462161
421	4879	Private (RAIYATI)	PARTEE KADEEM	0.0286 (Acre)	0.0115743
422	4880	Private (RAIYATI)	TAND II	0.422 (Acre)	0.1707811
423	4881	Private (RAIYATI)	DON I	0.0613 (Acre)	0.0248078
424	4881	Private (RAIYATI)	DON I	0.2599 (Acre)	0.1051801
425	4952	Government (GM KHAS)	TONGRI	1.3437 (Acre)	0.5437879
426	4953	Government (GM AAM)	RAASTA	0.1797 (Acre)	0.0727236
427	4955	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1635 (Acre)	0.0661675
428	4956	Private (RAIYATI)	TAND II	0.4205 (Acre)	0.170174
429	4958	Private (RAIYATI)	TAND II	0.4155 (Acre)	0.1681505
430	4961	Private (RAIYATI)	TAND II	0.6751 (Acre)	0.2732092
431	4962	Private (RAIYATI)	TAND II	0.2297 (Acre)	0.0929583
432	4963	Government (GM KHAS)	PARTEE KADEEM	0.0125 (Acre)	0.0050587
433	4983	Private (SIKMI)	BAG AAM TAND II	0.2076001 (Acre)	0.0840146
434	4984	Government (GM KHAS)	PARTEE PATHAR	0.0085 (Acre)	0.0034399
435	4987	Private (RAIYATI)	TAND II	0.4696 (Acre)	0.1900445
436	4988	Private (RAIYATI)	PARTEE KADEEM	0.0123 (Acre)	0.0049777
437	4991	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0166 (Acre)	0.0067179
438	4992	Private (RAIYATI)	TAND II	0.3767 (Acre)	0.1524484
439	4993	Private (RAIYATI)	TAND II	0.9696 (Acre)	0.3923917
440	4995	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0654 (Acre)	0.026467
441	4996	Private (RAIYATI)	PARTEE KADEEM	0.05 (Acre)	0.0202347
442	4997	Private (RAIYATI)	TAND II	0.4012 (Acre)	0.1623634
443	5003	Government (GM KHAS)	PARTEE PATHAR	0.0688 (Acre)	0.027843
444	5016	Private (RAIYATI)	TAND II	0.2991 (Acre)	0.1210441
445	5017	Private (RAIYATI)	PARTEE KADEEM	0.1656 (Acre)	0.0670174
446	5018	Private (SIKMI)	TAND II	0.0885 (Acre)	0.0358155
447	5019	Private (RAIYATI)	DON III	0.0612 (Acre)	0.0247673
448	5020	Private (RAIYATI)	DON II	0.1419 (Acre)	0.0574261
449	5022	Private (RAIYATI)	DON III	0.0702 (Acre)	0.0284096
450	5023	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1654 (Acre)	0.0669365
451	5024	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0878 (Acre)	0.0355322
452	5090	Private (RAIYATI)	TAND II	0.183 (Acre)	0.0740591
453	5091	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1221 (Acre)	0.0494132
454	5092	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1009 (Acre)	0.0408337
455	5098	Private (SIKMI)	BAG AAM TAND II	0.3619 (Acre)	0.1464589
456	5122	Government (GM KHAS)	PARTEE KADEEM	0.0865 (Acre)	0.0350061
457	5123	Government (GM KHAS)	PARTEE PATHAR	0.0417 (Acre)	0.0168758
458	5124	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0929 (Acre)	0.0375961
459	5125	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1021 (Acre)	0.0413193
460	5126	Private (SIKMI)	TAND II	0.1946 (Acre)	0.0787535
461	5128	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0633 (Acre)	0.0256172
462	5129	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1007 (Acre)	0.0407527
463	5130	Government (GM KHAS)	PARTEE PATHAR	0.0986 (Acre)	0.0399029
464	5133	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0561 (Acre)	0.0227034
465	5134	Private (RAIYATI)	TAND II	0.194 (Acre)	0.0785107
466	5154	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1504 (Acre)	0.0608661
467	5155	Private (RAIYATI)	TAND II	0.2687 (Acre)	0.1087414
468	5156	Government (GM KHAS)	PARTEE KADEEM	0.0066 (Acre)	0.002671
469	5158	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0166 (Acre)	0.0067179
470	5313	Government (GM AAM)	RAASTA	0.0695 (Acre)	0.0281263
471	5314	Private (RAIYATI)	TAND II	0.2295 (Acre)	0.0928774
472	5326	Private (SIKMI)	TAND II	0.0093 (Acre)	0.0037637
473	5327	Government (GM KHAS)	PARTEE KADEEM	0.9599 (Acre)	0.3884662
474	5328	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0709 (Acre)	0.0286928
475	5329	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0181 (Acre)	0.007325
476	5343	Private (RAIYATI)	TAND II	0.4224 (Acre)	0.1709429
477	5351	Private (RAIYATI)	TAND II	0.3083 (Acre)	0.1247673
478	5352	Private (RAIYATI)	TAND II	0.3663 (Acre)	0.1482396
479	5545	Government (GM KHAS)	JUNGLE JHAARI	0.0756 (Acre)	0.0305949
480	5546	Private (RAIYATI)	TAND II	0.076 (Acre)	0.0307568
481	5553	Private (SIKMI)	TAND II	0.1442 (Acre)	0.0583569
482	5554	Private (SIKMI)	TAND II	0.1023 (Acre)	0.0414002
483	5557	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0809 (Acre)	0.0327398
484	5558	Private (RAIYATI)	TAND II	0.2149 (Acre)	0.0869688
485	5559	Private (RAIYATI)	TAND II	0.18 (Acre)	0.072845
486	5560	Private (RAIYATI)	TAND II	0.1348 (Acre)	0.0545528
487	5561	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0249 (Acre)	0.0100769
488	5566	Private (RAIYATI)	TAND III	0.2172 (Acre)	0.0878996
489	5567	Private (RAIYATI)	TAND II	0.7499 (Acre)	0.3034804
490	5673	Private (RAIYATI)	DON II	0.3347 (Acre)	0.1354512
491	5681	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0395 (Acre)	0.0159854
492	5682	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0801 (Acre)	0.032416
493	5683	Private (RAIYATI)	TAND II	0.0421 (Acre)	0.0170376
494	5684	Private (SIKMI)	TAND II	0.1487 (Acre)	0.0601781
495	5685	Government (GM AAM)	RASTA	0.0964 (Acre)	0.0390126
				Total	7.4084986

PR 347651 (Land Reforms) 24-25 (D)

[F. No.RW/Ranchi/LA/NH-143AG/JHR/3A]
ABHAY JAIN, Director

एम्स भुवनेश्वर ने एक और ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की

16 माह के मास्टर जन्मेश ने अंगदान कर दो मरीजों को दिया नया जीवन

ओड़िशा के सबसे कम उम्र के अंगदाता मास्टर जन्मेश से मल्टीऑर्गन ट्रांसप्लांटेशन की सुविधा प्राप्त की

माता-पिता ने भारत में बाल चिकित्सा अंगदान के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए एक मिसाल कायम की

एन-ब्लॉक किडनी प्रत्यारोपण का राज्य में दूसरा उदाहरण

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। एम्स भुवनेश्वर ने एक और ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए ओड़िशा के सबसे कम उम्र के अंगदाता मास्टर जन्मेश से मल्टीऑर्गन ट्रांसप्लांटेशन की सुविधा प्राप्त की। 16 महीने के मास्टर जन्मेश ने अंगदान के जरिए दो मरीजों को नया जीवन दिया। एक प्रेरणादायक लेकिन बेहद भावनात्मक क्षण में, 16 महीने के मास्टर जन्मेश लेंका के माता-पिता ने एक साहसी निर्णय लिया, जिसने उनकी व्यक्तिगत त्रासदी को दूसरों के लिए आशा की किरण में बदल दिया। जनमेश, जिसे डॉ कृष्ण मोहन गुल्ला की देखरेख में 12 फरवरी को एम्स भुवनेश्वर के बाल रोग विभाग में भर्ती कराया गया था, विदेशी शरीर की आकांक्षा और घुटन से पीड़ित था। तत्काल कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन (सीपीआर) प्राप्त करने और अगले दो हफ्तों में उसे स्थिर करने के लिए गहन देखभाल टीम के अथक प्रयासों के बावजूद, बच्चे को एक मार्च को ब्रेन डेड घोषित कर दिया गया।

दूसरों को जीवन का उपहार देने की संभावना को पहचानते हुए एम्स भुवनेश्वर की मेडिकल टीम ने शोक संतप्त माता-पिता को अंग दान के बारे में परामर्श दिया। अपार शक्ति और करुणा के साथ उन्होंने सहमति व्यक्त की, जिससे उनके बच्चे के अंगों को जीवन रक्षक प्रत्यारोपण के लिए इस्तेमाल किया जा सके। सहमति के बाद सर्जनों और प्रत्यारोपण समन्वयकों की एक बहु-विषयक टीम ने तेजी से पुनर्प्राप्ति और प्रत्यारोपण प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाया।

डॉ ब्रह्मदत्त पटनायक के नेतृत्व में गैस्ट्रो-सर्जरी टीम द्वारा लीवर को सफलतापूर्वक निकाला गया और नयी दिल्ली के इंस्टीट्यूट ऑफ लिवर एंड बिलियरी साइंसेज में ले जाया गया, जहां इसे अंतिम चरण के लीवर फेलियर से पीड़ित एक बच्चे में प्रत्यारोपित किया गया। एम्स भुवनेश्वर में एक किशोर रोगी में किडनी को निकाला गया और एन-ब्लॉक में प्रत्यारोपित किया गया।

यूरोलॉजी विभाग के डॉ प्रशांत नायक के नेतृत्व में यह जटिल सर्जिकल प्रक्रिया सफलतापूर्वक की गयी। यह मामला ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि जनमेश ओड़िशा राज्य में सबसे कम उम्र का अंग दाता बन गया। इसके अतिरिक्त, यह राज्य में एन-ब्लॉक किडनी प्रत्यारोपण का केवल दूसरा उदाहरण था, एक अत्यधिक विशिष्ट सर्जिकल दृष्टिकोण जहां बाल चिकित्सा दाता की दोनों किडनी एक साथ एक ही प्राप्तकर्ता में प्रत्यारोपित की जाती हैं। एम्स भुवनेश्वर के कार्यकारी निदेशक ने माता-पिता की असाधारण उदारता के लिए उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया तथा गहरे दुख की इस घड़ी में उनके निस्वार्थ निर्णय को स्वीकार किया।

मास्टर जनमेश लेनका और उनके माता-पिता के निर्णय की कहानी अंगदान के प्रभाव की एक शक्तिशाली याद दिलाती है, खासकर बाल चिकित्सा मामलों में। उनके नेक काम ने न केवल लोगों की जान बचायी है, बल्कि भारत में बाल चिकित्सा अंगदान के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए एक मिसाल भी कायम की है।

यह घटना सार्वजनिक जागरूकता, समय पर सहमति और चिकित्सा समन्वय के महत्व को रेखांकित करती है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि मस्तिष्क-मृत रोगियों के अंगों का उपयोग जरूरतमंद लोगों को नया जीवन देने के लिए किया जा सके।

एम्स भुवनेश्वर अंग प्रत्यारोपण में बेहतर स्वास्थ्य सेवा का मार्ग प्रशस्त कर रहा है और अनगिनत लोगों की जान बचा रहा है। उनकी निस्वार्थता ने दूसरों के लिए आशा, जागरूकता और जीवन-रक्षक क्षमता का मार्ग प्रशस्त किया है, जिससे चिकित्सा समुदाय और समाज पर एक स्थायी प्रभाव पड़ा है। मास्टर जनमेश के पिता एम्स भुवनेश्वर में छात्रावास वार्डन के रूप में कार्यरत हैं।

अप्रैल से पार्ट प्लॉट का रजिस्ट्रेशन

भुवनेश्वर (आजाद सिपाही)। राजस्व मंत्री ने प्रदेश में अप्रैल से पार्ट प्लॉट का पंजीकरण शुरू हो जायेगा। शहरी विकास विभाग ने राजस्व विभाग को मसौदा सौंप दिया है। मार्च तक विचार-विमर्श के बाद अप्रैल से इसे लागू करने का निर्णय लिया गया है। राजस्व मंत्री सुरेश पुजारी ने कहा कि पार्ट प्लॉट बेचने की समस्या से राजस्व का नुकसान हो रहा है। पार्ट प्लॉट कैसे बेचे जायें और नयी गाइडलाइंस कैसे बनायी जाये, इसे लेकर राजस्व विभाग ने तत्परता जतायी है। गाइडलाइन के मुताबिक प्लॉटिंग में प्लॉट खरीदने वाले लोगों को सड़क और उससे जुड़ी सुविधाएं भी मिल सकेंगी। मंत्री ने कहा कि शहरी विकास विभाग के सचिव पहले ही महाधिवक्ता के साथ मसौदे पर चर्चा कर चुके हैं। मुझे बताया गया कि मसौदा राजस्व विभाग को दे दिया गया है। राजस्व विभाग अब मसौदे का अध्ययन करेगा। यदि अध्ययन के दौरान कुछ आवश्यक है, तो हम विकास प्राधिकरण और रेरा अधिकारियों से बात करेंगे। इसके बाद अंतिम अधिसूचना जारी की जायेगी। मार्च के अंत तक सुधार हो जायेगा।

ट्रांसपोर्ट घोटाला मामला में बीजद नेता राजा चक्र से हो रही पूछताछ

भुवनेश्वर (आजाद सिपाही)। क्योंझर बीजद नेता राजा चक्र से क्राइम ब्रांच इओडब्ल्यू ने पूछताछ कर रही है। बताया गया कि पूर्वाह्न 11 बजे से भुवनेश्वर स्थित इओडब्ल्यू कार्यालय में पूछताछ चल रही है। करीब 500 करोड़ के ट्रांसपोर्ट घोटाले में राजा चक्र से पूछताछ हो रही है। इओडब्ल्यू ने इससे पहले सात फरवरी को इस मामले में दो लोगों को गिरफ्तार किया था। मानस रंजन बारिक और उत्कल दास को गिरफ्तार किया है। बताया जा रहा है कि उस लिंक पर राजा से पूछताछ की जा रही है। 40 से 50 करोड़ रुपये की हेराफेरी के आरोप में बीजद नेता राजा चक्र से मैराथन पूछताछ चल रही है। क्योंझर गंधमार्दन ओएमसी खदान में लोडिंग का काम गंधमार्दन लोडिंग एंड ट्रांसपोर्ट को-ऑपरेटिव सोसायटी एजेंसी पर करोड़ों रुपये की हेराफेरी का आरोप लगा था। लगभग 40 से 50 करोड़ रुपये के घोटाले के आरोपों की जांच करते हुए इओडब्ल्यू ने पाया है कि यह राशि 500 करोड़ रुपये से अधिक हो सकती है। दोनों की गिरफ्तारी के बाद इओडब्ल्यू क्योंझर के बीजद नेता राजा चक्र से पूछताछ कर रहा है। यह बात सामने आयी है कि कैसे बीजद नेता क्योंझर जिले में दिन दहाड़े लूटपाट करते थे। आरोप है कि गंधमार्दन लोडिंग एंड ट्रांसपोर्ट को-ऑपरेटिव सोसाइटी के नाम पर कैसे लूट रहे थे। वे लौह अयस्क के प्रति ट्रक 60 रुपये लेते थे। इस को-ऑपरेटिव सोसाइटी का कार्यालय शुआकाटी, क्योंझर में है। एक ट्रक से छह रुपये वसूलने की व्यवस्था थी, जबकि वे 60 रुपये वसूल रहे थे। 2017 से 2024 तक बीजद नेताओं ने करोड़ों रुपये वसूले। इओडब्ल्यू की जांच के बाद सब कुछ सामने आ रहा है।

वार्षिक मेगा एचआर कॉन्क्लेव 'एसओए प्रॉक्सिमा' के छठे संस्करण के उद्घाटन

अपना भविष्य खुद बनायें : आशीष विद्यार्थी

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। प्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेता और प्रेरक वक्ता आशीष विद्यार्थी ने छात्रों की सभा में कहा कि शिक्षा के बाद आपके पास जीवन है, जो मायने रखता है, वह यह है कि जीवन आपके सामने क्या लाता है, उसके साथ आप क्या करते हैं। विद्यार्थी ने शिक्षा 'ओ' अनुसंधान डीम्ड विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संकाय, इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल एजुकेशन एंड रिसर्च (आइटीइआर) द्वारा आयोजित दो दिवसीय वार्षिक मेगा एचआर कॉन्क्लेव 'एसओए प्रॉक्सिमा' के छठे संस्करण के उद्घाटन पर बोलते हुए कहा कि जीवन में आपके पाठ्यक्रम से कुछ भी आवश्यक नहीं होगा और आपको अपना भविष्य खुद बनाना होगा। विद्यार्थी ने कहा कि यह मायने नहीं रखता कि आप कहां से आए हैं, मायने यह रखता है कि आप कहां जा रहे हैं। सम्मेलन की शुरुआत एसओए सलाहकार बोर्ड के अध्यक्ष प्रोफेसर दामोदर आचार्य के अध्यक्षीय भाषण के साथ हुई, जबकि कॉरपोरेट रिलेशंस और इंडस्ट्री एंगेजमेंट के निदेशक रिप्ती रंजन दाश ने स्वागत भाषण दिया। भुवनेश्वर में टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) के डिलीवरी सेंटर प्रमुख बिभू पांडा और टीसीएस में अकादमिक गठबंधन समूह, भारत (पूर्व) के क्षेत्रीय प्रमुख सौविक दास ने भी बात की। कार्यक्रम में 24 शीर्ष एचआर नेताओं के मुख्य भाषण, 12 आकर्षक पैनल चर्चाएं, एसओए इंजीनियरिंग छात्रों द्वारा 35 नवीन परियोजनाओं को प्रदर्शित करने वाली एक परियोजना प्रदर्शनी और नेटवर्किंग सत्र शामिल थे, जो प्रतिनिधियों को जुड़ने और अनुभव साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करते थे। कॉन्क्लेव में वर्तमान उद्योग की अपेक्षाओं, पाठ्यक्रम से परे वांछित कौशल सेट और शिक्षा और उद्योग के बीच अंतर को पाटने पर ध्यान केंद्रित किया गया। टाइम्स नाउ के सहयोग से, एसओए ने 30 असाधारण मानव संसाधन नेताओं और विशेषज्ञों को प्रतिभा अधिग्रहण प्रभाव पुरस्कार से सम्मानित किया, जो प्रारंभिक करियर भर्ती, प्रतिभा अधिग्रहण रणनीति में उनके उत्कृष्ट योगदान का सम्मान करते हैं।

जेएन टाटा को 186वीं जयंती पर टाटा स्टील मेरामंडली की ओर से दी गयी श्रद्धांजलि

भुवनेश्वर (आजाद सिपाही)। टाटा स्टील मेरामंडली (टीएसएम) ने भारतीय उद्योग के महान उद्योगपति और टाटा समूह के संस्थापक जमशेदजी नुसेरवानजी टाटा को उनकी 186वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। आज का दिन टाटा स्टील में संस्थापक दिवस के रूप में मनाया जाता है। मेरामंडली में आयोजित कार्यक्रम में टीएसएम के मुख्य सुरक्षा अधिकारी विलास एन गायकवाड़ और कंपनी के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इस मौके पर जेएन टाटा की प्रतिमा पर पुष्पमाला देकर श्रद्धांजलि अर्पित किया गया। इस अवसर पर टीएसएम की आवासीय कॉलोनी में कर्मचारियों एवं उनके परिवारों के लिए विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया। इसके अलावा टाटा स्टील फाउंडेशन ने तालबहाल गांव में वॉलीबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया। इसमें तालबाहाल, गंठिगडिया, खलीबेरना, सर्पा रघुनाथपुर, पाइक पुरानाकोर्ट, चंद्रशेखरपुर, झाडूबेरिनी और वादीबाहाल की 8 टीमों ने भाग लिया।

विदेशी महिला की जांघ पर जगन्नाथ महाप्रभु के टैटू गुदवाने पर विवाद, बाद में माफी मांगी

भुवनेश्वर (आजाद सिपाही)। विदेशी महिला द्वारा अपनी जांघ पर महाप्रभु जगन्नाथ का टैटू गुदवाने पर विवाद शुरू हो गया है। कुछ जगन्नाथ प्रेमियों ने इसका विरोध किया और रविवार को सुब्रत कुमार महांति ने शहीदनगर थाने में शिकायत दर्ज करायी। थानाध्यक्ष ने बताया कि घटना की जांच कर कार्रवाई की जायेगी। विदेशी महिला का जांघ पर टैटू गुदवाने अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। विदेशी महिला की जांघ पर महाप्रभु का टैटू देखकर लाखों जगन्नाथ प्रेमियों की भावनाओं को ठेस पहुंची है। विवाद बढ़ने के बाद टैटू स्टूडियो के मालिक ने सोशल मीडिया पर माफी मांगी। दूसरी तरफ विदेशी महिला ने भी सोशल मीडिया पर माफी मांगी है।

दैनिक औसतन 130.5 रेक लोड कर खोरधारोड मंडल का उत्कृष्ट प्रदर्शन

आजाद सिपाही संवाददाता

खोरधारोड। खोरधारोड मंडल ने माह फरवरी के दौरान दैनिक औसतन 130.5 रेक लोड करके माल लोडिंग में उत्कृष्ट प्रदर्शन दर्ज किया। मंडल ने मार्च 2024 में प्रतिदिन 128.1 रेक का अपना ही रिकॉर्ड तोड़ा। फरवरी महीने में अर्थात 1 फरवरी से 28 फरवरी तक मंडल के विभिन्न लोडिंग प्वॉइंटों से लोड किये गये रेक की कुल संख्या 3655 है।

फरवरी 2025 के महीने में, पारादीप में प्रतिदिन अब तक की सबसे अच्छी लोडिंग यानी 29.1 रेक प्रतिदिन दर्ज की गयी। इस माल ढुलाई के कीर्तिमान में प्रमुख अंशदान तालचेर, धामरा लोडिंग प्वॉइंट, मेरामंडली, जखपुरा, सुकिंदा, केरजंग, नयागढ़ आदि प्रमुख इस्पात संयंत्र शामिल हैं। परिवहन किये गये विभिन्न माल में कोयला, लौह अयस्क, इस्पात संयंत्रों के लिए कच्चा माल, उर्वरक, सीमेंट, खाद्यान्न, खनिज आदि शामिल हैं।

खोरधारोड मंडल के सभी लोडिंग पॉइंट पर सरकारी क्षेत्रों और उद्योगों के साथ उचित योजना और समन्वय, इस लक्ष्य को प्राप्त करने में बहुत योगदान दिया है। खोरधारोड के मंडल रेल प्रबंधक एचएस बाजवा ने माल ढुलाई में इस उपलब्धि की सराहना की और सभी को देश भर में विभिन्न पावार हाउस, विनिर्माण कंपनियों, उत्पादन इकाइयों और उद्योगों की मांगों को पूरा करने के लिए समान भावना के साथ कार्य करने की सलाह दी।

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित। **संपादक :** हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक*** : विनोद कुमार,***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**